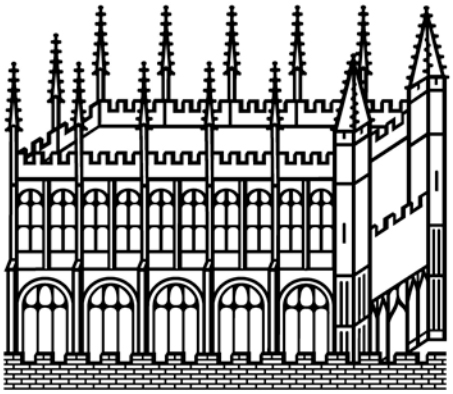


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

(13.D.13.) Hindi Vet 8

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Baital Pachisa Hindi

बैतालपच्चीसी ॥

بیتال پچیسي

जिस्में

श्रीमन्महाराज राजेन्द्र वीर विक्रमादित्य और
बैताल के प्रश्नोत्तर न्याय शास्त्रानुसार
अनेक विचित्र और सुललित
कहानियों में वर्णित हैं

वही

रसरसिकबिलासियों और विद्यानुरागियों के
मनोरंजनार्थ

चौथीबार

स्थान लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरकेछापेखानेमेंछापीगई ॥

दिसम्बर सन् १८८२ ई०

बिज्ञापन ॥

इसमहीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेंचने के लिये तैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत-से घटाकर नियत हुआहै परंतु ब्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको ब्यौपारकी इच्छाहो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़तभेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	हरिबंश पर्व	रामायण कबितावली
महाभारत	म०भा०पर्वअलेहदाभीहै	रामायणगीतावलीसटीक
१ पहिले हिस्सामें	रामायणरामबिलास	बिनयपत्रिका बा० मो०
आदि पर्व, सभा पर्व	रामायण तुलसीकृत	बिनयपत्रिका बा० शि०
बनपर्व	रामायण सटीक मय	लिङ्गपुराण
२ दूसरे हिस्सामें	मानसदीपिकाकोषआदि	बिष्णु पुराण
विराटपर्व, उद्योगपर्व	तथाजिल्दबंधी	गरुणपुराण प्रेतकल्प
भीष्मपर्व, द्रोणपर्व	तथामोटेअक्षरोंकी	ब्रह्मोत्तर खण्ड
३ तीसरे हिस्सामें	मयेतसवीर व क्षेपक	मिश्रितमाहात्म्य
कर्णपर्व, शल्यपर्व	रामायण तुलसीकृत	**वैद्यक भाषा**
गदापर्व, सौप्रिकपर्व	सातोकाखंड	निघंटु
योशिकपर्व, विशोकपर्व	१ बालकांड	अमरबिनोद
स्त्रीपर्व, शान्तिपर्वमें	२ अयोध्याकांड	वैद्यजीवन
राजधर्म आपदधर्म,	३ आरण्यकांड	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
मोक्षधर्म	४ किष्किन्धाकांड	अमृतसागर बड़ा
४ चौथे हिस्सामें	५ सुन्दरकांड	तथा छोटा
शान्तिपर्व, दानधर्म	६ लंकाकांड	वैद्यमनोत्सव
अश्वमेध, आश्रमबासिक	७ उत्तर कांड	**नाटक**
पर्व, व मौशलपर्व	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोधचंद्रोदय
बाणप्रस्थान पर्व	रामायणका इतिहास	रामाभिषेक
स्वर्गारोहण पर्व	रामायणमानसदीपिका	आनन्द रघुनन्दन

Batal Pachcheesee Hindi

श्रीगणेशायनमः ॥

बैतालपच्चीसी ॥



इस कथा का प्रारम्भ इसप्रकार से है कि मुहम्मद शाह बादशाहके ज़माने में राजा जयसिंहसवाई ने जो मालिक जयनगर का था सूरतनाम कवीश्वर से कहा कि बैतालपच्चीसी को जो ज़बान संस्कृतमें है तुम ब्रज-भाषामें कहो तब उसने बमूजिब हुक्म राजा के ब्रजकी बोलीमें कही अब वह खड़ी बोली में होकर छापी जाती है जिसमें सब लोगों की समझ में आवे ॥

प्रथम कहानी का आरम्भ ॥

धारानगरनाम एक शहरथा वहांकाराजा गंधर्वसेन था उसके चार रानियांथीं उनसे छः बेटेथे एकसे एक पण्डित और बलवान्था मृत्युबश थोड़ेदिनोंमें वहराजा मरगया और उसकी जगह बड़ाबेटा शंखनाम राजाहुवा फिर कितनेदिनों पीछे उसका छोटाभाई बिक्रम बड़ेभाई को मारकर आपराजाहुवा और निर्बिघ्न राज्यकरनेलगा दिनोंदिन उसकाराज्य ऐसाबढ़ा कि सम्पूर्ण जम्बूद्वीपका राजाहुवा और अचलराज्य करके शाकाबांधी कितने दिनोंकेपीछे राजाने यह मनमें बिचारा कि जिन मुल्कों कानाम मैं सुनताहूं उनकी सैर कियाचाहिये यह अपने

मनमेंठान राजगद्दी अपनेछोटेभाई भर्तृहर को सौंप आप योगीबन मुल्क२ की और बनबनकी सैरकरनेलगा एक ब्राह्मण उसनगरमें तपस्याकरताथा एकदिन देवतानेप्रसन्नहो उसे अमृतफल लादिया तब उसने उसफलको अपनेघरमें लाकरब्राह्मणीसेकहा कि जोकोई इसे खायगा सो अमरहोगा देवताने फलदेते समय यहमुझसेकहा है यहसुनके ब्राह्मणी बहुतरोई और कहनेलगी कि यह हमेंबड़ा पाप भुगतनापड़ा क्योंकि अमरहोके कबतक भीषमांगेंगी इस्से तो मरना अच्छाहै जो मरजावैं तोसंसारके दुखसे छूटजायँ तब ब्राह्मणबोला कि लेतेतो मैं लेआया पर तेरीबात सुनके मेरीबुद्धिजातीरही अबजो तू बतावै सोमैं करूं फिरउस्से ब्राह्मणीनेकहा यह फलराजाकोदो और इसके पलटे द्रव्यलो जिससे लोक और परलोकका कामहो यहबातसुन ब्राह्मण राजाकेपासगया और अशीष दे फलका अहवाल बर्णन करके कहा कि महाराज यहफल आपलीजिये और मुझेकुछद्रव्यदीजिये आपके चिरंजीव रहनेसे मुझेसुखहै फिर राजाने ब्राह्मण को लाषरुपयेदे बिदाकर महलमेंआ जिसरानीको बहुत सा चांहताथा उसेवहफल देकर कहा ऐ रानी तू इसेखा कि अमरहोवेगी और सर्बदा जवानरहेगी रानीने इस बातकोसुन राजासे फललेलिया राजाबाहर आ सभामें आया और उसरानीका मित्र एक कोतवालथा उसनेवह फल उसेदिया संयोगबश एकबैश्या कोतवालकी मित्र थी उसने उसे वहफलदेकर उसकागुण बर्णनकिया उस

वैश्याने अपनेमनमें बिचारा कि यहफल राजाकेदेनेयो-
ग्यहै यहबात अपनेमनमेंबिचार वहफल राजाकोजाकर
दिया राजाने फल लेलिया औरउसे बहुतसा धनदेबिदा
किया और फल को देख अपनेजीमें चिन्ताकर संसार
सेउदासहो कहनेलगा कि इस संसार की माया किसी
कामकी नहीं है क्योंकि इस्से अन्तको नरक में पड़ना
होता है इसकारण उत्तम यहहै कि तपस्या कीजिये
और भगवान् के स्मरण में रहिये कि जिससे आगे को
भला होवे यहबात मनमें ठान महलमें जा रानीसे पूंछा
कि तूने वह फल क्या किया उसने कहा मैं उसे खागई
तबतो वहफल रानीको दिखाया वह देखतही भौचकसी
रहगई और कुछउत्तर न बनआया फिर राजाने बाहरआ
उस फलको धुलवाकर खाया और राजपाट छोंड़ योगी
बन अकेला बिन कहेसुने बनकोसिधारा बिक्रमकाराज्य
खालीरहा जबयहसमाचार राजाइन्द्रकोपहुंचे तो उन्होंने
एक देव धारानगर की रखवारी को भेजा वह दिन रात
उसनगरकी चौकी दियाकरता और इसबातका शोर प्र-
त्येक देश में होगया कि राजाभर्तृहर राजछोंड़ निकल-
गया यह खबर राजाबिक्रम सुनतेही अपने देशमें आया
उसवक्त आधीरातका समयथा कि राजा नगरीमें जाताथा
तौ उसदेवने पुकारा तूकौनहै और कहांजाताहै खड़ारह
अपनानाम बता तब राजाने कहा मैंहूंराजाबिक्रम अपने
नगरमें जाताहूं तूकौनहै जोमुझे रोंकताहै तब देव बोला
कि मुझे देवताओंने इसनगरी की रखवारीको भेजाहै जो

तुम सच राजाबिक्रमहो तौपहले मुझसे लड़ो पीछेशहरमें जाओ इसबातके सुनतेही राजाने चरना काछकर उस देवकोललकारा फिर वह देवभी राजाके सम्मुखहुवा लड़ाईहोनेलगी निदान राजाने देवको पछाड़ उसकीछाती पर चढ़बैठा तब उसनेकहा ऐराजा तूने मुझे पछाड़ा परंतुमैं तुझे जीदान देताहूं तबतो राजाने हँसकरकहा तू दीवानाहुवाहै किसको जीदान देताहै मैं चाहूंतो तुझेमारडालूं तूमुझे जीदान क्यादेगा तब वह राक्षसबोला कि ऐराजा मैं तुझेकालसे बचाताहूं पहलेमेरी एक बातसुन फिर निर्भयहो सम्पूर्ण दुनियांका राज्यकर अन्तको राजाने उसेछोंड़दिया और उसकी बात मनदेकै सुननेलगाफिरदेवने यह उससेकहा कि इसनगर मेंचन्द्रभाग नामएकराजा बड़ादाताथा संयोगबश एकदिन वहजंगलकोनिकलगया तो देखताक्या है कि एकतपस्वी वृक्षमेंउलटा लटकाहुवाहै औरधुआं पीपीकर रहताहै न किसीसेकुछलेताहै न बातकरताहै उसकी यहदशादेख राजाने अपने घरआ सभामेंबैठकर यहकहा जोकोई उसतपस्वीकोलावे वहलाखरुपये पावै इसबातको सुनकर एकबैश्याने राजाकेपास आ यह बिनयकी कि यदि महाराजकी आज्ञापाऊं तौ उसी तपस्वीसे एकलड़का उत्पन्नकरा उसीके कंधेपर चढ़ाकर लेआऊं इसबातके सुन्नेसे राजाको आश्चर्य्य हुआ और उसबैश्याको तपस्वीके लानेके लिये बीड़ादेकर बिदाकिया वह उसबनमेंगई और योगीकी कुटीपर पहुंचकर देखती क्याहै कि वहयोगी सच्चही

उलटा लटकरहाहै न कुछखाताहै न पीताहैऔर सूखरहा है तो उस बैश्याने हलुआपका उस तपस्वीके मुहमेंदिया उसे मीठा मीठा जोलगा तोवह उसेचाटगया फिर उसबै-श्याने और लगादिया इसीतरहसे दोदिनतक हलुवाचटा या कि उसके खानेसे योगीके शरीरमें कुछ बलहुवा तब उसने आंखेंखोल वृक्षसे नीचेउतर उससे पूंछा तू यहां किसकामको आईहै बैश्यानेकहा मैं देवकन्याहूंस्वर्गलोक में तपस्या करती थी अब इसबनमें आईहूं फिर उस तप-स्वीने कहा तुम्हारी मढ़ीकहांहै हमेंदिखावो तब वह बैश्या उस तपस्वीको अपनीमढ़ीमें लाकर षटरस भोजन करवानेलगी तो तपस्वीने धुआंपीना छोंड़दिया और प्रति दिन खानाखाने पानीपीनेलगा निदान बलपाकर काम-देवने उसेसताया फिर तपस्वीने उससे भोगकिया योग खोया औरबैश्याको गर्भरहा समयपरपुत्रउत्पन्नहुवा जब कईमहीनेका हुवा तब उसबैश्याने तपस्वीसेकहा कि गु-साईंजी अब चलकर तीर्थयात्रा कीजिये जिस्से शरीर के सब पापकटें ऐसी बातेंकर उसे भुला लड़का उसके कंधे पर चढ़ा राजाकी मजलिसको चली कि जहांसे वह उस बात का बीरा उठा आईथी जिससमय राजा के सम्मुख पहुंची राजा उसको दूरसे पहिंचान और लड़के को उस तपस्वीके कंधेपर देख सभासदों से कहनेलगा देखोतो यहवही वेश्या है जो योगीके लेनेको गईथी उन्होंने वि-नयकी कि महाराज सच्च कहतेहैं देखिये कि जो २ बातें हजूर से बिनय करगई थी वे सब देखनेमें आईं ये बातें

राजाकी और मजलिसियों की सब योगीने सुनी तौ समझा कि राजाने मेरी तपस्या डिगाने को यहयत्न कियाथा योगी यह अपने जीमें बिचार कर वहांसे उलटा फिर शहर के बाहर निकल उस लड़के को मारडाला और जंगल में जाय योग करनेलगा थोड़े दिनों में वह राजा मृत्युबश हुआ और योगीने योग पूरा किया इस का ब्यौरा इसप्रकार से है कि तुम तीन आदमी एकनगर और एक नक्षत्र योग मुहूर्तमें पैदाहुयेहो तुमनेराजा के घरमें जन्मलिया दूसरा तेलीकेहुवा तीसरायोगी कुम्हारकेघरमें पैदाहुवा तुमतो यहांका राज्यकरतेहो और तेलीकाबेटा पातालकेराज्यका मालिकथा सोउसकुम्हार ने अच्छीतरहसे अपनायोग साधा और तेलीकोमार मरघटमें पिशाचबना सिरसेके वृक्षमें उलटा लटकारक्खा है और तेरेमारनेके बिचारमेंहै यदि तू उससे बचेगा तौ राज्यकरैगा इस अहवालसे मैंने तुझे सचेतकिया तू उससे ग़ाफ़िल मतरहना इतनीबात कहकर देव तौ चलागया राजाअपनेमहलमेंबिराजमानहुवाजबसबेराहुवा तौराजा बाहर निकलबैठा और दरबारआमको हुक्मदिया जितने छोटे बड़े नौकर चाकरथे सबने आ २ कर हज़ूरमें नजरेंदीं और बाजन बजनेलगे सम्पूर्ण शहरमें बड़ीआनंद और प्रसन्नता हुई प्रत्येकजगह और घरघर नाचराग मच गया फिरराजा धर्मराज करनेलगा एकदिनका वृत्तान्त है कि शान्तिशील नामकयोगी एकफलहाथमें लिये राजा की सभा में आया और वह फल राजा के हाथमें दे

आसन उसजगह बिछाकर बैठा फिर एकघड़ी पीछेचला गया राजाने उसके जानेके बाद अपने मनमें बिचारा कि जिसे देवने कहाथा वहीतो नहींहै फिरगुमानकर फल न खाया भंडारी को बुलाकर दिया कि इसे अच्छी-तरहसे रखना योगी प्रतिदिन इसीतरह से आता और एकफल देजाता संयोग बश एकदिन राजा अपने अस्त-बलके देखनेको गयाथा और मुसाहबभी कुछ साथथे इ-तनेमें योगीभी वहीं पहुंचा और उसीतरहसे फलराजा के हाथमेंदिया वहउसे उछालने लगा तो एक बारगी हाथ से पृथ्वी पर गिरपड़ा और बन्दर ने उठाकर तोड़ डाला तो ऐसा एक लाल उसमें से निकला कि राजा और मुसाहब उसकीज्योतिदेख बिस्मितहुये तब राजाने योगी से कहा कि तूने मुझे यह लाल किसवास्ते दिया तब उसनेकहा ऐमहाराज शास्त्रमेंलिखाहै कि खाली हाथ इतनीजगह न जावै राजा गुरु ज्योतिषी बैद्य बेटी के इस वास्ते कि यहां फलसे फल मिलताहै। ऐराजा तुम एक लालको क्या कहतेहो मैंनेजितने फलदिये हैं उनसबमें रत्नहैं यहबातसुन राजाने भंडारीसेकहा जितनेफलतुझे दिये हैं वो सब लेआ। भंडारी राजाकीआज्ञापा तुरंतले आया। उनफलोंको जोतुड़वाया तोसबमेंसे एक एक लाल पाया जब इतनेलाल देखे तो राजाबहुत प्रसन्नहुवा और रत्न पारखीको बुलवा लालोंको परखानेलगा और इस प्रकारसे कहा कि साथ कुछनहींजायगा संसारमें धर्म बड़ी बस्तुहै जोकुछ हरएक पर्बकामोल हो सो धर्मसेकह

दो। यहबात सुन जौहरी बोला कि महाराज तुमने सच्च कहा जिसका धर्म रहेगा उसका सब कुछ रहेगा धर्महीं साथ जाताहै और वहीदिनों जहानमें काम आताहै सुनो महाराज एक पर्व्व अपने रंग संग ढंग में दुरुस्त है तो हरएक का मोल किरोड़ २ रुपये कहूं तौ भी होनहीं सक्ता अर्थात् एक २ राज्य एक २ लाल का मोल है यह सुन राजा बहुत प्रसन्नहो जौहरी को खिलत दे बिदा किया और योगी का हाथ पकड़ गद्दीपर लेआया और कहनेलगा कि मेरा तौ सम्पूर्ण मुल्क भी एक लाल के मोलका नहींहै तुमने दिगम्बर होकर जो इतने रत्न मेरेतईं दिये हैं इसका बिचार क्याहै सो तुममुझसेकहो योगी बोलाराजा इतनी बातें प्रकट करनी योग्यनहीं हैं यंत्र मंत्र औषधि धर्म घरका अहवाल हरामका खाना बुरीबात सुनीहुई ये सब बातें सभामें कहीनहां जातीं एकान्तमें कहूंगा। सुनोराजा यहरीतिहै जोबात छःकान में पड़तीहै वह छिपीनहीं रहती चार कानकी बातकोई नहीं सुनता और दोकानकी बात ब्रह्माभी नहीं जानता आदमी कातो क्याकहना यहबात सुन राजा योगीको एकान्तमें लेजाकर पूछनेलगा कि गुसाईंजी तुमने मुझे इतने लालदिये और एकदिन भोजनभी न किया मैं तुमसे बहुत लज्जितहूं अपना मतलब होसो कहो। योगी बोला राजा गोदावरी नदी के तीर महास्मशानमें मैंमंत्र सिद्ध करूंगा उसमें अष्ट सिद्धि मुझे मिलेंगी सोमैं तुम से भिक्षा मांगताहूं कि एकदिन तुममेरे पास रातभर

रहनातुम्हारे रहनेसेमेरा मंत्रसिद्ध होजावेगा तबराजाने कहाबहुतअच्छामैंआऊंगातुमवहदिनहमेंबताजाओयोगी बोलाभादोंबदीचौदश मंगलबारकीसांझकोहथियारबांध अकेलेतुममेरेपासआना। राजानेकहा तुमजाओ मैं नियतसमयपरअकेलेआऊंगा। इसतरहराजासे बचनलेयोगी बिदाहो मठमेंजा तैयारहो सबसामानले मरघटमेंजाबैठा औरयहांराजाअपनेजीमें बिचारकरनेलगा इतनेमेंवहसमयभीआनपहुंचा तबराजावहां तलवारबांध लंगोटकस अकेलारातको योगीकेपासजापहुंचा औरउसको आदेश सुनाया योगीनेकहाआवोबैठो फिरराजावहां बैठगया तो देखताक्याहै कि चारोंतरफभूतप्रेत डायन तरह तरहकी भयानकसूरतेंबनाये नाचतेहैं औरयोगीबीचमें बैठा दोकपालबजाताहै राजानेयहदेख कुछडरभय न किया और योगीसेकहा मुझेक्याआज्ञाहै उसनेकहाराजातुमआयेहो तो एककामकरो यहांसे दक्षिणओर दोकोशपर एकमरघटहै उसमेंएकशिरसकावृक्षहै तिसमें एकमुर्दा लटकाहै उसे मेरेपास तुर्तलाओ कि मैं यहांपूजाकरताहूं राजाको उधरभेज आपआसनमारजपकरनेलगा। एकतोअन्धेरी रातडरातीथी दूसरेमेहकीऐसी झड़ीलगी हुईथी मानो आजबरसकरफिरकभी न बरसेगा औरभूतप्रेत ऐसाशोर गुलकरतेथे कि शूरबीरभीहो तो देखके घबराजावे परंतु राजाअपनीराहचलाजाताथासांपजोआन२कर पांवमेंलपटतेतोउनकोमंत्रपढ़ छुड़ादे तानिदानज्योंत्योंकठिनबाट काटकरराजाउसस्मशानमेंपहुंचा तोदेखा कि भूतप्रेतहाथ

पकड़ पकड़ आदमियों को देदेमारते हैं डायन लड़कोंके कलेजे चाबतीहैं शेरदहाड़तेहैं हाथीचिघाड़े मारतेहैं निदानउसवृक्षको जोध्यानकरदेखा तोजड़सेफुनगी तलक हरएकडालपात उसका दहड़ २ जलरहाहै औरचारों ओरशोरगुल होरहाहै कि मार २ ले २ ख़बरदार जाने न पावै राजाउस अहवालको देखकुछभय न किया और आपने जीमेंकहताथा हो न हो यहवही योगीहैं जिसकी बात मुझसे देवने कहीथी फिर उसवृक्षके पास जाकर जोदेखा तोएकमुर्दा रस्सीसेबँधा उलटालटकता है मुर्देकोदेख प्रसन्नहुआ कि मेरापरिश्रम सुफलहुआ फिरखांड़ाफरीलेउसवृक्षपरनिर्भय चढ़एकहाथ तलवारका ऐसा मारा कि रस्सीकट मुर्दानीचेगिरपड़ा औरगिरतेही धाढ़ें मारमाररोनेलगा फिरराजाउसकी आवाजसुन प्रसन्नहो अपनेमनमें कहनेलगा भलायहआदमी जीतातोहै फिर उतरकर उस्सेपूछा तूकौनहै वहसुनतेही खिलखिलाके हँसा राजाको इसबातका बड़ाअचम्भाहुआ फिरवहमुर्दा उसीवृक्षपर चढ़कर लटकगया राजाभीवहीं चढ़करउसे बगलमेंदबा नीचेलेआया औरकहा ऐ चांडाल तूकौनहै मुझसेकह उसनेकुछ जवाब न दिया राजानेशोचकर जीमें कहाशायद यह वहीतेलीहै जोदेवनेकहाथा कि योगीने स्मशानबनाकर रक्खाहै यहबिचारउसेचादरमें बांधयोगीकेपासलेचला जो नरऐसासाहस करैगा वहसिद्धहोगा तबवह बैतालबोला तू कौनहै औरमुझेकहां लियेजाताहै राजाने जवाबदिया कि मैंराजाबिक्रमहूं तुझेयोगीकेपास

लियेजाताहूं उसनेकहा एकशर्तसे चलताहूं जोरस्तेमेंबो-लेगातोमैंउलटा फिरजाऊंगा राजाने उसकी शर्तमानी औरलेचला फिरबैतालबोला ऐराजापण्डित चतुरबुद्धि-वानलोगजोहैं तिनकेदिन गीतऔरशास्त्रके आनन्दमेंकट-तेहैं औरकूरमूर्खोंके दिनकलहऔरनींदमें,इस्सेभलायह है कि इतनी राहअच्छीबातोंके चर्चेमेंकटजाय ऐराजाजो मैंकथा कहताहूं उसेसुन। इत्यारम्भ कहानी॥

पहिली कहानी॥

एकराजा प्रतापमुकुटनाम बनारसकाथा औरउसके बेटेकानाम बज्रमुकुट जिसकीरानीकानाममहादेवीथा एक दिनवह अपनेदीवानके बेटकोसाथले शिकारकोगयाऔर बहुतदूर जंगलमें जानिकला औरउसकेबीच एकसुन्दर तालावदेखा कि उसके किनारे हंस चकवा चकई बगले मुर्ग़ाबियां सबकेसब कलोलमेंथे औरचारोंतरफ भांति२ केपक्केघाटबनेहुयेथेकमलतालावमें फूलेहुयेकिनारोंपरके वृक्षलगेहुये कि जिनकीघनी २ छांहमेंठंढी २ हवायेंआती थीं औरपक्षीपखेरू वृक्षोंपर चहचहोंमेंथे औररंगबरंगके फूलबनमें फूलरहेथे उनपरभौंरोंके झुण्डकेझुण्डगूंजरहेथे येदोनों उसतालावके किनारेपहुंचे और मुंहहाथ धोकर ऊपरआये वहांएक महादेवका मन्दिरथा घोड़ोंको बांध मन्दिरके भीतरजा महादेवका दर्शनकर बाहर निकले कितनीदेर उनको दर्शनमेंलगी उतने अर्सेमें किसीराजा कीबेटी सहेलियोंका झुण्ड साथलियेहुई उसीतालावके दूसरेकिनारेपरस्नानकरने आई सो स्नानध्यान पूजाकर

सहेलियोंको साथलिये वृक्षोंकी छांहमें टहलनेलगीइधर दीवानकाबेटा बैठाथा और राजाकाबेटा फिरताथा कि अचानक उसकीऔर राजाकीबेटीकी चारआंखेंहुई देखतेही उसकेरूपको राजाकाबेटा मोहितहुवा और अपनेदिलमें कहनेलगा कि ऐचांडालकाम मुझको क्योंसतायाहै और उस राजपुत्रीने कुंअरकोदेख शिरमेंजो कमलकाफूल पूजा करकेरक्खाथा वहफूल हाथमेंले कानसेलगा दांतसेकतर पांवतलेदिया फिरउसे छातीसे लगालिया और सखियों कोसाथले सवारहो अपने मकानकोगई और वह राजपुत्र निराशहो बिरहमेंडूबाहुवा दीवानके लड़के के पासआया और लज्जाकेसाथउसके आगेसबहाल कहनेलगा कि ऐ मित्रमैंनेएकअतिसुंदरनायकादेखीहै नउसकानामजानता हूं न ठांवजोवहमुझेनमिलैगी तौ मैंअपनीजान न रक्खूंगा यहमैंने जीमेंनिश्चयबिचाराहै यहअहवालदीवानकाबेटा सुन उसेसवारकरवाघरको तो लेआयापरराजाकाबेटाबिरहकीपीरसेऐसाबिकलथा कि लिखनापढ़ना खाना पीना सोनाराज्यकार्यसबकुछतजबैठानक्रशाउसकीसूरतकालिख२देखता औररोता न अपनीकहता न औरकीसुनता दीवानकेबेटेनेयहदशा उसकी जोबिरहसे हुईथीजबदेखी तो उस्सेकहा जिसने इश्ककीराहमेंपैररक्खाहैफिरवहजिया नहींहै और जो जिया तो उसने बहुतदुःखपाया इसवास्ते ज्ञानीलोग इसराहमें पांवनहीं रखते फिरउसकीबातसुन राजकुमारबोला मैंनेतौ इसपंथमें पांवदिया इसमें सुखहो या दुःख जब ऐसीदृढ़बात उसकीसुनी तब वहबोला कि

महाराज तुमसे चलतेसमय कुछ उसनेकहाथा या तुमने कुछ उस्सेकहा शाहजादेनेजवाबदिया कि न मैंनेकुछकहा न उस्सेकुछसुना तब दीवानकाबेटा बोला उसकामिलना बहुत कठिनहै शाहज़ादेनेकहा जोवह मिली तो हमारी जानरही नहींतोगई फिरउसनेपूंछा कुछ इशाराभीकिया था या नहीं कुंअरनेकहा जोउसन हरकतें कीथींसो येहैं कि एकाएक मुझकोदेख शिरपरसे कमलकाफूल उतार कानसेलगा दांतसेकतर पांवतलेदेकर छातीसेलगालिया यहसुन दीवानके बेटेनेकहा कि उसके इशारोंको हमसमझे और नाम ठांवसब उसकाजाना वहबोला जोसमझे हो सो बयानकरो यहकहनेलगासुनोराजा कमलकाफूल शिरसेउतारकानसेजोलगाया तो मानोंउसनेतुमकोबताया कि मैंकरनाटककीरहनेवालीहूं औरदांतसेजोकुतरासो कहा कि दन्तबाटराजाकीबेटीहूं और पांवसे जो दबाया सोकहा कि पद्मावती मेरानामहै औरछातीसे जोलगाया सोकहा तुमतोमेरे हृदयमेंबसेहो जबइतनीबातें कुंअरने सुनीतो उस्से कहा बेहतरयहहै कि मुझे उसके शहरमें ले चलो यहकहतेही कपड़ेपहन हथियारबांध कुछजवाहिर ले घोड़ोंपर सवारहो दोनोंने उसतरफकी राहलीकईदिन केबाद करनाटकदेशमें पहुंचे शहरकीसैर करतेहुये राजा के महलोंकेनीचेआये तोवहां देखते क्याहैं कि एकबुढ़िया अपने दरवाजेपर बैठीहुई चरख़ा काततीहै येदोनों घोड़ों सेउतर उसकेपासजा कहनेलगे माईहम मुसाफिरसौदागरहैं माल हमारा पीछेआताहै और हम जगहढूंढ़नेवास्ते

आगे बढ़आयेहैंजोहमें जगहदो तौ हमरहें बुढ़िया उनकी सूरतोंकोदेख और बातोंको सुन रहमकरकेबोली यहघर तुम्हाराहै जबतकजीचाहैरहो यहसुनवेमकानमें उतरेतो कितनी एक देरपीछे बुढ़िया उनकेपास आ बैठकरबातें करनेलगी इसमें दीवानके बेटेने उस्सेपूंछा तेरीआल औलाद और कुनबेमें कौनकौनहैं और क्योंकरनिर्बाह होती है बुढ़ियानेकहा बेटा मेरा राजाकीसेवामें आनन्दपूर्व्वक अच्छीतरहसे रहताहै औरपद्मावतीजो राजकन्याहैबन्दी उसकी दुग्धपिलाईहै इसबुढ़ापेके आनेसे घरमेंरहती हूं पर राजामेरे खानेपीनेको ख़बरलेताहै परंतु उसलड़कीके देखनेको नित्य एकवक्त जातीहूं वहांसे आनकर घरमें अपनादुखड़ा कियाकरतीहूं यहबात राजपुत्रनेसुन दिल में प्रसन्नहो बुढ़ियासेकहा कल जिसवक्त जानेलगेतो एक सँदेशा हमाराभी लेतीजाइयो उसनेकहाबेटा कलपर क्याहै अभी मुझसे जोकुछकहे तौमैं तेरासँदेशा पहुंचाहूं तब उसनेकहा तू इतनाजाकरकहदे किज्येष्ठशुदी पंचिमी को तालावकेकिनारेजिसराजपुत्रकोतुमनेदेखाथा सोआन पहुंचाहै इतनीबातके सुनतेही बुढ़िया लाठी हाथमेंलिये राजमन्दिरकोगई वहांजाकरदेखा कि राजकन्याअकेली बैठीहै जबयह सामनेपहुंची तौ उसने सलाम किया यह आशीषदेकरबोली कि धियाबालकपनमें तेरीसेवाकीऔर दूधपिलाया अबभगवान्ने तुझेबड़ीकिया यहजीचाहता है कि तेरीजवानीका सुखदेखूं तोमुझेभीचैनहोवे। इसीतरहकीबातें प्रीतिसेभरीहुईकर कहनेलगी कि जेठशुदी पं-

चिमीको तालावकिनारे जिसकुवँरका तूनेमन हरलिया है सोमेरेघरआनकर उतराहै उसनेतुझे यहसँदेशा दियाहै कि जोहमसे वचनकियाथा वहपूराकरो हमआन पहुंचे हैं औरमैंभीयहकहतीहूं कि वहकुंवर तेरेहीयोग्यहै जैसी तू रूपवतीहै तैसाहीवहगुणवन्तहै। येसबबातेंसुनवहख़फा हो हाथोंमें चन्दनलगाय बुढ़ियाके गालोंमें तमाचामारा औरकहनेलगी कम्बख़त मेरेघरसेनिकल यहअप्रसन्नहो उसीतरहसे उठतीबैठती कुवँरकेपासआई औरसबवृत्तांत कहा राजकुमारसुनकर हक्कबक्कहोगया तबदीवानकाबेटा बोलामहाराज कुछशोचनकीजिये यहबातआपके ध्यानमें नहींआई फिरउसनेकहासच्चहै पर तू मुझेसमझा कि मेरे जीकोचैनहोवे उसनेकहा जोदशोंअँगुलियां चंदनकीभर-कर मुँहपरमारीं तो उसनेयहबताया कि दशरोज़चांदनी केबीतनेपरअँधेरीरातमेंमिलूंगी निदानदशरोज़के बादबुढ़ियाने उसकीख़बर फिरजाकही तबउसनेकेशरसे तीनउँगु-लियांभर उसकेगाल परमारीं औरकहानिकल मेरेघरसे अन्तकोबुढ़िया लाचारहोकरवहांसेचली औरजोकुछ्यो-राथा सोसबराजपुत्रसे आकरकहा यहसुनतेही राजपुत्र शोचसागरमें डूबगया उसकीयहदशादेख फिरदीवानके बेटेनेकहा अँदेशानकरो इसबातका मुद्दा कुछऔरहै वह बोलामेरा जी बेचैनहै मुझसेजल्दकहो तबउसनेकहा वह उसहालमेंहै जोमहीने२ औरतोंकोहोताहै इसलिये और तीनदिनकावादाकियाहै चौथेदिनवहतुम्हें बुलावेगी नि-दानजबतीनदिनहोचुके तबबुढ़ियानेजाकर उसकीओरसे

कुशलक्षेमपूछी तबउसने बुढ़ियाको अप्रसन्न हो पश्चिम ओरकी खिड़कीकेपास लाकरनिकालदिया फिरयहअह-वालबुढ़ियाने राजकुवँरसे आकरकहा वहसुनकरउदास हुआ इतनेमेंदीवानकापुत्रबोला कि इसबातकाब्योरायह है कि आजरातकेसमय तुमकोउसी खिड़कीकीराहबुला-याहै यहसुनतेही राजपुत्र अतिप्रसन्नहुवा जबवह समय आया तोऊदेरंगकेजोड़ेनिकाल चुनबनापगड़ीबांध कपड़े पहनहथियारसज राजपुत्रतैयारहुआ इसअरसेमेंदोपहर रातबीतगई उससमय एकसन्नाकालथा वेभीवहांसे सून मारे चुपचापचलेआतेथे जबखिड़कीकेपास पहुंचे दीवान का बेटाबाहरखड़ारहा औरयहखिड़कीके भीतरगया तो देखताक्याहै कि राजकन्याभी वहींखड़ीराहदेखतीहै इ-तनेमें इनदोनोंकी चारआंखेंहुईं तबराजकन्या हँसी और खिड़कीबन्दकर राजकुमारकोसाथले रंगमहलमेंगईवहां जाकरकुवँरदेखताक्याहै कि जगह२ लखलखेरौशनऔर सहेलियां रंगरंगकी पोसाकें पहनेहाथबांधे अदबसेअप-ने २ रुतबेसेखड़ीहैं एकतरफसेजफूलोंकीबिछीहै अपने२ करीनेसे अतरदान पानदान गुलाबपाशें रंगेरे चौघरे सजेहुये धरेहैं और एकतरफ़ चोवा चंदन अरगजाकस्तूरी केशर कटोरियोंमें भराहुवा धराहै कहीं अच्छी २ माजूनों की रंगीन डिबियां चुनी हैं कहीं भांतिभांतिके पकवान धरे हैं सम्पूर्णदर और दीवार चित्रोंसे सँवाराहै और उनपर ऐसीसूरतें बनीहुईहैं कि हरएक देखतेही मोहित होजावे निदानसारेऐश वो आरामकेसाज वोसामान वहांपर बर्त-

मनथे अजबसमयका आलमहै कि जिसका कुछबयान नहीं होसक्ता उसीमकानमें रानीपद्मावतीने राजकुंवरको लेजाबिठलाया और पांवधुलवा चंदन बदनमेंलगा फूलों केहार पहना गुलाबछिड़क पंखाअपनेहाथसे झलनेलगी इसमेंकुंवरबोलाहमतुम्हारेदेखनेसेहीठंढेहुयेइतनीमेहनत क्यों करतीहो तुम्हारे ये कोमल २ हाथ पंखेकेलायकनहीं पंखाहमेंदो तुमबैठो पद्मावतीबोली कि महाराजआपबड़ी मेहनतकरके हमारेवास्तेआये हैं हमेंआपकी सेवाकरनी उचितहै तब एकसहेली ने रानीकेहाथसे पंखालेकर कहा यहहमारा कामहै हमसेवाकरैं औरतुम आपसमें आनन्द करो फिरवेवहांपानखाने औरप्यारकीबातेंकरनेलगे इतनेमें भोरहुवा राजकन्याने उसेछिपारक्खा जबरातहुईतो फिरआपसमें आनन्दहोनेलगा इसीतरहसे कितनेएकदिन बीतगये राजकुंवर जबजानेका इरादाकरे तब राजकन्या जानेन दे इसीतरहसे एकमहीना बीतगया तबतोराजा बहुत घबराया और चिन्तायुक्तहुवा एकदिनकीबातयहहै कि रातकेसमय अकेलाबैठाहुवा यहजीमें चिन्ताकरताथा कि देश राज्यपाट घर सबतो छूटाहीथा पर एक ऐसामित्र हमारा कि जिसकेकारणसे यहसुखपाया उससेभी महीने भरसे मुलाकातनहींहुई वहअपनेजीमें क्याकहताहोगा और क्याजानिये उसपर कैसीबीतती होगी इसीशोचमें बैठाहुआथा कि इतनेमें राजकन्याभी आनपहुंची औरउसकी यहदशादेखकर पूछनेलगी महाराजतुम्हेंक्यादुःख है जोतुमऐसेउदासबैठेहो मुझसेकहो तबवहबोला किएक

मित्रहमारा बहुतप्यारा दीवानकाबेटाहै उसकाकुछअह-
वाल महीनेभरसे मालूमनहींहुवा वहऐसाचतुर पण्डित
मित्रहै कि उसीकेगुणोंसेमैंनेतुझेपाया औरउसीनेतेरासब
भेदबताया यहसुन राजकन्या बोली महाराज तुम्हारा
चित्ततोवहांहै तुमयहां सुखक्याकरोगे इससे बेहतरयह
है कि मैंपकवानमिठाई सबकुछतैयारकरके भिजवाती हूं
आपभीसिधारिये उसकोखिलापिला बहुतदाढसकरफिर
आइये यहसुनतेही राजकुंवर वहांसेउठकर बाहर आया
और रानीनेविषमिलवा तरहतरहकी मिठाई बनवाकर
भिजवाई कुंवरमंत्रीकेपास जाकर बैठाहीथा कि इतनेमें
वहमिठाई आनपहुंची प्रधानकेबेटेने पूछा महाराज यह
मिठाईकिसतरहसेआई राजपुत्रबोला मैंवहां तेरीचिन्ता
में उदासबैठाथा कि रानीने आकरमेरीतरफ देखकरपूछा
उदासक्यों बैठेहो कुछसबबउसका बताओ तोमैंनेतेरेभेद
चतुराई के सबउससे बयान किये तबयह अहवाल सुन
के उसनेमुझे तेरेपास आनेकीआज्ञादी औरयहतेरेवास्ते
मिठाईभिजवाईहै जोतूइसेखायगा तोमेराभीजीप्रसन्नहो
गा तबप्रधानकाबेटाबोला तुममेरेवास्तेज़हरलाये इसीमें
कुशलहुई किआपनेनहींखाई महाराजएकबातमेरीसुनिये
कि रण्डोअपनेदोस्तके दोस्तका नहींचाहती आपने यह
अच्छा न किया जो मेरानामवहांलिया यहबातसुन कुंवर
बोला ऐसीबाततुमकहतेहो जोकभी किसीसे नहो यदि
आदमी आदमी से न डरेपरभगवान्सेडरेगा इतनाकह
उसने उसमेंसे एकलड्डू कुत्तेकेआगे डालदिया ज्योंहींकु-

सनेखाया त्योंहीं चटपटाके मरगया यहदशा देखराजपुत्र अपनेजीमें क्रोधितहो कहनेलगा ऐसीरंडीसे मिलनाउ-चितनहीं आजतकतो मेरेदिलमें उसकीप्रीतिथी परअब मालूमहुवा यहसुन दीवानकाबेटाबोला महाराज जोहुवा सोहुवा अब वहबातकिया चाहिये जिससे उसकोअपने घर लेचलिये राजपुत्रबोला भाई यहभी तुम्हींसेहोगा दीवानके बेटेने कहा कि आज एककामकीजियफिरपद्मा-वती के पास जाइये और जोमैंकहूं सो कीजिये पहिलेतो जाकर उसेबहुतसाप्यारकरो जबवह सोजावे तब उसका गहना उतार यह त्रिशूल उसकी बांईंजांघ में मार वहां सतुरंतचलेआवो यहसुनराजकुंवररातकोपद्मावतीकेपास गया औरबहुतसीमित्रताकी बात करदोनोंमिलकरसोरहे परंतुमनसेयहविचारकररहाथा जबराजकन्यासोगईतोउ सनेसारागहनाउतारलिया औरबांईंजाँघमेंत्रिशूलमार अ पनेमकानकोचलाआया औरसाराअहवाल प्रधानकेबेटेसे बयानकर सबगहनाउसके आगेरखदिया फिरवहज़ेवरउ ठाराजकुमारकोसाथलेयोगीकाभेषबना एकश्मशानमेंजा बैठा आपतोगुरूबना औरउसेचेलाठहराकर उससेकहातू बजारमेंजाकरइसगहनेकोबेंचयदिकोईइसमेंतुझेपकड़ेतो उसेमेरेपासलेआना उसकीबातसुन राजपुत्रने ज़ेवरकोले शहरमेंजा राजाकीड्योढ़ीकेनिकटएकसुनारकोदिखायाउ सनेदेखतेहीपहिचानकरकहा राजकन्याकागहनाहै सच्च कहतूनेकहांपाया यहउससेकहरहाथाकिदशबीसआदमी औरभीइकट्ठेहोगये निदानकोतवालनेयहखबरसुनआद-

मीभेजराजकुमार औरसुनारको ज़ेवरसमेतपकड़वामँगा-
याऔरउसज़ेवरकोदेखउससेपूछा किसच्चकहयहतूनेकहां
सेपायाजबउसनेकहा मुझकोगुरूनेबेचनेको दियाहैपरमु-
झेमालूमनहीं कि वेकहांसेलाये तबकोतवालनेउसकेगुरू
कोभीपकड़वामँगाया औरदोनोंकोज़ेवर समेतराजाके नि-
कटलाकरतमामअहवालअर्जकियायहमाजरासुनकेराजा
योगीसेपूछनेलगा किनाथजीयहगहनातुमनेकहांसेपाया
योगीबोलामहाराज कालीचौदशकीरातकोमैंमरघटमेंडा
किनीमन्त्रसिद्धकरनेकोगयाथा जबवहडाकिनीआईतो मैं
ने उसकाज़ेवरउतारलियाऔरबांईंजाँघमें उसकीत्रिशूल
कानिशानकरदिया इसतरहसेयहगहना मेरेहाथआयाहै
यहबात राजायोगीसेसुन महलमेंगया औरयोगी आसन
परबैठा राजानेरानीसेकहा कि तू पद्मावतीकीबाईंजाँघमें
देखतोनिशानहैकिनहींऔरकैसा निशानहै रानीनेजाकरदे
खातोत्रिशूलकादाग़है राजासेआकरकहामहाराजतीननि
शानबराबरहैं परऐसामालूमहोताहै किमानोंकिसीनेत्रिशू
लमाराहै यहबातसुनराजाबाहरआकोबवालको बुलाकर
कहाजावोयोगीकोलेआओकोतवालआज्ञापातेही योगीके
लेनेकोगयाऔरराजाअपनेजीमेंचिंताकर कहनेलगाकिअ
हवालघरका व दिलकाइरादाऔरजोकुछनुकसानहोसो
किसीकेआगेप्रगटकरनामुनासिबनहीं कि इतनेमेंकोतवा
लनेयोगीकोलाहाजिरकियाफिरयोगीकोराजानेकिनारेले
जापूछागुसाईंजीधर्मशास्त्रमेंस्त्रीकेवास्तेक्यादंडलिखाहैत
बयोगीबोलामहाराज ब्राह्मणगौस्त्रीलड़काऔरजोकोईअ

पनेआसरेमेंहो यदिउसमें जिसकिसीसेकुछखोटाकामहो तोउनकेवास्ते यहदंडलिखाहै किदेशनिकालादीजियेयह सुनकेराजानेपद्मावतीकोडोलीमेंसवारकरवाएकजंगलमें छुड़वादियाफिरअपने मुकामसेराजकुमार औरदीवानका बेटादोनोंघोड़ोंपरसवारहो उसबनमेंजारानीपद्मावतीको साथलेअपनेशहरकोचलेथोड़ेदिनोंकेबादअपनेबापकेपा-सजापहुंचे सबछोटेबड़ोंकोबड़ीप्रसन्नताहुई औरयेआपस मेंआनन्दभोगनेलगे इतनीबातकहबैतालने राजाबीरबि क्रमादित्यसेपूछाकिउनचारोंमें पापकिसकोहुआजोतुमइ सबातकान्यायनकरोगेतोनरकमेंपड़ोगेराजाबिक्रमबोला किराजाकोपापहुवा बैतालनेकहा राजाकोकिसतरहपाप हुआ बिक्रमनेयहउसेजवाबदिया किदीवानकेबेटेनेतो अ पनेस्वामीकाकामकियाऔर कोतवालनेराजाकाहुक्म मा नाऔरराजकुमारनेअपनामनोरथहासिलकियाइससेयह पापराजाकोहुआ किबिनाबिचारेउसे देशनिकालादियाइ तनीबातराजाकेमुखसेसुनबैतालउसीवृक्षपरजालटका१

दूसरीकहानी॥

राजानेजोदेखा कि बैतालनहींहै तोफिरउलटाफिरा औरउसजगहपहुंच वृक्षपरचढ़ उसमुरदेको बांधकंधे पर रखकेलेचला तबबैतालबोलाकिराजादूसरीकथायोंहैकि यमुनाकेतीरधर्मस्थाननामएकनगरहै किजहांकागुणावि पनामराजाऔरवहांकेशवनामब्राह्मणथा वहयमुनाकेकि नारेजपतपकियाकरताथा औरउसकीबेटीका नाममधुमा लतीथा वहबड़ी सुन्दरथी जबब्याहयोग्यहुई तबउसके

मातापिताभाईतीनोंउसकेब्याहके बिचारमेंथे संयोगबश एकदिनउसकाबापकिसीएकयजमानकेसाथब्याहमेंकहीं गयाथा और भाईउसका एकदिनगांवमेंगुरूके यहांपढ़ने गया पीछेसेउसकेघर एकब्राह्मणकालड़काआया उसकी मातानेउसलड़केकागुणरूपदेखकरकहा मैंअपनीलड़की काब्याहतुझसेकरूंगी औरउसब्राह्मणनेएकब्राह्मणकेबेटे कोबेटीदेनीअंगीकारकी औरउसकेबेटेनेजहांपढ़नेगयाथा वहांएकब्राह्मणसेबचनहारा कि अपनीबहिनतुझेदूंगाकि तनेदिनोंकेपीछेवेदोनों उनदोनोंलड़कोंकोसाथलेआयेऔ रयहांतीसरालड़काआगेसेबैठाथाएककानामत्रिविक्रमदू सरेकानामबामनतीसरेकानाममधुसूदनथातीनोंरूपगुण विद्यावैसमेंबराबरथेउनको देखब्राह्मण चिन्ताकरनेलगा किएककन्यातीनबरकिसेदूं औरहमतीनोंनेतीनोंसे बचन हारेहैंअजबतरहकी बातआनपड़ीक्याकीजियेइसशोचमें बैठाथाकिइतनेमेंउसलड़कीको सांपनेडसावहमरगईयह ख़बरसुनके उसकाबापभाई वो तीनोंलड़केपांचोंमिलकर बड़ीदौड़धूपकरगुणीगारुड़जितनेमंत्रविषकेझाड़नेवालेथे उनसबकोलाये उनसबोंनेउसलड़कीको देखकरकहायह जीनेकीनहींयहसुनपहिलायोंबोलाकिपंचमीछठअष्टमीन वमीचौदशइनतिथोंमेंसांपकाकाटाआदमीजीतानहीं दूस राबोलाशनीचरमंगलवारकाडसाहुआभीजीतानहीं तीस राबोलारोहणीमघाश्लेषाविशाखामूलकृत्तिका इननक्षत्रों काविषचढ़ाहुआउतरतानहींचौथाबोलाइन्द्री अधरकपोल गलाकोखनाभी इनअंगोंकाकाटाहुआ बचतानहीं पांचवां

बोलाइसकोब्रह्माभी जिलानहींसक्ता हमकिसगिन्तीमेंहैं अबआपइसकी गतिकीजिये हमबिदाहोते हैं यहकहकर गुणीतोचलेगये औरब्राह्मणउसमुर्देकोलेजा मशानमेंफूंक आपतोचलागया फिरउसकेपीछेउनतीनोंलड़कोंनेयहकि याकिएकतोउनमेंसेउसकीजलीहुईहड्डियोंकोचुनबांधकर फकीरहो बनबनकीसैरकोगया दूसरेनेउसकीराखकी ग-ठरीबांधवहीं झोपड़ीबनारहनेलगा तीसरायोगीहो झोरी कंथालेदेशदेशफिरनेलगा एकदिनकिसीदेशमें एकब्राह्म-णकेघरभोजनकेलियेगया वहगृहस्थब्राह्मणउसे देखकर कहनेलगा अच्छाआजयहांभोजनकीजिये यहसुनकेवहां बैठगयाजिससमयरसोईतैयारहुई वहब्राह्मणउसकेहाथ पाँवधुलाकेचौकेमेंबिठाआपभीउसकेपासबैठगया औरउ-सकीब्राह्मणीपरोसनेकोगई कुछपरोसहुईकुछपरोसनाबा कीथाकिइतनेमेंउसकेछोटेलड़केनेरोकर अपनीमाकाआंच लपकड़ावहछुटातीथीऔरलड़कानछोड़ताथाऔरज्योंज्यों यहभुलातीथी वहदूनादूनारोता औरहठकरताथा इसमें उसब्राह्मणीने अप्रसन्नहोलड़केको जलतेचूल्हेमें उठाकर फेंकदिया वहलड़काजलकरराखहोगया यहअहवालजब उस ब्राह्मणनेदेखा तो बिनाखायेउठखड़ाहुवा तबवहघर वालाबोलाकि तूकिसवास्तेभोजन नहींकरतावहबोलाकि जिसकेघरमेंऐसाराक्षसीकामहो उसकेघरमें किसतरहसे कोईभोजनकरै यहसुन वहगृहस्थ उठकरएकओर अपने घरमेंगया औरसंजीवनीबिद्याकीपोथीलाउसमेंसेएकमंत्र निकालजपकरलड़केको जिलादिया तबवहब्राह्मणयहअ

द्भुतचरित्रदेखअपनेजीमें चिन्ताकरनेलगा जोयहपोथीमेरे हाथलगे तोमैंभीअपनी प्यारीकोजिलाऊं यहअपनेमनमें ठानरसोईखावहींरहाजबरातहुईतौ कितनीएकदेरकेपीछे सबने ब्यालूकी औरअपनी२ जगहजालेटे इधरउधर की आपसमेंबातेंकरतेथेयहब्राह्मणभी एकतरफजाकरपड़रहा परंतु पड़ापड़ाजागताथा जबउसनेजाना कि बड़ीरातगई औरसब सोगयेतब चुपकाउठधीरे २ उसकेघरमेंपैठ वह पोथीलेचलदिया औरकितनेदिनोंमेंजिसमशानमेंकि उस ब्राह्मणकीबेटीकोजलायाथावहांआनपहुंचा औरउनदोनों ब्राह्मणोंकोवहींपाया कि आपसमें बैठेहुयेबातेंकरतेहैंउन दोनोंनेभी उसेपहिंचानउसकेपासआयमुलाकातकी और पूंछाकिभाईतुम देशबिदेश तोफिरे परयहकहोकोई बिद्या भीसीखी वहबोला मैंनेमृत्युसंजीवनी बिद्यासीखीहै यह सुनतेही वेबोले जोसीखीहो तौ हमारीप्यारीको जिलाओ उसनेकहा राखहाड़काढेरकरोतौंमैं जिलादूंउन्होंने राख हड्डियां इकट्ठीकरदीं तबउसनेपोथीमेंसे एकमंत्रनिकालज पा वहकन्या जीउठी फिरउनतीनोंकोकामदेवने ऐसाअंधा कियाकि आपसमेंझगड़नेलगे इतनीबात कहकर बैताल बोला ऐराजायहबता किवहस्त्री किसकीहुई राजाबिक्रम बोलाकि जो मढ़ीबांधकररहाथा वहस्त्री उसीकीहुई बैता लबोलाजोवहहाड़ नरखता तो वह किसतरहजीती और दूसराबिद्यानसीखआता तो वहक्योंकरउसेजिलाता रा जाने जवाबदिया कि जिसनेउसकी हड्डियांरक्खीथीं वह तोउसके बेटेकीजगहहुआ औरजिसनेजीदानदिया वह

मानोंउसका बापहुआ इससेवह जो रूउसीकीहुई कि जो राखसमेतझोपड़ीबांध वहांरहा यहजवाब सुनके बैताल फिरउसीवृक्षमें जालटका राजाभीउसीके पीछे जापहुंचा औरउसेबांध कांधेपररख फिरलेचला ॥ २ ॥

तीसरीकहानी ॥

बैतालबोलाऐराजाबर्द्धमाननामएकनगरहै उसमेंरूपसेननाम एकराजाथा एकदिनकासंयोगहै कि वहराजा अपनी ड्योढ़ीकेनिकट किसीमकानमें बैठाथा कि दरवाज़ेके बाहरसे कुछऊपरीलोगोंकी आवाज़आनेलगी राजाबोला कि दरवाज़ेपर कौनहै और क्याहोरहाहै इसमें दरवानने जवाबदिया महाराज आपने यहभलीबातपूंछी दौलतमंद कीड्योढ़ी जानधनकेलिये बहुतेरेआदमी आनबैठतेहैं और भांति २ कीबातें करतेहैं उन्हींलोगोंकायहशोरहै यहसुन राजाचुप होरहा इतनेमेंएकमुसाफिर दक्षिणदिशासे बीरबरनाम राजपूत चाकरीकरनेकी आशकिये राजाकीड्योढ़ीपर आया दरवानने उसकावृत्तान्त मालूमकरके राजासेकहा महाराज एकमनुष्य हथियारबन्द चाकरीकरनेके आसरेपर आयाहै सोदरवाज़ेपर खड़ाहैमहाराजकीआज्ञा पायेतो वहसम्मुखआये यहसुनराजाने आज्ञादी किलेआ यहउसेजाकरलआया तबराजानेपूछा ऐराजपूत तेरेतईं रोज़खर्चको क्याकरदूं यहसुनकेबीरबरबोला हजारतोले सोनामुझेरोज़दो तोमेरीगुज़रहो राजानेपूछातुम्हारेसाथ लोगकितनेहैं उसनेकहाएकस्त्री दूसराबेटा तीसरीबेटीचौथामैंपांचवांहमारेसाथ कोईनहीं उसकीयहबातसुनराजा

कीसभाकेलोग सबमुंह फेरफेर हँसनेलगे परराजाअपने जीमें शोचकरनेलगा कि बहुतधनइसने किसवास्तेमांगा फिरआपहीअपनेमनमेंसमझा कि बहुतधनदियाहुवाकिसीदिनसुफलहोगा यहबिचारकरके राजानेभंडारीकोबुलाकरकहा हमारेख़ज़ानेसे हजारतोलेसोना इसबीरबरके तईंरोजदियाकरो यहपरवानर्ग सुन बीरबरनेहज़ारतोले सोनाउसदिनकालेअपनीजगहला दोहिस्साकर आधातो ब्राह्मणोंकोबांटा औरआधेकेफिरदोभागकर एकभागउस मेंसे अतिथि बैरागी बैष्णवसंन्यासियोंको बांटदिया और बाकीजोएक हिस्सारहाउसकाखाना पकदाग़रीबोंको खिलादिया बाकीजोकुछरहा वहआपखाया इसीतरहसेनित्य स्त्री पुत्रोंसमेतअपनीगुज़रान करताथा परंतुसंध्याकेसमय रोज़ ढाल तलवारले राजाकेपलँगकीचौकीमें जाहाज़िर रहता औरराजाजब सोतेसेचौंककर पुकारता कि कोईहाज़िरहै तौयहीजवाबदेता कि बीरबरहाज़िरहै जोहुक्म इसीतरह राजाजबपुकारतातोयहीजवाबदेताऔरजो आज्ञाराजाकी होतीसो यही बजालाता इसीतरहधनकेलालचसेरातभर सचेतरहता बल्किखातेपीते सोतेजागते उठते बैठते चलते फिरते आठपहर अपनेमालिक कीयादमें रहता रीतियहहै कि कोईकिसीको बेचताहै तोबिकताहै परचकरिया चाकरीकरके अपनेतईं आपबेचताहै औरजब बिकातौताबेदारहुआ जोपरवशहुआ तोउसेसुखकहां मशहूरहै कि कैसाही चतुर बुद्धिमान पण्डितहो परंतुजिससमय अपनेमालिकके सामने होताहै तोडरकेमारेगूंगेकेब-

राबर चुपहीरहताहै जबतक स्वतंत्रहै चैनमेंहै इसीवास्ते पण्डितलोगकहतेहैं कि सेवाधर्म करना योगधर्मसेभीकठिनहै एकदिनकावृत्तान्तहै कि संयोगबश रातकेसमयमर घटसे स्त्रीकेरोनेकाशब्दआया राजासुनकेपुकाराकोईहाज़िरहै बीरबरसुनतेहीबोला हाज़िरजोआज्ञा फिरराजाने योंहुक्मकिया कि जहांसेस्त्रीकेरोनेकी आवाज़आतीहै वहां जाओ औरउससे रोनेकाकारण पूछकरजल्दआओ राजा यहउसे आज्ञादे मनमेंकहनेलगा किजिसकिसीकोचाकर अपना अजमानाहोतो वेवक्तउसेकामकोकहे यदिवहहुक्म उसकाबजालावे तौजानिये कामकाहै औरजोतकरारकरै तौ जानियेनकाराहै औरइसीतरहसेभाइयोंकोमित्रोंकोबुरे समयमें परखिये औरस्त्रीको निर्धनतामेंजांचिये निदान बीरबर यहहुक्मपाकर उसकेरोनेकीआवाज़की धुनिपर चला और राजाभीउसकासाहसदेखनेके लियेकालकपड़े पहनकरपीछे पीछेछिपाहुवा चलाइतनेमेंबीरबरजापहुंचा उसमरघटमें जहांस्त्री रोतीथीतोदेखताक्याहै कि एकस्त्री अतिसुन्दर शिरसेपांवतक गहनेसेलदीहुई ढाहेंमारमार रोरहीहै कभीनाचतीहै कभीकूदतीकभीदौड़तीहै आंखोंमें आंशूएकनहीं परंतुशिरपीटपीट हायहायकर पृथ्वीपरपटकनियां खातीहै उसकायह अहवालदेख बीरबरनेपूछा तू क्योंइतनारोती पीटतीहै तूकौनहै और तुझपरक्यादुख है तबवहबोली कि मैं राजलक्ष्मीहूं बीरबरनेकहा तूकिस कारणरोतीहै फिरउसने अपनीव्यवस्था बीरबरसेकहनी प्रारम्भकी कि राजाकेघरमें शूद्रकर्महोताहै तिससेउसके

घरमें अलक्ष्मीआवैगी औरमें उसकेघरसेजाऊंगी एकम-
हीनेकेपीछे राजानिपटदुःखपाके मरजावैगा इसदुःखसे
रोतीहूं और मैंनेउसकेघरमें बहुतसुखकियाहै इसवास्ते
पछताती हूं औरयहबात किसीतरहसे न झूंठहोवैगी फिर
बीरबरनेपूछाउसका कुछ ऐसाभीउपायहै किजिससेराजा
बचे औरसौबर्षजीवे वहबोली यहांसेपूर्वऔर एकयोजन
परदेवीका मन्दिरहै जोतूउसदेवीको अपनेबेटेकाशिर अ-
पनेहाथसे काटकरदे तौराजासौबर्ष इसीतरहसेराज्यकरे
और किसीतरहकादुःख राजाको न होय यहबातसुनतेही
बीरबर अपनेघरकोचला औरराजाभीउसकेपीछेहोलिया
जबवह घरमेंआया तोअपनीस्त्रीको जगाकर सबवृत्तान्त
कहा उसनेयह अहवालसुन जगायातोबेटेको परबेटीभी
जागी तब उसस्त्रीने लड़केसेकहा कि बेटातुम्हारे शिर
देनेसे राजा का जी बचताहै औरराज्यभीस्थिररहताहै यह
सुन वहबालकबोला माताएकतोआपकीआज्ञा दूसरेस्वा-
मीका कार्यतीसरेयहदेहदेवताकेकामआवैतोइससेअच्छी
कोईबात दुनियांमेंनहींहै मेरेनिकट अबइसकाममेंदेर क-
रनीउचितनहीं मसलहै कि पुत्रहोवेतो अपनेबशका और
काया नीरोग बिद्यासेलाभमित्रचतुर नारीआज्ञाकारीजो
येपांचबातेंआदमीकोमुवस्सरहोंतो सुखकीदेनेवाली और
दुःखकी दूरकरनेवालीहैं यदिचाकर बेमनका और राजा
कृपिण मित्रकपटी और स्त्रीजोआज्ञा न मानतीहो तौये
चारबातें आरामकीदूरकरनेवाली औरदुःखकी देनेवाली
हैं फिरबीरबर अपनीस्त्रीसे कहनेलगा जोतूप्रसन्नतासे अ-

पनेलड़केकोदे तोमें लेजाऊंराजाकेलिये देवीकेआगेबलि
हूं वहबोली कि मुझेबेटा बेटी भाई बन्धुमा बाप किसीसे
कुछकामनहीं मेरीगतितुम्हींसेहै और धर्मशास्त्रमेंभीयही
लिखाहै कि स्त्रीन दान न व्रतसे शुद्धहोतीहै लँगड़ा लूला
गूंगा बहिराअन्धा काना कोढ़ीकुबड़ा कैसाहीउसकास्वा-
मीहो उसकोउसीकीसेवाकरनेसेधर्महै यदिकिसीतरहका
दुनियांमेंधर्मकर्मकरे औरपतिकी आज्ञानमानेतोनरकमेंप
ड़ेफिरउसकाबेटाबोलापिताजिसआदमीसे स्वामीकाकाम
होवे जगमेंउसीकाजीना सुफलहै औरइसमें दोनोंजहान
में भलाहै फिरउसकी बेटीबोली जोमाताबिपदेवे लड़की
को,बापबेंचेपूतकोऔरराजाले सर्वस्वछिनायतोपनाहकि-
सकीलेवे निदानचारो आपसमेंबिचारकरके देवीकेमन्दिर
कोगये राजाभीछिपकर उनकेपीछेचला जब बीरबर वहां
पहुंचा तोमन्दिरमेंजा देवीकीपूजाकरहाथजोड़कहनेलगा
हेदेवीमेरेपुत्रके बलिदेनेसेराजाकी सौबर्षकी उमरहोवेइ-
तनाकह खांड़ाऐसामारा कि लड़केका शिर पृथ्वीपरगिर-
पड़ाभाईकामरनादेख उसलड़कोनेअपनेगलेमेंएकखड्ग
मारातो रुंडमुंडजुदेहोकरगिरपड़े बेटाबेटीकोमरादेखबी-
रबरकीस्त्रीनेतलवार अपनीगर्दनपरमारी कि धड़सेशिर
जुदाहोगयाफिरउनतीनोंकामरनादेख बीरबरअपनेमनमें
चिंताकरकहनेलगा किजबलड़केहीमरगयेतोनौकरीकिस
केवास्तेकरूंगा औरसोनाराजासेलेकिसेदूंगायहशोचकर
एकखड्गऐसाअपनीगर्दनपरमारा कितनसेशिरजुदाहोग
या फिरउनचारोंका मरनादेखराजानेअपनेमनमेंकहा कि

मेरेवास्तेइसकेकुटुम्बकीजानगईअबऐसाराज्यकरनेकोधिक्कारहैकिजिसराज्यकेलिये एककासर्बनाशहोवेऔर एक राज्यकरैऐसाकरनाधर्मनहींहै यहविचारकरराजानेचाहा किखांड़ामारमरूंइतनेमेंदेवीनेआनकेहाथपकड़ाऔरकहा किपुत्रमैंतेरेसाहसपर प्रसन्नहुई जोतूमुझसेवरमांगसोमैं दूंराजानेकहामाताजोतू प्रसन्नहुईहै तोइनचारोंकोजिला देदेवीनेकहायहीहोवेगा औरयहकहतेही भवानीनेपाताल सेअमृतलाचारोंको जिलादिया उसकेपीछेराजाने आधा राज्यअपना वीरबरकोबांटदियाइतनी बातकहबैतालबोलाधन्यहैउससेवकका किजिसनेस्वामीकेलियेअपनेजीव औरकुटुम्बकामोहनकिया औरधन्यहैउसराजाकोकि जिसनेराज्यऔरअपनेजीवका कुछलालचनकिया ऐराजामैं तुझसेयहपूछताहूं उनचारोंमें किसकासतसरसहुआ तब राजाविक्रमादित्यबोला कि राजाकासतअधिकहुआ बैतालबोलाकिसकारण तबराजानेजवाबदिया कि स्वामी केवास्तेचाकरकोजीदेनाउचितहै क्योंकिउसकायहीधर्म है लेकिनराजाने जोचाकरकलियेराजपाटछोड़जानकोतिनकेबराबरजानाइसकारणसेराजाकासतसिवायहुआइतनीबातसुनबैतालफिरउसी स्मशानकेवृक्षमेंजालटका३॥

चौथीकहानी॥

राजावहांजाफिरबैतालकोबांधकरलेचला तबबैताल बोलाकिऐराजाभोगवतीनामएकनगरीहै वहाँकाराजारूपसेन औरचूड़ामणिनाम एकतोताउसकेपासहै एकदिन उसतोतेसेराजानेपूछातूक्याक्याजानताहैतबसुवाबोला

किमहाराजमेंसबकुछजानताहूं राजानेकहा जोतूजानता है तोबतलाकिमेरेसमाननायकाकहांहै तबउस तोतेनेकहामहाराजमगधदेशमेंमगधेश्वरनामराजाहै औरउसकी बेटीकानामचन्द्रावतीहै तुम्हाराब्याहउसके साथहोवेगा वहअतिसुन्दरीहै औरबड़ीपंडितहैराजानेउसतोतेसेयहबातसुनकरएकचंद्रक्रांतिनामज्योतिषीको बुलाकरपूछा किहमाराब्याहकिसकन्यासेहोवेगा उसनेभीअपने ज्योतिषकीविद्यासेमालूमकरकेकहा चन्द्रावतीनामएककन्या हैउसकेसाथतुम्हाराब्याहहोवेगा यहबातराजानेसुनएक ब्राह्मणकोबुलवा सबकुछसमझा रा।मगधेश्वरके पास भेजनेकोकहा औरयहकहा यदिहमारे ब्याहकीबातपक्की करआओगेतोहमतुम्हेंप्रसन्नकरेंगे यहबातसुन ब्राह्मण बिदाहोचला औरवहांमगधेश्वरराजाकी बेटीकेपास एक मैनाथीउसकानाममदनमंजरीथा इसीतरहसेउसराजकन्यानेभीएकदिनमदनमंजरीसेपूछा कि मेरेसमानपतिकहांहै तबशारिकाबोली भोगवतीनगरीकाराजारूपसेनहै सोतेरापतिहोगा निदानअनदेखे एकपरएकमोहितहुआ था थोड़ेदिनों पीछेवहब्राह्मणभी वहांजापहुंचा औरउस राजासे अपनेराजाका सँदेशाकहा उसनेभीउसकी बात मानी औरअपनाएकब्राह्मणबुलवाउसेटीकाऔररसूमकी चीजेंसौंपउसीब्राह्मणकेसाथभेजा औरयहकहदिया कि तुमहमारीओरसेजाकरबिनतीकर राजाकोतिलकदेके जल्दीचलेआओ जबतुमआओगे तबहमब्याहकीतैयारी करेंगे निदान येदोनोंब्राह्मणवहांसेचले कितनेएकदिनों में

राजा रूपसेनके पासआनपहुंचे और सबवृत्तान्तवहां का कहा यहसुनराजाप्रसन्नहोसबतैयारीकर ब्याहकरनेको चला थोड़ेदिनोंकेपीछे उसदेशमेंपहुंच ब्याहकरदानदहेजलेराजासेविदाहो अपनेदेशकोचलाराजकन्यानेभीचल तेसमयमदनमंजरीकापिंजरा साथलेलियाकितनेएकदिनोंकेपीछे अपनेदेशमेंआनपहुंचेऔर सुखसेअपनेमन्दिरमें रहनेलगे एकदिनकीबातहै कि दोनोंपिंजरेतोतेमैंनाकेगहीकेपासधरेहुयेथे तोराजारानीआपसमेंकहनेलगे कि अकेलेरहनेसे किसीकादिननहींकटता इससेउचितहै कि तोतेमैंनाकाआपसमेंब्याहकर दोनोंकोएकपिंजरेमेंरखिये तोयेभीसुखसेरहें आपसमेंइस तौरकीबातेंकरएकबड़ासा पिंजरामँगवा दोनोंकोउसमें रक्खा थोड़ेदिनोंकेबादराजा रानीआपसमेंबैठ कुछबातेंकरतेथे कि तोतामैंनासे कहने लगा कि दुनियांमें भोगकरना मुख्यहै और जिसने जगत में पैदाहोके भोगनहींकिया उसकाजन्मवृथागया इससे तू मुझेभोगकरनेदे यहसुनके शारिकाबोली मुझेपुरुषकी इच्छानहीं तबउसनेपूछा किसलिये मैंनाबोलीपुरुषपापी अधर्मी दग़ाबाजस्त्रीहत्या करनेवालेहोतेहैं यहसुनकेतोतेनेकहा कि नारीभीदग़ाबाज झूठीमूर्ख लालचीहत्यारीहोतीहैं जबइसतरहसेदोनों झगड़नेलगे तोराजानेपूछा तुम किसवास्ते आपसमेंझगड़तेहो मैंनाबोली महाराज पुरुष पापी स्त्रीघातकहोतेहैं इसवास्तेमुझे पुरुषकीचाहनहीं महाराजमैंएकबात कहतीहूं आपसुनिये कि मर्दऐसेहोतेहैं इलापुरनामएकनगरथावहांमहाधननामएकसेठरहताथा

उसकेसन्ताननहोतीथी वहइसवास्तेहमेशःतीर्थव्रत करताऔरनित्य पुराणसुनता ब्राह्मणोंकोबहुतसा दानदिया करताथा कितनेएकदिनोंमें भगवानकीइच्छासे उसशाह केएकलड़कापैदाहुआ उसनेबड़ी धूमसेउसका ब्याहकिया औरब्राह्मणों औरभाटोंको बहुतसादानदिया औरभूखे प्यासेकंगालोंकोभी बहुतकुछदिया जबवह बालकपांच बर्षकाहुआ तोउसेपढ़नेको बिठाया वहयहांसेतोपढ़नेको जाताऔर वहांजाकर लड़कोंमें जुआखेलाकरताथोड़ेदिनोंकेबाद वहशाह मरगया और यहस्वतंत्रहो दिनकोतो जुआखेलाकरता औररातकोबेश्यागमन इसीतरहसेकई वर्षमें अपनासाराधनखो लाचारहो देशसेनिकल खराब होताहुआ चन्द्रपुरनगरमें जापहुंचावहांहेमगुप्तनामसाहूकारथा उसकेबहुत दौलतथी यहउसकेपासगया और अपनेबापका नामनिशानबताया वहसुनतेही प्रसन्नहुआ उस्सेउठकरमिला औरपूछा तुम्हाराआना क्योंकरहुआ तबयहबोला कि मैंजहाजले एकद्वीपमें सौदागरीकोगया थाऔरवहांजा उसमालकोबेच औरमालकीभरतीकरजहाजलेअपनेदेशकोचला अचानक एकऐसातूफान आया कि जहाजतबाहहोगया औरमैंएक तख्तेपरबैठा रहगया सोबहता २ यहांतक आनपहुंचाहूंपरंतु लज्जाआतीहैकि मालद्रव्यतोसब जातारहा अबमैंइसदशासे अपनेशहर केलोगोंकोक्या मुंहजाकरदिखाऊं निदान जबइसीतरह कीबातेंइसने उसकेआगेकी तबवहभीमनमें बिचारनेलगा कि मेराफिक्र भगवानने घरबैठेहीमिटादिया औरऐसासं-

योगभगवानहीकीकृपासे बनपड़ताहै अबदेरकरनी मुना-
सिबनहीं सबसेउचित यहहै कि कन्याकेहाथ पीलेकर-
दीजिये जोकुछइससमयहोसोउत्तमहै औरकल्हकीकिसे
खबरहैऐसाकुछ अपनेजीमेंमनसूबाबांध सिठानीके पास
आकहनेलगा कि एक सेठकालड़का आयाहैजोतुम कहो
तोरत्नावतीका ब्याहउस्सेकरदें वहभी सुनप्रसन्नहोबोली
कि शाहजीऐसा संयोगजबभगवान बनाताहै तबबनता है
क्योंकिघरबैठे मनकीकामना पूरीहुई इससेउचितयहहै
किदेरमतकरो औरजल्दपुरोहित कोबुलवालग्नसुधवाय
ब्याहकरदो तबउससेठने ब्राह्मणकोबुलवा शुभलग्न
मुहूर्त्तठहराय कन्यादानकर बहुतसादहेजदियाजबब्या-
हहोचुका तोवहांआनन्दसेरहनेलगे फिरकितनेएकदि-
नोंकेपीछे साहकीबेटीसे उसनेकहाहमेंतुम्हारे देशमेंआये
हुयेबहुतदिनहुये औरअपनेघरबारकी कुछखबरिनहींपाई
इस्सेचित्तहमारा बहुतउदासरहताहै हमनेसबवृत्तान्त
अपनातुझसेकहा अबतुम्हैयहचाहिये कि अपनीमासे इस
तरहसमझाकरकहो कि वे राजीहो हमेंबिदाकरें तोहम अ-
पने शहरकोजावें तुम्हारीइच्छाहोतुमभीचलो तबउसने
अपनीमासेकहा कि बालम अपनेदेशकोबिदाहुआ चा
हतेहैं अबतुमभीवहकरो कि जिसमेंउनकेजीको दुःख न
होवे सिठानीने अपनेस्वामीके पासजाकरकहा तुम्हा-
रादामाद अपनेघरजानेकी बिदामांगताहै यहसुनकर
शाहबोला अच्छाबिदाकरदेंगे क्योंकिबिरानेपूतपरकुछ
अपनाबशनहींचलता जिसमेंउसकी प्रसन्नताहोगी वही

हमकरेंगे यहकहअपनीबेटीको बुलाकरपूछा तुमअपनी बातकहो सुसरालजाओगी या नैहरमेंरहोगी इसमेंलड़कीनेलज्जाकरके जबाबन दिया उलटीफिरआई औरअपनेपतिसे आनकेकहा हमारेमातापिता कहचुकेहैं कि जिसमेंउनकी प्रसन्नताहोगी वहहमकरेंगे तुमहमेंमतछोंड़ जाइयो निदान उससेठने अपनेदामादको बुलाकरबहुत सी दौलतदेकर बिदाकियाऔर लड़कीकाभी डोलाएक दासीसमेतसाथकरदिया तबयहवहांसेचला जबएकजंगलमेंपहुंचा तोउसनेशाहकीबेटीसेकहा यहांबहुतडरहै जोतुमअपनासब गहनाउतारदो तोहमअपनी कमर में बांधलें फिरजबआगेशहरआवेगा तोतुमपहिनलेना उसनेसुनतेही सबज़ेवरउतारदियाऔरउसनेजेवरलेकहारोंकोबिदाकर दासीकोमारकुवेंमेंडालदिया औरउसको भीकुवेंमें ढकेलसबगहनाले अपनेदेशकोचलागया इतनेमेंएकमुसाफिर उसराहमेंआया औररोनेकी आवाजसुनकरखड़ाहो अपनेजीमेंकहनेलगा कि इसजंगलमें आदमीके रोनेकीआवाजकहांसेआई यहबिचारउसरोनेकी तरफकोचला कि एककुंवादृष्टिपड़ा उसमेंझांकातो देखताक्याहै कि स्त्रीरोतीहै तबउसकोनिकाल वृत्तान्तपूछने लगा कि तूकौनहै औरकिसतरहसे इसमेंगिरीयहसुनके उसनेकहामैंहेमगुप्त सेठकीबेटीहूं औरअपनेपतिकेसाथ उसकेदेशकोजातीथी इतनेमेंचोरोंनआघेरा औरमेरीदासीकोमारमुझेकुवेंमें डालदिया औरगहना समेतमेरेपति कोबांधकरलेगये न उनकीमुझेखबरहैन मेरीउन्हेंयहसुन

वहबटोहीउसेसाथलेआयाऔरउससेठकेद्वारेपरपहुंचागया यहअपने मावापकेपासगई वेउसेदेखकर पूछनेलगे कि तेरीक्यागतिहुई उसनेकहाहमेंराहमें आनकेचोरोंने लूटा औरदासीकोमार कुवेंमेंडालमुझेएक अंधेकुवेंमेंढकेलदिया और मेरेपतिकोगहनेसमेत बांधके लेचले जब औरधनमांगनेलगे तबउसनेकहा जोकुछथा सोतुमनेलियाअबमेरेपासक्याहै आगेयहमुझेखबरिनहीं उसेमारा याछोड़ा तबउसकाबापबोला तूफिक्रमतकर तेरास्वामी जीताहै भगवानचाहेतो थोड़ेदिनोमें आनमिलै क्योंकि चोरधनकेगाहकहोतेहैं जीवकेगाहकनहीं निदानउसशाहनेजोजो गहना उसकागयाथा उसकेबदलेऔर आभूषणदेकरबहुतसा दिलासादिया और वहशाहका लड़का भी अपनेघरपहुंच सबजेवर को बेचदिनरात वेश्यारमण करनेलगा और जुआखेलनेलगा यहांतक कि सबरुपये तमामहुये तबरोटीकोमुहताजहुआ अंतकोजबबहुत दुःख पानेलगा तौअपनेदिलमें एकदिनबिचारा कि सुसरालजा के यहबहानाकीजिये कि तुम्हारेनवासा पैदाहुआहै उस की बधाईदेनेकोमैंआयाहूं यहबातजीमेंठानकरचला कई दिनमें वहांजापहुंचा जबउसने चाहा कि घरमेंपैठूंसाम्ने से उसकीस्त्री ने देखा कि मेरापति आता है ऐसा न हो कि अपनेजीमें डरकरफिरजावे इसमें उन्नेनिकटआकर कहास्वामी तुमअपनेजीमें किसीबातकी परवाह मत करो मैंनेअपनेबापसे कहाहै कि चोरोंने आनकेदासीको मारा और मेराजेवरउतरबा मुझेकुएंमेंडाल मेरेपतिको

बांधलेगये यहीबाततुमभीकहियो कुछचिन्तामतकरो घरतुम्हाराहै और मैंदासीहूं यहकहकर वहघरमेंचली गई यह उससेठके पासगया उसने उठकर गलेलगा सबअहवालपूछा जिसतरह उसकी स्त्री समझागईथी इसनेउसीतरहसेकहा सारेघरमें प्रसन्नताहुई फिर सेठ नेउसेस्नानकरवा रसोईजिवां बहुतसानिहोराकरकहा कि यहघरतुम्हाराहै आनन्दसेरहो यहवहांरहनेलगा निदानकितने एकदिनोंके बादरातकेसमय शाहकीबेटी गहनापहनेहुये उसकेपाससोनेको आई और सोगईजब दोपहररातगई उसनेदेखा कि यहगाफिल सोगईहै तब एकछुरीऐसीउसकेगलेमेंमारी कि वहमरगई और सारा गहनाउसकाउतारअपनेदेशकी राहलीइतनीबातकहमैंना बोली महाराज यहमैंनेअपनी आंखोंसेदेखा इसवास्ते मुझेपुरुषसे कुछकामनहीं महाराज देखोतो पुरुषकीजात ऐसीबटपारहोतीहै कौनऐसेसेमित्रताकर अपनेघरमेंसांप पाले महाराजआप इसेबिचारें कि उसस्त्रीने क्याअपराध कियाथा यहसुनकरराजानेकहा ऐतोतेस्त्रीमेंऐबक्याहै तू मुझसेकहतबवह कीरबोलामहाराजसुनिये कंचनपुरएक नगरहै वहांकासागरदत्तनामएकसेठथा उसकेबेटेकानाम श्रीदत्तथा और एकनगरकानाम श्रीविजयपुरवहांकासो-मदत्तनामएकसेठथा और उसकीबेटीकानाम जयश्रीथा वहउससेठकेबेटेको व्याहीथी वहलड़काकिसीमुल्कमेंसौ-दागरीकेवास्तेगयाथावह अपनेमातापिताकेयहांरहतीथी जबउसे सौदागरीमेंबारहबर्षव्यतीतहोगये औरवहयहां

युवाहुई तोएकदिन सखीसेकहनेलगीऐबहिनमेरायौबन यौंहींजाताहै संसारकासुख मैंनेअबतलक कुछनहीं देखा यहबातसुनकेसखीने उस्सेकहा तू अपनेजीमेंधीरजधर भगवानचाहैतो तेराभर्तारजल्द आ मिलता है इसबात कोसुनकरजयश्रीअटारीपर चढ़झरोखेसेझांकीतो देखती क्याहै कि एकजवानचलाआताहै जबनिकटआयातोइस-की ओर उसकीएकाएकीचारनजरेंहुईं दोनोंकादिलमिल गया तबउसनेअपनीसखीसेकहा कि उसपुरुषकोमेरेपास लेआयहसुनसखीनेउस्सेजाकरकहा कि सोमदत्तकीकन्या नेतुझेएकान्तमेंबुलायाहै परतुममेरेघरआइयो फिरअपने घरकापताउसेबतादिया उसनेकहा कि रातकोमैंआऊंगा सखीनेयहसेठकी लड़कीसेआकरकहा कि उसनेरातके समयआनेकोकहाहै यहसुनके जयश्रीनेसखीसेकहा कि तू अपनेघरमेंजा जबवहआवैमुझेखबरकरना तो मैंभी घरसेसुचित्तहो चलूंगी सखीउसकीबातसुनके अपनेघर गईद्वारेपरबैठके उसकीराहताकनेलगी इतनेमेंवहआया इसनेउसेअपनेघरमें बिठाकरकहातुमयहांबैठो मैंजाकर तुम्हारीखबरकरतीहूं और आकरजयश्रीसेकहातुम्हारा प्रीतमआनपहुंचाहै यहसुनके उसनेकहा किंचितूठहर जाघरकेलोगसोजावें तोमैंचलूं फिरकितनीएकदेरकेबाद जबआधीरातकाअमलहुआ और सबसोगयेतबयहचुपके सेउठकरउसकेसाथचली और एकक्षणमेंवहांआनापहुंची और दोनोंनेउसकेघरमें प्रसन्नतापूर्वकमुलाकातकीजब चारघड़ीरातबाकीरही यहउठकरअपनेघरमेंआनकरचुप

चापसोरही औरवहभीसबेरे अपनेघरकोगयाइसीतरहसे कितनेएकदिनबीतगयेनिदानउसकापतिभीविदेशसेअप-नी सुसरालमेंआया जबइसनेअपनेपतिकोदेखजीमेंचिन्ता करके सखीसेकहा इसशोचमें मेराजीहै क्याकरूं किधर जाऊंमेरीनींदभूखप्यास सबबिसरगई नठंडेसेरुचिहै न गर्मसेऔरजोकुछअहवालअपनेचित्तकाथासोसबकहानि-दानज्योंत्योंकरके दिनतोकटा परसंध्याकेसमय जबउस कापतिब्यालूकरचुका तबउसकीसासने एकजुदेचौवारेमें सेजबिछवाकर कहलाभेजा कि तुमवहांजाकरआरामकरो औरअपनीबेटीसेकहा कि तूजाकर अपनेपतिकी सेवाकर वहइसबातकोसुननाकभौंचढ़ा चुपकीहोरही फिरउसकी मानेडाटकेउसकपासभेजा तोबेबशहोवे वहांगई औरमुह फेरपलंगपरलेटरही वह ज्यों २ उस्से नेहकी बातेंकरता था त्यों२उसेअधिक दुखहोताथा फिरतरहतरहकेबस्त्रआ-भूषणजो२हरएकमुकामसे उसकेवास्ते वहलायाथा सो दिये और कहा किइसेपहनतबतो उसनेऔर खफ़ाहो भवें तानमुंहफेरलिया और यहभीलाचारहो सोरहा क्योंकि हारामांदाराहकाथा परउसस्त्रीकोअपनेयारकीयादमेंनींद नआई जबवहसमझीकि यहनींदसेअचेतहुआतबवहहौले २ उठउसेसोताछोड़अन्धेरीरातमें निडर अपनेदोस्तकेम कानकोचली राहमेंएकचोरने उसकोदेखकर अपनेमनमें चिन्ताकीकियहस्त्री गहनापहिनेहुये आधीरातकेसमयअ केलीकहांजातीहैयहबातअपने जीमेंकहउसकेपीछेहोलि-यानिदानज्योंत्यों यहअपने यारके मकानमेंपहुंचीऔरउसे

वहांसांपकाटगयाथा वहमरापड़ाथा इसनेजाना किसोता
है उसकेबिरहकी आगकीजलीहुई जोथीउस्सेलपटकर
प्यारकरनेलगीऔरचोरदूरसेतमाशादेखनेलगा वहांएक
पीपलकेवृक्षपरएकपिशाचभी बैठाहुआयहतमाशादेखता
था अचानक उसकेमनमेंआयाकिउसके बदनमें पैठ इस्से
भोगकीजियेयहबिचार उसकेबदनमेंआ भोगकियाअन्त
कोदांतोंसेउसस्त्रीकीनाककाटउसीवृक्षपरजाबैठा चोरने
यहसबअहवालदेखा और वहबेबशहो उसीभांति लहूसे
चुचहातीहुई अपनीसखीकेपासगई और सबमाजराकहा
तबसखीबोली कि तू अपनेपतिकेपास जल्दजाकि जिसमें
सूर्यउदयहोनेनपाये और वहांजाकरढाढ़मारकेरोइयो जो
कोईतुझसेपूछेतोकहनाकिइन्नेमेरीनाककाटलीहैयहसखी
कीबातसुनतहीवहतुरन्तजा ढाढ़मार २ रोनेलगी इसके
रोनेकी आवाज़सुनसारेकुटुम्बके लोगआये देखतेक्याहैं
कि उसकेनाक नहां नकटी बैठीहै तबवेबोले ऐनिलज्ज
पापीनिर्दईकूरमति बिनाअपराधकिये इसकीनाक क्यों
काटी वहभीयहस्वांगदेखचिन्ताकरअपनेजीमेंकहनेलगा
किचंचलका, कालेसांपका, शस्त्रधारीका, दुस्मनका, बि-
श्वासनकीजिये और त्रियाचरित्रसेडरिये कबीश्वर क्या
बर्णननहींकरसक्ता और योगीक्याकुछनहींजानता मत-
वालाक्याकुछनहांबक्ता स्त्रीक्यानहींकरसक्ती सच्चहैघोड़े
काऐबबादलकागरजना त्रियाकाचरित्रपुरुषकीभाग्यदेव-
ताभीनहींजानतेआदमीकातो क्यामक़दूरहै इतनेमेंउसके
बापनेकोतवालको यहख़बरदी वहांसेप्यादेचबूतरेकेआये

औरइसेबांध कोतवालके पासलाये कोतवालनेराजाको ख़बरकीराजानेउस्से यहअहवालबुलवाकेपूछा तौउसने कोहामैंकुछनहींजानता औरसेठकीलड़कीसेबुलाकरपूछा तौउसनेकहामहाराज प्रत्यक्षदेखकेमुझसे पूछतेक्याहौ फिरराजानेउस्सेकहा तुझेक्यादण्डदें यहसुनकेवहबोला आपकेन्यायमें जोठहरेसोकीजियेराजानेकहा इसेलेजाके शूलीदो बधिकराजाकी आज्ञापाके उसेशूलीदेनेलेचले यहसंयोगदेख वहचोरभीवहांखड़ातमाशादेखताथा जब उसेबिश्वासहुआ कि यह नाहकमाराजाताहै तौउसने दुहाईदी तबराजानेउसेबुलाकरपूछा कि तूकौनहैउसने कहामहाराजमैंचोरहूं औरयहबेगुनाहहैनाहक इसकाखून होताहैआपने कुछन्यायनकिया तबराजानेउसेभी बुलाया औरचोरसेपूछा तूअपनेधर्मसेसचकह कियह मुक़द्दमा किसतरहसेहै तबचोरनेब्योरेवार अहवालकहा औरराजा अच्छीतरहसेसमझा निदान हरकारेभेजउस स्त्रीकायार जोमराहुआपड़ाथा उसकेमुंहमेंसे नाकमंगवाकेदेखी तब जानाकियहबेतकसीरहै औरचोरसच्चाहै फिरचोरबोलाकि महाराजनेकोंको पालना औरदुष्टोंकोदण्डदेना राजोंका सनातनधर्म चलाआताहै इतनीबात कहकर चूड़ामणि तोताबोला महाराजऐसेगुणोंकी पूरीस्त्रियांहोतीहैं राजा नेउसस्त्रीकामुंह कालाकरवाशिरमुड़वागधेपरचढ़वानगरी कीफेरी दिलवाछुड़वादिया औरउसचोरकोऔर साहूकार बच्चेकोबीड़ेदेबिदाकिया इतनीकथाकह बैतालबोला ऐ राजाइन दोनोंमेंकिसे जियादापापहुआ तबराजाबीर

बिक्रमादित्यबोलाकिस्त्रीको फिरबैतालबोला कि किस-तरहसेयहसुनके राजानेकहामर्द कैसाहीदुष्टहो परउसे धर्मअधर्मका बिचाररहताहै औरस्त्रीकोकुछधर्मअधर्मका ज्ञाननहींरहता इस्सेस्त्रीकोबहुत पापहुआयहबात सुनके बैतालफिरचलागया औरउसीवृक्षपरजालटका फिरराजाउसकोपेड़सेउतारगठरीबांधकांधेपररखलेचला४॥

पांचवीं कहानी॥

बैतालबोलाऐराजा उज्जैननामएक नगरीहैऔरवहां काराजामहाबलथा औरउसकाहरिदासनाम एकदूतथा उसदूतकीबेटीकानाम महादेवीथा वहअतिसुन्दरीथीजब वहवरयोग्यहुईतो उसकेपिताकोचिंताहुईकि इस्काबरढूंढ़ बिवाहकरदिया चाहियेनिदानएकदिनउसलड़कीनेअपने बापसेकहाकि पिताजोसबगुणजानताहो मुझेउसेदीजोतबउसनेकहा किजोसबविद्याजानताहोगातेराब्याहमैंउसकेसाथकरूंगा फिरएकदिनउसराजाने हरिदासकोबुलाकरकहाकि दक्षिणदिशामेंहरिचन्द्रनामराजाहैउसकेपास तुमजाकरमेरीतरफसे क्षेमकुशलपूछोऔर उनकीक्षेमकुशलकेसमाचारलाओ यहराजाकीआज्ञापा हरिदासबिदाहोउसराजाकेपास कितनेएकदिनोंमें जापहुंचाऔर उससेअपनेराजाका सबसंदेशाकहाऔरहमेशः उसराजाकेनिकटरहनेलगाएकदिन कीबातहै कि उस राजानेइस्से पूछाऐहरिदासअभी कलियुगकाआरम्भ हुआकिनहींतब उन्नेहाथजोड़करकहामहाराजाकलिकालबर्तमानहैक्योंकिसंसारमेंझूठबड़ाहै औरसतघटगयालोग मुंहपरबात

मीठीकरतेहैंऔरपेटमें कपटरखतेहैं धर्मजातारहापाप बढ़ापृथ्वीफलकमदेनेलगी राजाडांड़लेनेलगे ब्राह्मण लालचीहुये स्त्रियोंनेलाजछोड़दी बेटाबापकीआज्ञानहीं करता भाईभाईकाविश्वासनहींकरता मित्रोंसेमित्रताई जातीरहीपतिसेस्नेहघटगया सेवकोंनेसेवा छोड़दीऔर जितनीखराबबातेंथींवेसबदृष्टिआती हैं जबराजासेयह सबकहचुकातबराजाउठकर महलमेंगया औरयहअपने स्थानपरआनबैठा इतनेमेंएकब्राह्मण उसकेपासआकहने लगाकिमैंतुझसेकुछ मांगनेआयाहूं यहसुनकेउसनेकहा मांगतबउसनेकहा अपनीबेटीमुझकोदे हरिदासबोलाकि जिसमेंसबगुणहोंगे मैंउसकोदूंगायह सुनकेवहबोलाकि मैंसबविद्याजानताहूं उसनेकहाकुछअपनीविद्या मुझेदि-खलातोमैंजानूंकि तुझेविद्याआतीहैतबउसब्राह्मणनेकहा मैंनेएकरथबनवायाहै उसमेंयहसामर्थ्यहै किजहांजानेकी इच्छाकरो वहांवहएकक्षणमेंलेपहुंचावे तबहरिदासनेक-हाउसरथकोप्रभातसमय मेरेपासलेआइयो वहभोरको रथलेहरिदासकेपासआया फिरयेदोनों रथपरसवारहो उज्जैननगरीमेंआनपहुंचे परयहांउसकेआनेके पहिले किसीऔरब्राह्मणके लड़केनेउसकेबड़े बेटेसेआकरकहा थाकितूअपनीबहिनमुझेदे औरउसनेभी यहीकहाथाकि जोसबविद्याजानताहोगा उसकोदूंगा औरउसब्राह्मणके पुत्रनेभीकहाथाकिमैं सबज्ञानविद्याजानताहूं यहसुनके उसनेकहाथाकितुझेहीदेंगे औरएकऔर ब्राह्मणकेपुत्रने उसलड़कीकीमासेकहाथा कि तूअपनीबेटी हमेंदेउसने

भीउसेयहीजवाबदियाथा कि जोसबविद्याजानताहोगा उसीकोअपनीलड़की दूंगीउसब्राह्मणके लड़केनेभीकहा था कि मैंसम्पूर्णशास्त्रविद्या जानताहूं और शब्दबेधीतीर मारताहूंयह सुनकेउसनेभीकहाथा कि मैंने अंगीकारकि-यातुझेहीदूंगी निदानइसीतरहसे तीनोंबरआनके इकट्ठे हुये हरिदासआकरअपनेमनमेंचिन्ताकरनेलगा कि एक कन्याऔरतीनबर किसेदूंकिसेनदूं इसीशोचमेंथा किरात कोएकराक्षस आनकेउसकन्याका उठाय. बिंध्याचलप-र्बतकेऊपरलेगया कहाहैकि बहुतायत किसी बस्तुकीअ-च्छीनहींअति रूपवतीसीताथी रावणनेहरी, राजाबलि नेअतिदानकिया सोदरिद्रीहुआ, रावणनेअतिगर्ब करके अपनेकुलकीक्षयकी निदानजब भोरहुआऔरसब घरके लोगोंनेकन्याको नदेखा तबअनेकप्रकारकीचिन्ता करने-लगे और यहबातवेतीनोंबर भीसुनकेवहांआये उनमेंएक ज्ञानीथाउससे हरिदासनेपूछा ऐज्ञानीतूबताकि वहकन्या कहांगईउसने घड़ीएकमेंबिचारकरकेकहातुम्हारीलड़की कोराक्षसनेपर्बतमें लेजाकेरक्खाहै इसमेंदूसरा बोलाकि राक्षसकोमारकर मैंअभीलेआऊंगा फिरतीसराबोलाहमा-रेरथपरसवार होजाओ औरउसेलेआओ यहसुनतेहीवह झटसेउसके रथपरसवारहो वहांपहुंचा औरउसदेवको मारतुरन्तउसेलेआया और तीनों आपसमें झगड़ने लगे तबउसकेबापने मनमेंचिन्ताकरके कहाकि सबोंनेयहसा-हसकियाहै किसेदूं इतनीकथाकहबैतालबोला ऐराजा बिक्रमउनतीनोंमेंसे वहकन्या किसकीस्त्रीहुई राजाबोला

किवहस्त्रीउसकी हुईजोराक्षस कोमारकरलाया बैतालने कहासबकागुण बराबरहै किसतरहसेवहस्त्री उसकीहुई राजानेकहाउनदोनोंने इहसानकिया इस्सेउनको सवाब हुआऔरवह लड़करउसे मारकरलायाहै इसवास्ते वह उसकीस्त्रीहुई यहबातसुनबैतालफिरउसी वृक्षमेंजालटका औरराजाभी वहींजा बैतालको बांधकांधेपर रखले चला ॥ ५ ॥ छठी कहानी॥

फिरबैतालबोला ऐराजा धर्मपुरनामएकनगरहै वहां काराजा धर्मशीलथा औरउसकेमंत्रीका नामअन्धक था उसनेएकदिन राजासेकहा महाराज एकमंदिर बनवा उसमेंदेवीकोबिठा नितपूजाकीजिये किइसका शास्त्रमें बड़ापुण्यमिलताहै तबराजाएकमन्दिरबनवा देवीपधरा शास्त्रकीबिधिसे पूजाकरनेलगा औरबिनापूजाकियेजलभीनपीताथा इसतरहसे जबकितनीएक मुद्दतबीतीतो एकदिनदीवाननेकहा महाराजदृष्टान्त प्रसिद्धहै कि निपूतेकाघरसूना मूर्खकाहृदयसूना औरदरिद्रीकासबकुछ सूनाहैयहबातसुनराजा देवीकेमंदिरमेंजाहाथजोड़ स्तुतिकरनेलगा कि हेदेवीतुझे ब्रह्मा बिष्णु रुद्रइंद्रआठपहर सेवतेहैं औरतुनेमहिषासुर चण्डमुण्डरक्तबीजआदिदैत्योंकोमारपृथ्वीका भारउतारा औरजहां२तेरेभक्तको बिपत्तिपड़ीतहां२जातू सहायहुई औरयहीआशतकमैंतेरेद्वारपरआयाहूं अबमेरेभीमनकी इच्छापूरीकर इतनी स्तुतिजबराजाकरचुका तबदेवीकेमन्दिरसे आवाजआई कि राजामैंतुझसेप्रसन्नहुई बरमांगजोतेरेमनमेंहै राजा

बोलाहेमाता जोतूमुझसेप्रसन्नहुईतो मुझकोपुत्रदेदेवीने कहाराजातेरेमहाबली औरबड़ाप्रतापीपुत्रहोगा तबतो राजानेचन्दनअक्षतफूल धूपदीपनैवेद्यदेकरपूजाकी और इसीतरहसे नित्यपूजाकरताथा निदानकितनेदिनों के पीछेराजाकेएक लड़कापैदाहुआ राजाने बाजेगाजेसेकुटुम्बसमेतजाकर देवीकीपूजाकी इसअरसेमेंसंयोगवश एकदिनकिसीनगरसे एकधोबीअपनेमित्रको साथलिये इसशहरकीतरफ आताथा कि देवीकामन्दिर उसेदृष्टिआयाउसनेदण्डवत् करनेकाइरादाकिया इसमेंएकधोबीकी लड़कीअतिसुन्दरी आतीहुईसामने इसनेदेखीउसेदेख मोहितहुआ औरदेवीकेदर्शनकोगया दण्डवतकरहाथजोड़उसनेअपनेमनमेंकहा देवीजीइससुन्दरीसे मेराबिवाहतेरीकृपासेहोतोमैं अपनाशिरतुझेचढ़ाऊं यहमान्तामानदण्डवतकर मित्रकोसाथलेअपने नगरकोगया जबवहांपहुंचातोउसको बिरहनेऐसासताया कि नींदभूखप्यासबबिसरगई आठपहरउसीकेध्यानमेंरहनेलगा यह बुरीहालत उसकेमित्रनेदेख उसकेबापसेसबब्योरेवार कहाउसकापिताभी यहसुनकरसोचकहोरहा औरअपने जीमेंचिन्ताकरनेलगा कि इसकीदशादेख ऐसामालूमहोताहैजोउसकन्यासे इसकीसगाईनहोगी तोयहअपना प्राणत्यागकरेगा इससेउचितयहहै कि उसलड़कीसेइसकाब्याहकरदीजिये कि जिससेयहबचे इतनाबिचारकर पुत्रकेमित्रकोसाथले उसगांवमेंपहुंच उसलड़कीकेपिता सेंजाकरकहामैंतेरेपास कुछयांचनआयाहूं जोतूदेवेतो

मंकहूंउसनेकहा मेरेपासवहपदार्थहोगा तोमैंदूंगातुमक-
होइसतरहसे बचनबन्दकरकहातू अपनीलड़कीमेरेपुत्र
कोदे यहसुनकेउसनेभीउसकीबातमानकर ब्राह्मणको
बुलवादिनलग्नमुहूर्त्तठहराकर कहातुमलड़केकोलेआओ
मैंभीअपनीलड़कीके हाथपीलेकरदूंगा यहसुनवहवहां
सेउठअपनेघरआ सबसामानब्याहकातैयारकर ब्याहने
कोगया औरवहांजाबिवाहकरबेटेबहूकोले फिरअपनेघर
आयाऔरदुलहा दुलहिनआपसमें आनन्दसेरहनेलगे
फिरकितनेदिनोंकेबाद उसलड़कीकेपिताके यहांकुछशु-
भकर्मथा वहांसेन्योताइनकोआया येस्त्रीपुरुषतैयारहोअ-
पनेमित्रकोसाथले उसनगरकोचलेजबनगरकेनिकटपहुंचे
तोदेवीका मंदिरनजरआया तोउसेयहबातयादआईतबउ-
सनेअपने जीमेंबिचारकरकहाकि मैं बड़ाअसत्यबादीअध-
र्मीहूंकि देवीसेमिथ्याबोलाइतनीबात अपनेमनमेंकहउस
मित्रसेकहातुमयहांखड़ेहो मैंदेवीकादर्शनकरआऊं और
स्त्रीकोभीकहा तूयहांठहरयहकहमंदिरकेपासपहुंचकुण्ड
मेंस्नानकरदेवीकेसन्मुखजाहाथजोड़नमस्कारकरखड्ग उ-
ठागर्दनपरमाराकिशिरतनसेजुदाहो भुइँमेंगिरानिदानकि
तनीदेरपीछेउसकेमित्रनेबिचाराकिइसेगयेबड़ीदेरहुईहैअ
बतकफिरानहींचलकरदेखाचाहियेऔरउसकीस्त्रीकोकहा
तूयहांखड़ीरह मैंउसेशीघ्रही ढूंढ़लेआताहूं यहकहकरदे
वीकेमंदिरमें गयातोदेखता क्याहै किधड़से उसकाशिर
जुदापड़ाहै यहहालतवहांकी देखअपनेमनमें कहनेलगा
किसंसारबहुत कठिनजगहहै कोईयह न समझेगा किइ-

सनेअपनेहाथसे शीशदेवीको चढायाहैबल्कियह कहेंगे किइसकीस्त्री जोअतिसुंदरीथी उसकेलेने केलियेमारकर यहमकरकरताहै इस्सेयहांमरनाउचितहै परसंसारमें बदनामीलेनी अच्छानहीं यहकहतालाबमेंनहाके सामनेआहाथजोड़ प्रणामकर खांड़ाउठागलेमें माराकिरुण्ड सेमुण्डजुदाहोगया यहस्त्री यहांअकेलीखड़ी२ उकताकर राहदेख २ निराशहोढूंढ़ती हुईदेवीकेमंदिरमेंगई वहांजा देखतीक्याहै कि दोनों मरेपड़ेहैं फिरइनदोनोंको मुआ देखउसनेअपने जीमेंविचारा लोगतोयह न जानेंगे किआपसेदेवीकोये बलचढ़ेहैं सबकहेंगे कि रांड़व्यभिचारिणी थीवदकारी करनेकेलियेदोनों कोमारआईहै इसबदनामी सेमरनाउचितहै यहशोचकर सरोवरमेंगोतामार देवीके सन्मुखआ शिरनवा दण्डवत्कर तलवारउठा चाहतीथी किगर्दनमेंमारे किदेवीनेसिंहासनसेउतर उसकाहाथआन केपकड़लिया औरकहापुत्रीवरमांग मैंतुझसेप्रसन्नहुई तब उसनेकहामाता जोतूमुझसे प्रसन्नहुईहैतोइनदोनोंको जीदानददेवीने कहाइनकेधड़ोंसेशिरलगादे इसने मारे हर्षकेघबरा धड़सेशिरबदल केलगादिया औरदेवीनेअमृतलाछिड़कदिया येदोनों जीकरउठखड़े हुयेऔरआपस मेंझगड़नेलगे यहकहैस्त्रीमेरी औरवहकहैस्त्रीमेरी इतनीकथाकह बैतालबोला कि ऐराजाबीर बिक्रमादित्यइन दोनोंमेंवहस्त्री किसकीहुईराजाने कहासुनशास्त्रमें इसका प्रमाणलिखाहै किनदियोंमेंगंगा उत्तमहै औरपर्वतोंमेंसुमेरुपर्वतश्रेष्ठहै औरवृक्षोंमेंकल्पवृक्ष अंगोंमेंमस्तक उत्तम

हैइसन्यायसे जिसकाउत्तम अंगहैउसीकीस्त्रीहुई इतनी बातसुनबैताल फिरउसीवृक्षमें जालटकाऔरराजाभीजा उसेबांधकंधेपर रखलेचला॥

सातवीं कहानी॥

फिरबैतालबोला किऐराजा चंपापुरनाम एकनगरहै वहांकाराजा चंपकेश्वरऔर रानीकानाम सुलोचनाऔर बेटीकानाम त्रिभुवनसुन्दरीहै सोअतिसुन्दरीहै जिसका मुखचन्द्रमासीबालघटासे आंखेंमृगकीसीभवें धनुषसीना ककीरकीसी गलाकपोतकासा दांतअनारकेसेदाने होंठों कीलालीकुंदरूकीसी कमरचीतेकीसी हाथपांवकोमल कमलसे रंगचंपेकासा निदानउसकेयोबनकी ज्योतिप्र-तिदिनबढ़तीथी जबवहयुवाहुई तोराजारानी अपनेचित्त मेंचिन्ताकरनेलगे औरदेश २ केराजोंकोखबरगई कि राजाचंपकेश्वरके घरमेंऐसीकन्या पैदाहुईहै जिसकेरूप कोदेखतेही सुरनरमुनि मोहित होरहते हैं फिरमुल्क मुल्ककेराजोंने अपनीअपनी सूरतेंलिखवालिखवा ब्राह्म णोंकेहाथ राजाचंपकेश्वरकेयहांभेजदीं राजानेअपनीबेटी कोसबराजोंकी तसबीरेंदिखलाईं परउसके मनमेंकोई न समाई त तोराजानेकहा तूस्वयम्बरकर वहबातभीउसने नमानी औरअपनेबापसे कहाकिरूपबल ज्ञानजिसमेंए तीनोंगुणहोंपिताउसे मुझेदेना निदानजब कितनेएकदिन बीतेतोचारोंदिशासेचारबरआयेफिरउनसेराजानेकहाअप ना अपनागुणविद्यामेरेआगे प्रकटकरकहोउनमें सेएकबो लामुझमेंयहविद्याहै किएककपड़ामेंबनाकरपांचलालकोबें

चताहूंजबउसका मोलमेरेहाथआताहैतबउसमेंसेएकला लब्राह्मणकोदेताहूं दूसरादेवताकोचढ़ाताहूं तीसराअपने अंगलगाताहूं चौथास्त्रीके वास्तेरखताहूं पांचवेंकोबेंचकर रुपयेलेनित्यभोजनकरताहूं यहविद्यादूसराकोईनहींजानता और मेराजोरूपहैसोप्रकटहै दूसराबोलामैं जलथल केपक्षीकीभाषाजानताहूं मेरेबलकादूसरानहीं औरसुंदरताईमेरीआपकेआगेहै तीसरेनेकहामैंऐसाशास्त्र समझता हूं कि मेरेसमानदूसरानहीं और सुन्दरतामेरीतुम्हारे रूबरूहै चौथेनेकहामैं शस्त्रविद्यामेंएकहीहूं दूसरामुझसा नहींशब्दबेधीतीरमारताहूं और मेरारूपजगतमेंप्रकटहै आपभीदेखतेहीहैं यहचारोंकीबातसुनराजा अपनेजीमें चिन्ताकरनेलगा कि चारोगुणमेंबराबरहैं किसेकन्यादूं यहशोचकरउसनेबेटीकेपासजा चारोंकागुणवर्णनकिया और कहामैंतुझेकिसेदूं यहसुन वह लाजकीमारीनीची गर्दनकरचुपहोरही और कुछजबाब न दिया इतनीबात कहबैतालबोलाऐराजा बिक्रमवह स्त्री किसकेयोग्यहै राजानेकहाजोकपड़ाबनाकरबेंचताहै सोजातकाशूद्रहै और जोभाषाजानताहै वहजातकाबैश्यहै जो शास्त्रपढ़ाहै सो ब्राह्मणहै और शब्दबेधीउसकासजातीहै यहस्त्रीउसके लायकहै इतनीबातसुनबैतालफिर उसीपेड़मेंजालटका और राजाभी वहांजाउसेबांधकंधेपररखकरलेचला ७॥

आठवीं कहानी॥

तबबैतालनेकहा ऐराजामिथिलावतीनाम एकनगरीहै वहांकाराजागुणाधिपहै उसकीसेवाकरनेकोदूरदेशसेएक

चिरमदेवनामराजपुत्रआया नित्यउसराजाके दर्शनको जायाकरतापरंतुमुलाकात न होतीथी और जितनाधन यहलायाथा सोबर्षरोजकेअरसेमें सबबैठकरयहांखाया और वहांघरउसकातबाहहोगया एकदिनकीबातहै कि राजाशिकारकोसवारहुआऔरचिरमदेवभीउसकीसवारी केसाथहोलियासंयोगबश राजाएकबनमेंजाकर फौजसे जुदाहोगया और लोगसवारीके एकओरजंगलमेंभटक गयेलेकिनएकचिरमदेवहीराजाकेपीछेथानिदानउसनेही पुकारकरकहा महाराजलोगसवारीकेपीछे रहगयेहैं और मैं आपकेघोड़ेकेसाथघोड़ामारे चलाआताहूं राजानेयह सुनकेघोड़ारोका इतनेमेंयहबराबरआया राजानेउसेदेख कंपूछा तू किसवास्तेइतना दुर्बलहोरहाहै तबयहबोला जिसस्वामीकेपासरहिये और वहऐसाहो कि हजारोंको पालताहो औरअपनीखबर न लेतो इसमेंउसकाकुछदोष नहां परंतुअपनेकर्मकादोषहैजैसे दिनकोसाराजहानदेख-ताहैपरंतुउल्लूकोनजरनहींआतइसमेंसूर्य्यकाक्या गुनाह हैमुझकोपश्चात्तापहैकि जिसनेमाकेपेटमें रोजीपहुंचाईथी औरजब हमपैदाहुयेऔरदुनियाकी बस्तुओंकासुखकरने केलायकहुयेअबवहखबरनहींलेता नहींमालूमकिसोताहै या मरगयाऔरअपनेनज़दीकमालऔरदौलतबड़ेआदमी सेचाहनीयदिदेतेवक्तवहमुहबनावैऔरनाक भौंचढ़ावेतो इस्सेजहरहलाहल खाकरमरजानाबिहतरहैऔरये छः बातें आदमीकोहलकाकरतीहैं एकतोखोटे नरकीप्रतीति दूसरेबिनाकारणकीहँसीतीसरे स्त्रीसेबिवादकरनाचौथेअ

सज्जनस्वामीकीसेवापांचवें गधेकीसवारीछठेंबिनासंस्कृ
तकीभाषाऔरयेपांचचीजें बिधातामनुष्यकेकर्ममें पैदाहो
तेहीलिखदेताहैएकतौआयुर्वल दूसरेकर्मतीसरेधन चौथे
बिद्या पांचवेंयशऐमहाराज जबतकआदमीकापुण्यउदय
होताहैसबउसकेदास बनेरहते औरजबपुण्य घटजाताहै
तोबंधुबैरीहोजातेहैं परएकबातमुक्कदमहै स्वामीकीसेवा
करनेसेकभीनकभी फलमिलरहताहै निष्फलनहींरहता
यहसुनराजाने उनसबबातोंको शोचकरउसमयय कुछ
उत्तरनदियापर उस्सेयहकहाकिमुझे भूखलगीहैकहींसे
कुछखानेकोला चिरमदेवनेकहायहांअन्न भोजननमिले-
गायहकहजंगलमेंजा एकहिरनमारखीसेसे चकमकनि-
कालआगसुलगा मांसकेतिक्केभून राजाको खूबसास्वि-
लाआपभीखाये जबराजाकापेटभरचुका तबउसनेकहा
ऐराजपुत्रअबहमें नगरकोलेचलो किराहमुझेमालूमनहीं
उसनेराजाकोनगरमेंला उसकेमन्दिरमेंपहुंचादिया तब
राजानेउसकीचाकरीनियतकरदीऔरबहुतसउसेवस्त्रआ-
भूषणदिये फिरवहराजाकीसेवामें हाज़िररहनेलगा एक
दिनराजानेकिसी कामकेलियेसमुद्रकिनारे उसराजपुत्र
कोभेजावहजबकिनारेपहुंचा तोउसनेएकदेवी कामन्दिर
देखाउसमेंजादेवीकीपूजाकी लेकिनजब यहवहांसेबाह-
रनिकलातोवहींउसके पीछेसेएकसुन्दरीनायकाआ उस
सेपूछनेलगी ऐपुरुषतूकिसलिये यहांआयाहै वहबोला
ऐसकेलियेअयाहूं औरतेरेरूपकोदेखमैंमोहितहुआहूंउस
नेकहाजोमुझसे कुछइरादारखताहै तोपहिलेतूइसकुण्ड

मैंजाकरस्नानकर फिरउसकेपीछे जोतूमुझसेकहेगासो मैंसुनूंगीयहसुनतेही वहकपड़ेउतारकर तालावमेंपैठगो-तामारनिकलकरदेखैतो अपनेनगरमेंखड़ाहै इसअचम्भे कोदेखअचम्भितहो अपनेघरजाओर कपड़ेपहनराजाके पासआसबवृत्तान्तकहा राजानेसुनतेहीकहामुझेभी यह अचंभादिखा यहकहतेही सवारीमँगादोनों सवारहोकर चले कितनेदिनोंकेअरसेमें सागरकेकिनारेआये औरउ-सीदेवीकेमन्दिरमें जाकरपूजाकी फिरराजाजबबाहरनि कलातोवहीनायका एकसखीसाथलिये राजाकेपासआन खड़ीहुईऔर राजाकारूपदेखमोहितहो बोलीऐराजाजो मुझेआज्ञादेसोकरूं राजानेउसेउत्तरदियाजोतूमेराकहना करेतोमेरेसेवककी स्त्रीहोवहबोलीमैंतेरे रूपकेआधीनहुई हूं इसकीजोरू किसतरहसेहोऊं राजानेकहाअभीतोतू नमुझसेकहाजोतू हुक्मकरेगासोकरूंगीऔरसज्जनजि-सबातकोकहतेहैं उसकानिर्बाहकरतेहैंअपनेबचनकोपाल मेरेसेवककीजोरूहो यहसुनकेवहबोली जोआपनेकहासो मुझेअंगीकारहैतब राजासेवकका गांधर्वबिवाहकरदोनों कोसाथलेअपने राजधाममेंआया इतनीबातकहबैतालबो लाराजाबतलाओस्वामी औरसेवकमेंकिसकासतअधिक हुआराजाबोलासेवकका फिरबैताल बोलाकिजिसराजाने ऐसीसुन्दर स्त्रीपासेवककोदी तिसराजाकासत अधिकन हुआतबराजाबीरबिक्रमादित्यनेकहा जिनकोधर्मउपका-रकरनाहैतिनको उपकारकरनेमेंअधिकक्याहै औरजो आपसेवकहो परकाजकरैसोईअधिकहै इसकारणसेवक

कासतअधिकहुआ यहबातसुनबैताल उसीवृक्षपरजाल-
टकाऔरराजाफिरउसेवहांसेउतारकंधेपररखलेचला८॥

नवीं कहानी॥

बैतालबोलाऐराजा मदनपुरनामएकनगरहै वहांबीर
वरनामराजाथाऔर उसीदेशमेंहिरण्यदत्त नामएकबनि-
याथाउसकीबेटीका नाममदनसेनाथा वहएकदिनबसन्त
ऋतुमेंसखियोंको साथलिये अपनेबागमेंसैरऔरतमाशे
केवास्तेगईसंयोगबश उसकेआनेके पहिलेहीधर्मदत्तसेठ
काबेटासोमदत्तनाम अपनेमित्रकोलिये बनबिहारकोआ-
याथावहांसेफिरतोहुआ उसबाड़ीमेंआनपहुंचा औरइसे
देखमोहितहोगया औरअपनेमित्रसेकहनेलगा भाईयह
मुझसेमिलेतोमेरा जीवनसुफलहो और जोनमिलेतोइस
दुनियांमेंजीनाव्यर्थहै यहअपनेमित्रसेबातेंकर बिरहमें
ब्याकुलहोवेबशउसकेपास जाउसकाहाथपकड़के कहने
लगाजोतूमुझसेप्रीतिनकरेगी तोमैंतेरेऊपर अपनाप्राण
दूंगावहबोलीऐसामत कीजो इसमेंपापहोगा तबउसने
कहातेरीप्रीतिनेमेरे दिलकोबीधाहै औरतेरेबिरहकीआग
नेमेरेशरीरकोजलादिया इसपीरसेमेरी सुधिबुधिसबजा
तीरहीहैऔरमुझेइससमयप्रीतिके गलबेसेधर्मअधर्मका
लिहाजनहींहैपरजोतू मुझेवचनदेतो मेरेजीमेंजीआवैवह
बोलीआजकेपांचवेंदिन मेराव्याहहोगा तोपहिलेमैंतुझ
सेमिलजाऊंगी पीछेअपनेपतिकेयहांरहूंगी यहवचनदे
सौगन्धखावहआपने घरकोगईऔरयह अपनेघरआया
निदानपांचवेंदिन उसकाव्याहहुआ उसकापतिव्याहकर

उसेअपनेघरलेआया कितनेएकदिनोंके पीछेरातकेसमय उसकीदिवरानीजिठानीने जबरदस्तीउसे उसकेपतिके पासभेजावहरंगमहलमें जाचुपचापएक कोनेमेंबैठरही इसअरसेमेंउसकेपतिने जोदेखातोउसका हाथपकड़सेज परबिठालियाऔर जबचाहाकीगलेलगाऊंतो उसनेहाथ सेझिटकदियाऔर जो२उससाहूकार बच्चेसेकौलकरार हुवाथासोसबबयानकिया यहसुनकेउसके पतिनेकहाजो तूसच्चउसकेपासजायाचाहतीहै तोजा वहअपनेस्वामीकी आज्ञापाउससेठकेस्थानकोचली राहमेंचोरने उसेदेखप्र-सन्नहोइसकेपास आकरकहाकितूदोपहररातकेसमयइस अंधेरेमेंऐसेबस्त्र आभूषणपहनकेअकेलीकहांजातीहै वह बोलीजिसजगह मेराप्रीतमप्यारा बसताहैयहसुनचोरने कहायहांतेरासहायक कौनहैवहकहनेलगी धनुषबाण लियेमदनमेरीसहायता करनेवालासाथहै यहकहफिर चोरकेआगेआद्योपांत अपनीकथावर्णन करकेकहाकि मेराशृंगारभंगमतकर मैंतुझेबचनदियेजातीहूं वहांसेजब फिरूंगीतबगहनातेरेहवालेकरूंगी यहसुनकेचोरनेअपने दिलमेंकहागहनादेनेकातोमुझेबचनदियेजातीहैफिरक्यों इसकाशिंगारभंगकरूं यहसमझकर उसेछोड़दियाऔर आपवहांबैठारहा औरयहवहांगईजहां सोमदत्तपड़ासो-ताथाजातेहीजो इसनेउसेअचानकजगाया तोवहघबरा करउठा औरकहनेलगा तूदेवकन्याहैकिऋषिकन्यानागक न्याहैसच्चकहतूकौनहै औरमेरेपासकहांसेआईहैवहबोली किमैंनरकन्याहूं औरहिरण्यदत्त सेठकीबेटीहूं मदनसेना

मेरानामहैऔरतुझे स्मरणनहींजो उसउपबनमेंतू जबर दस्तीमेराहाथ पकड़केभोगकरनेपर उद्यतहुआथाऔर मैंनेतेरेकहनेके अनुसारयहसौगन्धकीथी कि बिवाहितपुरुषकोत्यागकरके तेरेपासआऊंगी सोमैंआईहूं जोतेरीइच्छामेंआवेसोकर फिरउन्नेकहा यहतूनेवृत्तांत अपनेपतिकेआगेकहायानहीं इसनेउत्तरदियाकिमैंनेसम्पूर्ण अहवालकहा औरउसनेसब दरियाफ्त करकेमुझेतेरेपासबिदाकियासोमदत्तबोलायहबातऐसेहैं जैसेबिनाबस्त्रकागहना याबिनघीकेभोजन याबिनासुरकेगान यहसबएकसेहैं इसीतरहमैले बसनतेजकोहरैं कुभोजनबलकोकुभार्याप्राणकोकुपुत्रकुलको हरैं औरराक्षस खफाहोताहै तोप्राणकोलेताहै परस्त्रीहितऔर अनहितदोनोंमें दुखदेनेवाली हैस्त्रीजोनकरे सोथोड़ाक्योंकिजोबात इसकेमनमें रहती हैसोजबानपरनहींलाती औरजोजबानमेंहै उसेप्रकटनहीं करती औरजोकरतीहै तोकहतीनहीं स्त्रीकोसंसारमें भगवानने अजबकोईपैदाकियाहै इतनीबातैंकह उससेठकेबेटने इसेजबाबदियाकिमैंपराईस्त्रीसे वास्तानहींरखता यहसुन वहफिरउलटीअपनेघरकोचली राहमेंउस चोरसेभेंटहुई उसकेआगेसबवृत्तांतकहाचोरनेसुनकेश्यावासी देछोड़दिया यहअपनेपतिके निकटआई औरउससे सबवृतांतबर्णनकियापरउसके पतिनेउसेप्यार न किया और कहाकोयलकासुरहीरूपहै औरनारीकारूप पतिव्रतहै औरकुरूपमनुष्यकारूपबिद्यातपस्वीकारूपक्षमाहैइतनी कथाकहबैतालनेकहा किसतरहराजानेकहा और पुरुष

मरउसकी इच्छादेखस्वामीनेछोड़ा राजाकाडरमानसोम दत्तनेछोड़ाऔरचोरके छोड़नेकाकुछकारणनथा इससेचोर हीप्रधानहै यहसुनबैतालफिरवृक्षमेंजालटका औरराजा भीवहींजाउसेवृक्षसेउतारबांधकांधेपररखफिरलेचला९।

दशवीं कहानी॥

बैतालबोलाऐराजा गौड़देशमेंबरदवान नामएकनग रहैऔरगुणशेखर नामवहांकाराजाथा उसकामंत्रीएकस-रावगीअभयचन्दनामथा उसीके समझानेसेराजाभीसरा वगधर्ममेंआया शिवकीपूजा बिष्णुकीपूजा और गौदान भूमिदानपिण्डदान जुआऔरमदिरा इनसबकोमनाकिया नगरमेंकोईकरनेन पावे औरहाड़कोई गंगामेंनलेजानेपा वे औरइनबातोंकी दीवाननेभीराजासेआज्ञालेडौंड़ीनग रमेंफिरवादी किजो कोईयेकर्मकरेगा उसकासर्बस्वराजा छीनकरदगडदेशहर से निकालदेगा फिरएकदिनदीवान राजासेकहनेलगा कि महाराजधर्मका बिचारसुनियेजो कोईकिसीकाजीलेताहै वहऔरजन्ममें उसकाभीजीलेता हैइसीपापसेसंसारमें अनेकमनुष्योंका जीवनमरण नहीं छूटता फिर २ जन्मलेताहै औरमरताहै इससेजगतमेंज न्मपाकेधर्मबटोरना मनुष्यकोउचितहै देखियेकामक्रोध लोभमोहबशहो ब्रह्माबिष्णुमहादेवकिसी नकिसीतौरसे संसारमेंअवतारलेलेआतेहैं बल्कि उनसेगायअच्छीहैंजो रागद्वेषमदलोभमोहसे रहितहैं औरप्रजाकी रक्षाकरती हैंऔरउनकेजोपुत्रहोतेहैं वेभीजगतके जीवोंकोबहुततरह सेसुखदेपालतेहैं इससेदेवताऔरमुनिसब गौकोमानते हैं

इसलियेदेवताओं को माननाअच्छानहां इसजगमेंगाय कोमानियेऔरहाथीसे लगाचिउंटीऔर पशुपक्षीनरतक हरएकजीवकी रक्षा करनाधर्महै जहान में इसकेसमान कोईधर्मनहींजोनरबिराने मांसकोखाअपना मांसबढ़ातेहैं सो अन्तकालमें नर्कभोग करतेहैं इस्सेमनुष्यको उचित यहहै कि जीवकीरक्षाकरे जो लोगकिबिराना दुःखनहीं समझते औरऔरोंकेजीवमारमारखातेहैंउनकी इसपृथ्वी मेंउमरकमहोतीहैऔरलूले लंगड़ेकानेअंधे बौनेकुबड़ेऐसे अंगहीन हो २ जन्मलेतेहैं जैसेपशुऔरपक्षीकेअंगखाते हैं वैसेहीअन्तअानेअंगखवाते हैं औरमदपानकरनेसेमहा पापहोताहैइस्सेमदमांसका खानाउचितनहीं इसतरहसे दीवानराजाको अपनेमतकाज्ञानसमझा ऐसाजैनधर्ममें लाया कि जो यहकहताथावहीराजाकरताथा और ब्राह्मण योगीजङ्गमसेवड़ासंन्यासी फ़क़ीरकिसीको न मानताथा और इसीधर्मसेराजकरताथा एकदिनकालकेबशहोमर गया फिरउसकाबेटाधर्मध्वजनामगद्दीपरबैठा और राज करनेलगा एकदिनउसनेअभयचन्ददीवानको पकड़वा शिरपरसातचोटियांरखवा मुंहकालाकरवा गधेपरचढ़ा डौंड़ीबजवानगरकेफेरेदिलवा देशनिकालादिया और अपनाराज निःकण्टककिया एकदिनवहराजाबसंतऋतुमें रानियोंकोसाथलेएकबागकी सैरकोगया उसबागमेंएक बड़ातालाबथा और उसमेंकमलफूलरहेथे राजाउससरोवरकीशोभादेखकपड़ेउतारस्नानकरनेकोउतरा और एक फूलतोड़तीरपरआरानीकेहाथमें देनेलगा कि फूलहाथसे

छूटकररानीकेपांवपरगिरा और उसकीचोटसेरानीकापांव टूटगयातबराजाघबराकर एकबारगीबाहरनिकलउसकी औषधिकरनेलगा कि इसमेंरातहुई और चन्द्रमानेप्रकाश किया चांदकीज्योतिके पड़तेहीदूसरीरानीकेशरीरमेंफफो लेपड़गये फिरअचानकदूरसेकिसी गृहस्थकेघरसेमूसल कीआवाजआई वोहींतीसरीरानीकेशिरमें ऐसादर्दहुआ कि मूर्च्छाआगईइतनीबातकह बैतालबोला ऐ राजाइन तीनोंमेंअतिसुकुमारकौनहै राजानेकहा जिसकेमूड़मेंपीर हो मूर्च्छाआईसोई बहुतसुकुमारहै यहबातसुन बैताल फिरउसीवृक्षमेंजालटका और राजावहांजाउसे उतार गठरीबांधकांधेपररखलेचला १० ॥

ग्यारहवींकहानी ॥

बैतालबोला कि ऐ राजापुण्यपुरनामएकनगरहैवहां कावल्लभनामराजाथा और उसकेमन्त्रीकानामसत्यप्रकाशथा उसमन्त्रीकीस्त्रीकानामलक्ष्मीथाउसराजाने एक दिनअपनेदीवानसेकहा जोराजाहोकेसुन्दरस्त्रीसे भोग बिलास नकरे तोराजकरनाउसकानिष्फलहै यहबातकह दीवानकोराजकाजकाभार देआपसुखसेऐशकरनेलगाराजकीचिन्तासबछोड़दी और दिनरातआनन्दमेंरहनेलगा संयोगबशएकदिनवहमन्त्री अपनेघरमेंउदासबैठाथा कि इसमेंउसकीभार्य्यानेपूछास्वामीइनदिनों आपकोबहुतदुर्बलदेखतीहूं वहबोलानिशदिन मुझेराजकीचिन्तारहतीहै इससेशरीरदुर्बलहुआहै और राजाआठपहरअपनेऐशआराममेंरहताहै वहमन्त्रीकी जोरूबोली कि हेपतिबहुतदिन

तुमनेराजकाजकिया अबथोड़ेदिनोंकेलियेराजासेबिदाहो तीर्थयात्राकरोयहबातउसकीसुन मन्त्रीचुपकाहोरहा फिर जबवहांसेउठा तोदरबारकेसमयराजाकेपासजा रुख़सत लेतीर्थयात्राकरनेनिकला जातेर समुद्रकेतीरसेतुबन्धरामेश्वरमें जा पहुंचावहांजातेहीमहादेवकादर्शनकरबाहरनिकलाथा किदृष्टिउसकीसमुद्रकीतरफजापड़ी तोक्यादेखताहै किएकऐसाकंचनका पेड़उसमेंसेनिकला कि जिसके जमुर्रदकेपत्ते पुखराजकेफूल मूंगेकेफलहैं वहअतिहीसुन्दरदृष्टिआया और उसवृक्षपरअतिसुन्दरनायकाबीन हाथमेंलियेमधुर २ कोमलसुरोंसेबैठीगातीहै एकघड़ीके बादवहतरवरसमुद्रमेंलोपहोगया यहतमाशामन्त्रीवहां देखउलटा फिरअपनेनगरमेंआया और राजाकेपासजा दण्डवतकरहाथजोड़बोला महाराजमैं एकअचरजदेखआयाहूं राजानेकहाबयानकरदीवानने कहामहाराजअगले मनुष्यकहगयेहैं जोबातकिसीकीसमझमेंनआवै और कोई निश्चयनकरै वैसीबातनकहिये परयहमैंनेआंखोंसे प्रत्यक्षदेखाइससेमैं कहताहूंमहाराज जहांरघुनाथजीने समुद्रपरपुलबांधाहै वहांजादेखताक्याहूं कि सागरमेंसेएकसोनेकातरवरनिकलावहज़मुर्रदकेपातपुखराजकेफूलमूंगेकेफलोंसे ऐसालदाहुआथा जिसकावर्णननहींहोसक्ता और उसपर महासुन्दरी स्त्री बीनहाथमेंलिये मीठेमीठेसुरोंसे गातीथी एकघड़ीकेबादवहपेड़समुद्र मेंछिपगया यहबात राजासुनदीवानकोराजसौंपअकेला समुद्रकेकिनारेकोचला कितनेएकदिनोंमें वहांजापहुंचा औरमहादेवकेदर्शन

को मन्दिरमेंगयाज्योंपूजाकरबाहरआया कि समुद्रसेवही वृक्ष नायकासमेतनिकला राजाउसकोदेखतेही सागरमें कूद उसीवृक्षपरजाबैठावहराजासमे तपातालकोचलागया तो इसकोदेखवहसुन्दरीबोली ऐबीरपुरुषकिसवास्तेतू यहांआयाहैराजानेकहामैं तेरेरूपकेलालचसे आयाहूंउसनेकहाजो तू कालीचौदशकेदिन मुझसेनमिलेतोमैं तेरे साथबिवाहकरूं राजानेयहबातमानी उससुन्दरीनेराजासेयहबचनलेकरराजाकेसाथ ब्याहकिया जबअँधेरी चतुर्दशीआईतोउसनेकहा ऐराजातूआजमेरेनिकटमतरहयह सुनकेराजाखड्गहाथमेंले वहांसेउठाऔरएककिनारेजाछिपकरदेखतराहा जबआधीरातहुई उससमय एकदेवआयाऔरउसनेआतेही इसेगलेसेलगाया यहदेखतेहीराजा खाड़ालेकेधाया औरकहाराक्षसपापीमेरेसामने तूस्त्रीको हाथनलगा पहिलेमुझसे संग्रामकर मुझेतभीतकभय था जबतकतुझेनदेखाथा अबमैं निडरहूं इतनीबातकहखांड़ा निकालएकऐसाहाथमारा कि उसकारुंडसेमुंडजुदाहो जमीनमेंतड़फनेलगा यहदेखवहबोली कि ऐबीरपुरुषतूने बड़ाउपकारकिया यहकहकरफिरकहा किनसबपहाड़ों मेंलालहोतेहैं न सबशहरोंमें सतवंतेआदमी न हरएकबनमेंचन्दन उपजताहै न हरएकहाथीकेमस्तकमें मोतीहोताहैफिरराजानेपूछा यहराक्षसकिसवास्तेकृष्णचतुर्दशीकोतेरेपासआयाथा वहबोलीमेरेपिताकानाम बिद्याधरहै उसकीमैंपुत्रीहूं सुन्दरीमेरानामहै और यहनियतथा कि मुझबिनमेराबाप भोजननकरता एकदिनभोजनकीबिरि-

यांमेंघरमेंनथी तबपितानेमुझपरक्रोधकर मुझेशापदिया कीतुझेकालीचौदशकेदिन राक्षसगलेसेआनके लगाया करेयहसुनकेमैंबोली पिताशापतोतुमनेदियाअबमेरेऊपर कृपाकीजिये उसनेकहामहावीर पुरुषजब उसराक्षसको मारेगा तबतूइसशापसेछूटेगीसोमैंउसशापसेछूटी और अबमैंअपनेपिताको नमस्कारकरनेजाऊंगीराजाबोलाजो तूमेरेउपकारको मानेतोएकबार मेरेराज्यकोचलके देख पीछेअपनेपिताके दर्शनकोजाइयोवहबोली कि अच्छाजो आपनेकहासो मुझेअंगीकारहै फिरउसेसाथलेअपनीराज धानीमेंआया ब्याहकेबाजनबजनेलगे सारेनगरमेंखबर हुईकिराजा आया तबघरघरबधाई मंगलाचार होनेलगे फिरतोसम्पूर्णनगरके मंगलामुखीआनकेदरबारमेंमुबार कबादियांदेनेलगे राजानेबहुतसादानपुण्यकियाफिरक ईएकदिन पीछेवहसुन्दरीबोली महाराजअबमैंअपनेबाप केयहांजाऊंगी राजानेउदासहोकर कहा अच्छासिधारो जबइसनेराजाको उदासदेखा तोकहामहाराजमैंनजाऊं-गी राजानेकहाकिसवास्ते तूनेअपनेबापकेयहां काजाना बन्दकियावहबोली अबमैंमनुष्यकीहोचुकीऔरपितामेरा गन्धर्वहैअबमैंजाऊंतोमेराआदरकरेगाइसलियेमैंनहींजा ती यहसुनराजाबहुतप्रसन्नहुआ औरलाखोंरुपयेकादान पुण्यकियाराजाके इसअहवालकेसुननेसेदीवानकीछाती फटीऔरमरगयाइतनी बातकहबैतालबोलाऐराजाकिस लियेवहमंत्रीमरगया तबराजाबीरबिक्रमादित्यनेकहाकि मंत्रीनेदेखा कि राजातो ऐसकरनेलगा औरराजकाजकी

चिन्तासबभुलादी प्रजाअनाथहुई अबमेराकहा कोईन मानेगाइसीचिन्तासे वहमरगया यहसुनबैताल फिरउसी वृक्षपरजालटका राजाफिर उसीतरहसे कांधेपररखले चला ११॥

बारहवीं कहानी॥

बैतालबोला ऐराजा बीरबिक्रमादित्य चूड़ापुरनामए कनगर है वहांकाचूड़ामणि नामराजाथा जिसकगुरूका नामदेवस्वामी और उसकेबेटेकानामहरस्वामीथा वह कामदेवके समान सुन्दरथा औरशास्त्रमेंवृहस्पति की बराबरऔर धनउसके कुबेरकासाथा वहब्राह्मणकी बेटी कोजिसकानाम लावण्यवतीथा व्याहलाया उनदोनोंमें बहुतप्रीतिहुई एकदिनगरमी केमोसममें रातके समयचौ वारेकीछतपर दोनोंअचेतपड़े सोतेथे संयोगबश स्त्रीकेमुंह परसेओढ़नी सरकगई औरएकगन्धर्व विमानपरबैठाहवा मेंउड़ाहुआ कहींजाताथा अचानकउसकीदृष्टि इसपरप-ड़ीवहांविमान कोनीचेलाया औरउससोतीको बिमानपर रखकरलेउड़ा कितनीदेरकेपीछे ब्राह्मणभी सोतेसेउठा तोदेखता क्याहै किस्त्रीनहीं तबघबराया औरवहांसेउ-तरकरसंपूर्ण घरकोढूंढ़ा जबवहवहांभीनमिली तोसारी नगरीकी गलीगलीकूचाकूचा ढूंढ़ताफिरापरंतुकहीं उसेन पायाफिरअपने जीमेंकहनेलगा कौनउसेलेगया औरकहां गईनिदान जबकुछवश न चलसका तो अन्तकोलाचार होपश्चात्ताप करताहुआ घरकोआया औरवहांउसे फिर दुबाराभीढूंढ़ा औरनपाया जबउसबिन घरसूनादृष्टिआ-या तबबहुतव्याकुल औरबेकलीसे बेबशहो हाय प्राण

प्यारीहायप्राणप्यारी कहके पुकारनेलगा फिरउसके बियोगसेअति व्याकुलहो गृहस्थीछोड़ बैरागलेलँगोटी बांधभभूतमल मालापहन नगरतज तीर्थयात्रा कोनि-कलानगर २ गांवगांवतीर्थ करताहुआ एकनगरमेंदोप-हरकेसमय जापहुंचा जबभूखसेनिपट लाचारहुआ तो ढांखकेपत्तोंका दोनाबना हाथमेंलेएक ब्राह्मणकेघरजा उससेकहाकिमुझे भोजनभिक्षादो, जबप्रीतिकेबश आद मीहोताहैतब उसेधर्मजातिऔर खानेपीनेका कुछबिचार नहींरहता औरनिरादरहो जहांपाताहै तहांखाताहै जब ब्राह्मणसेइसने भीषमांगी तबउसने इससेदोनालेघर मेंजाखीरसेभरलादिया यहउसदोनेकोलिये तालाबकि-नारेआया वहांएकबड़हर कावृक्षथा उसीजड़पर दोना रखसरोवरमेंमुंहहाथधोनेगयाऔर उसवृक्षकी जड़से कालानागनिकल उसदोनेमें मुंहसेगरलडाल चलागया तोवहदोना सम्पूर्णबिषसे भरगया फिरयहभीहाथ मुंह धोकरआया परउसेयहवृत्तान्त मालूमनथा औरभूखभी बहुतलगीथी आतेही खीरखाई औरवोहींउसेबिषचढ़ा फिरइसने उसब्राह्मणसे जाकरकहाकि तैनेमुझकोबिष दिया औरमैंअब इससेमरूंगा इतनाकह घूमकरगिरा औरमरगया फिरउसब्राह्मणने इसेमुआदेख अपनीस्व-कीयास्त्रीको घरसेनिकालदिया औरकहाब्रह्महत्यारी तू यहांसेजा इतनीकथासुन बैतालबोला किऐराजा इनमें सेंब्रह्महत्याका पापकिसेहुआ राजानेकहा सांपकेमुंहमें तोबिष होताहीहैइससेउसेपापनहीं और उसस्त्रीने भी

भूखाजानकेभिक्षादीथीउसेभीपापनहींऔर ब्राह्मणनेभी अनजानेखीरखाईतिस्सेउसेभी पापनहीं निदानइनमेंसे जिसकोकोई पापलगावैवहीपापीहै यहसुन बैतालफिर उसीतरवरपरजालटक ।और राजाभी जा उसेउतारबांध कांधेपर रखवहांसे चला १२ ॥

तेरहवींकहानी ॥

बैतालबोला ऐराजाचन्द्रहृदयनामनगरीहै और उस जगहकारण वीरनामराजा था उसकीनगरी में धर्मध्वज नामएकसेठथा और उसकीबेटीकानाम शोभनी था वह अतिसुन्दरीथी युवाउसकी दिन २ बढ़तीथी और रूप उसका पलपलअधिकहोताथा संयोगबश उसनगरीमें रातोंकोचोरीहोनेलगी जबचोरोंकेहाथसे महाजनोंने बहुत दुखपाया तबइकट्ठे हो राजाकेनिकट जाकरसबनेकहामहाराज चोरोंनेनगरमेंबहुतउपाधि कीहै हमइससशहर में अबरहनहींसक्ते राजानेकहाजोहुआ सो हुआपरंतु अबआगेदुःख न पावोगे मैंउनकायत्नकरताहूं यहकहराजानेबहुतसेलोगबुलवा चौकीकोभेजदिये औरचौकी पहरेकाढब उनकोबतादिया और हुक्मकियाकि जहांचोरोंको पाओ बिनापूछेमारडालो लोगरातकोनगरकीरखवारी करनेलगेइसपरभी चोरीहोतीथी तबफिरसंपूर्णसाहूकार इकट्ठे होकरराजाकेपासआये और बिनयकीमहाराज आपनेपहरुयेभेजेतोभीचोरकम न हुये और नित्यचोरीहोतीहै राजानेकहाइससमय तुमबिदाहो आजकीरातिसेनगर की चौकीदेनेमें निकलूंगा यहसुनकेराजासेबिदाहोवे अपने२

घरगये और जबरातहुईतबराजा अकेलाढालतलवार ले प्यादेनगरीकी रक्षाकरनेलगा इतनेमेंआगेजाके देखेतो एकचोरसाम्नेसे चलाआताहै राजाउसेदेखकरपुकारा तू कौनहै वहबोलाकिमैंचोरहूं फिरचोरनेकहातूकौनहै राजा नेकहामैंभीचोरहूं यहसुनवहप्रसन्नहोकेबोला आओमिल करचोरीकरनेचलें यहबातआपसमेंठहरा राजा और चोर बातेंकरतेहुये एकमहल्लेमें पैठे और कितनेएकघरोंमेंचोरी करमालमताले नगरकेबाहरनिकलएककुएंपरआये और उसमेंउतरपातालपुरीमें जा पहुंचेवहचोरराजाको दरवा जेपरखड़ाकर धनदौलतअपनेमन्दिरमें लेगयाइतनेमें उ सकेघरमेंसेएकदासीनिकली वहराजाकोदेखकेकहनेलगी महाराज तुमकहांइसदुष्टकेसाथयहांआये अबभला इसी मेंहै कि वहआनेनहींपावै और तुमसेजहांतकभागाजावे वहांतकभागो नहींतोवहआतेहीतुम्हेंमारडालैगा राजाने कहामैंतोराहनहींजानता किधरकोजाऊं तोउसचेरीनेबाट दिखादी और राजाअपनेमन्दिरकोआया दूसरेदिनराजा नेसबअपनीसेनासाथलेउसकुएकीराहपातालपुरीमें जाक रचोरकासंपूर्णघरबारघेरलिया परंतुवहचोरकिसी और राहसेनिकल उसनगरकामालिक जो देवथा उसकेपास गया और बिनयकी कि एकराजामेरेमारनेको घरपरचढ़ आयाहै सो तुममेरीइससमयसहायताकरो नहींतोतुम्हा रीपुरीकोबासछोड़ औरनगरमे जा बस्ताहूं यहसुनराक्ष सनप्रसन्नहोकर कहातूमेरेलियेखानेकोलायाहै मैं तुझ सेबहुतप्रसन्नहुआ यहकहकरजहांराजाकटकलियेहबेली

घेरेहुयेथा वहांवहदेवआ आदिमियोंको और घोड़ोंको खानेलगा राजाउसदेवकी सूरतदेखकरभागा और जिनलोगोंसेभागागया वेतोबचे और बाकियोंकोदेवनेखालिया निदानराजाअकेलाभागाआताथा कि चोरनेआकर ललकारातूराजपूतहोकर लड़ाईसेभागताहै यहसुनतेही राजाफिरखड़ाहुवा औरदोनोंसम्मुखहो युद्धकरनेलगेनिदानराजाउसेवशकर मुशकेंबांधनगरमेंलेआया फिरउसकोनहलवाधुलवा अच्छे २ बस्त्रपहिनाएकऊंटपरबिठलाढँढोरियासाथकर सारेनगरमेंफेरनेकोभेजा औरशूली उसकेवास्तेखड़ीकरनेकाहुक्मदिया इसमें शहरकेलोगोंमेंसेजोउसेदेखताथा सोकहताथा कि इसीचोरनेसम्पूर्ण नगरलूटाहैऔर अबइसेराजाशूलीदेदेगा जबउसधर्मध्वजसेठकीहबेलीके नीचेवहचोरगया तबउससेठकीबेटीने ढँढोराकीआवाजसुन अपनीदासीसेपूछायहकाहेकीडौंड़ी बजतीहैवहबोलीजोचोर इसनगरमेंचोरीकरताथाउसेराजापकड़लायाहैअबशूलीदेगा यहसुनके देखनेकोवहभी दौड़आईऔरचोरका रूपयोवनदेखतेहीमोहितहोगईऔर अपनेबापसेआकरकहा तुमइससमय राजाकेपासजाओऔरउसचोरकोछुड़ालाओ सेठबोलाजिस चोरनेराजाकासम्पूर्णनगरमूसाहै औरजिसकेलिये साराकटककटाउसेमेरेकहेसेक्योंकरछोड़ेगा फिरउसनेकहा जोतुम्हारेसर्वस्वदियेसेराजाउसेछोड़े तोतुरन्ततुमउसे छुड़ायलाओ औरजोवहनआवेगातो मैंभीअपनी जानदूंगी यहसुनसेठ नेराजासेजाकरकहा महाराजपांचलाख रुपयेमुझसेली-

जियेऔरइसचोरको छोड़दीजियेराजाने कहाइसचोरने सारानगरमूसाऔर संपूर्णलशकरइसीके कारणसेनष्ट हुआइसमेंकिसीतरह सेनछोड़ूंगा जबराजानेउसकीबात नमानीतोवहलाचार फिरकरअपनेघरकोआयाऔरअपनी बेटीसेकहाजितना कहनेकाधर्मयामैंनेकहा परन्तुराजाने नमानाइतनेअरसेमें चोरकोनगरीके फेरेदिलवाकरशूली पासलाखड़ाकिया औरचोरनेउसबनिये कीबेटीकाअहवा लजोसुना तोपहिलेखिलखिलाकरहँसा फिरडकराडक-रारोनेलगाइतनेमेंलोगोंनेउसेशूली खैंचलियाऔरबनिये कीबेटीउसकेमरनेकी खबरपाकर सतीहोनेकेलियेउसी जगहपरआईऔर चिताबनवाउसमेंबैठ उसचोरकोशूली सेउतारउसकाशिरगोदमेंरख जलनेकोबैठीचाहेकिउसमें आगदिलवावेसंयोगबशवहांएकदेवीकामन्दिरथा उसमें सेतुरन्तदेवीनिकलकर बोलीऐपुत्रीमैं तुष्टहुईतेरेसाहस परतूबरमांगवहबोली माताजोतूमुझसे तुष्टहुईहैतोइस चोरकोजीदानदे फिरदेवीबोलीइसीतरहसेहोवेगा यह कहकरपातालसेअमृतलाचोरकोजिलादियाइतनीकथाक हबैतालनेपूछाऐराजा बतलाओकिचोर पहलेकिसकारण हँसाऔरपीछेकिसलियेरोयाराजनेकहा जिसवास्तेहँसा वहबाइसमैंजानताहूं औरजिसवास्तेरोया वहभीमुझेमा लूमहैहेबैतालयहसुन चोरनेजीमेंबिचाराकिमरनेकेसमय उसनेमुझसेप्रीतिकी भगवानकीगतिकुछजानीनहींजाती कुलक्षनेकोदेलक्ष्मी, कुलहीनकोदेविद्या, मूर्खकोदेसुन्दर स्त्री, पहाड़परबरषावे वर्षा, ऐसीऐसीबातैंशोचकरहँसाफि

रअपनेमनमेंबिचारा कियहजोमेरेवास्ते अपनासर्बस्वदेती हैअबइसकामैं क्याउपकारकरूंगा यहसमझकरवहरोया यहसुनबैताल फिरउसीपेड़परजालटका राजाफिरवहां गयाऔरउसेखोलगठरीबांधकांधेपररखलेचला १३ ॥

चौदहवीं कहानी ॥

बैतालबोलाऐराजा बिक्रम कुशुमावतीनामएक नगरी है वहांकासुविचारनामराजाथा जिसकीबेटीकानामचन्द्र प्रभाथा जबवहबरयोग्यहुई तबएकदिन बसन्तऋतु में सखियोंकोसाथले बागकीसैरकोचली वहांजनानेकेबन्दो बस्तकेपहले एकब्राह्मणकालड़का वर्षबीसएककाअति सुन्दरमनस्वीनामकहींसे फिरताहुआ उसबागमेंआएक वृक्षकेनीचेठंढीछांहपाकरसोरहाथाराजाकेलोगोंनेआउस बाड़ीमें बन्दोबस्तकिया परउसब्राह्मणकेबेटेकोकिसी ने न देखाऔरवहउसवृक्षकेनीचेसोतारहा औरराजकन्या अपनेलोगोंसमेत बागमेंआईऔर सहेलियोंके साथ सैर वोतमाशादेखतीहुई वहांआई जहांवहब्राह्मणकाबेटासो-ताथा इसकावहांपहुंचना कि वहभीलोगोंकेपांवकेअहटसे उठबैठादोनोंकीचार नजरेंहुईंऔरकामदेवके ऐसेबशहुये कि उधरब्राह्मणका लड़कामुर्छाखाभूमिपरगिरा औरइ-धरबेसुधहोराजकन्याकेपांवकांपनेलगे परवोहींउसेस-खियोंनेहाथोंहाथथांभलिया निदानचंडोलमें लिटाघर कोलेआईंऔरयहां ब्राह्मणकालड़का ऐसाबेसुधपड़ाथा कि अपनेतनमनकी कुछखबरनरखताथा इसअरसेमेंदो ब्राह्मणशशीऔरमूलदेवनाम कामरूदेशसेविद्या पढ़हुये

वहांआनिकले मूलदेवने उसब्राह्मणकेलड़वेको पड़ादेख कहाऐशशीऐसाबसुध यहांक्योंपड़ाहै वहबोलानायकाने भौंकीकमानसे नयनकेतीरमारेहैं इस्सेयहबेसुधपड़ाहै मूलदेवनेकहा इसेउठानाचाहिये उसनेकहातुझेउठानेसे क्याप्रयोजनहै उसनेशशीकाकहनानमाना औरउसेपानी छिड़ककरउठाया औरपूछाकितेरीक्यादशाहुईहै वह ब्राह्मणबोलादुःख उस्सेकहियेजो दुखकोदूरकरेऔरजो सुनकेदूरनकरसकै उस्सेकहनेसेक्यालाभहै वहबोला अच्छातूअपनीपीर हमारेआगेकहहमदूरकरेंगे यहसुन केवहबोलाकि अभीराजकन्यासखियोंकोसाथलिये आई थीसोउसकेदेखनेसे मेरीयहगतिहुईहै जोवहमिलैगीतो मैंअपनाजीवरक्खूंगा नहींतोप्राणतजूंगा तबवहबोला हमारेस्थानपरचल उसकेमिलनेकाहमयत्नकरदेंगे नहींतो तुझेबहुतसाधनदेंगे तबमनस्वीबोला कि संसारमेंभगवान नेबहुतरत्नपैदाकियेहैं परस्त्रीरत्नसबसेउत्तमहै औरउसी केलियेमनुष्यधनकी इच्छाकरतेहैं जबनारीकोत्यागातब धनलेकेक्याकरेंगे जिनकोस्वरूपवानस्त्रीनमिले उनसे संसारमेंपशुभलेहैं धर्मकाफलहै धन,धनकाफलहै सुख, औरसुखकाफलहैनारी औरजहांनारीनहीं तहांसुखकहां यहसुनकेमूलदेवबोला जोतूमांगेगासोदूंगा तबउसने कहाऐब्राह्मण मुझेवहीकन्यादिलादे फिरमूलदेवनेकहा अच्छातूहमारेसाथचल तुझेवहीकन्यादिलादेंगे निदान मूलदेवबहुतसीधोर्य्यदेकरउसे अपनेघरलेगया औरवहां जाकरदोगुटकेबनाये एकगुटकाउसब्राह्मणकोदेकर कहा

जबइसेमुंहमेंरक्खेगा तबतूबारहबर्षकीकन्या होजायगा औरजिससमय तूइसेमुंहसेनिकाललेगा तोपुरुषज्योंका त्योंहोजायगा फिरकहातूअपने मुंहमेंरखउसनेजोअपने मुंहमेंरक्खा तोबारहबरषकीकन्याहोगया औरदूसरेगुटके कोजोइसने मुंहमेंरक्खातोआपअस्सीबरषकाडोकराहोग याऔरउसकन्याकोलिये हुयेराजाकेयहांगयाराजानेब्राह्मणकोदेखदण्डवत्करआसन बैठनेकोदियाऔरएकआसनउसलड़कीकोभीदियातबब्राह्मणनेएकश्लोकपढ़अशीशदी किजिसकीशोभातीनों लोकमें फैलरहीहैऔरजिनने बामनहोबलिकोछलाऔरबानरसाथलेसमुद्रकापुलबांधा औरजिनने पर्बतहाथपर रखइन्द्रसे ब्रजकेग्वालबालबचाये सोईबासुदेव तुम्हारीरक्षाकरैं यहसुनकर राजानेपूछामहाराज आपकहांसेपधारे मूलदेवब्राह्मण बोलाकि गंगापारसेमैंआयाहूं औरवहीं मेराघरहै मैंअपनेबेटेकीव हूलेनेगयाथा पीछेमेरेगांवमें भागड़पड़ीसो मैंनहींजानताकिब्राह्मणी औरमेरापुत्र भागकेकहांगये औरअबमैंइसकीसाथलियेहुये किसतरहढूंढूंगा इससेउचितयहहै किआपकेपास इसेछोड़जाताहूं जबतक कि मैं नआऊंतब तकइसेयत्नसेरखना यहबात ब्राह्मणकीसुन राजाअपने चित्तमें चिन्ताकरनेलगा किअतिसुन्दरी तरुणस्त्रीको मैं किसतरहरक्खूं औरजोनहींरखता तोयहब्राह्मण शाप देगातोमेरा राजभंगहोगा यहअपनेजीमें राजाबिचारकर बोलामहाराज जोआपनेआज्ञाकी सोमुझेअंगीकारहैफि रराजाने अपनीपुत्रीकोबुलाकरकहाबेटी इसब्राह्मणकी

बहूकोलेजाके बहुतयत्नसेरक्खो औरसोतेजागते खातेपी तेचलतेफिरतेक्षणभरअपनेपाससेइसे जुदामतकीजियोय हसुनराजकन्याउसब्राह्मण कीबहूकाकरधरअपनेमन्दिर मेंलेगई औररातकेसमय दोनोंएकसेजपर सोकर आपस मेंबातेंकरनेलगीं बातेंकरते २ ब्राह्मणकीबहूबोली हेरा जकन्यातूकिस दुःखकेमारे अतिदुर्बलहोरहीहै सोमुझसे कहराजपुत्रीबोली एकदिन बसन्तऋतुमें सखियोंकोसा थलेमैंबागकी सैरकोगईथी वहांपरएकब्राह्मणअतिसुन्दर कामदेवकेसमान मैंनेदेखा औरउसकीमेरीचार नजरेंहुईं उधरवहबेहोशहुआ इधरमैंबेसुधहुई तबसखियां मेरीअ वस्थादेख घरकोलेआईं औरउसकानाम ठांवमैंकुछनहीं जानती मेरीआंखोंमेंउसकी सूरतसमारहीहैऔरमुझेखा नेपीनेकीभीकुछरुचिनहींइसी पीरसेमेरेशरीर कीयहदशा हुईहैयहसुनके वहब्राह्मणकी बहूबोलीजोतेरे प्रीतमको तुझसेमिलादूंतो तूमुझेक्यादे राजकन्याबोलीकि सदाते रीदासीहोरहूंगी यहसुनकेवह गुटकाअपनेमुंहसेनिकाला फिरपुरुषहोगया औरयहउसे देखकरशरमाई फिरउस ब्राह्मणकेलड़केने गंधर्वविवाहकी रीतिसेउसकेसाथ अ-पनाब्याहकिया औरनित्यप्रति उसीतरह रातको पुरुष होता दिनकोस्त्रीबनरहता निदानछःमहीने पीछेराजक-न्याकेगर्भरहा एकदिनका वृत्तान्तहै कि राजासारेकुटुम्ब कोसाथलेकर दीवानकेघर ब्याहमेंगया वहांमंत्रीकेबेटेने उसस्त्रीभेष धारीब्राह्मणके लड़केकोदेखा देखतेहीमो-हितहोगया औरअपने एकमित्रकेआगे कहनेलगा जो

यहनारीमुझेनमिलेगीतोमैंअपना प्राणतजूंगा इसअरसेमें राजान्यौताखा कुनबेसमेत अपनेमन्दिरकोआया परमंत्रीकेबेटेकी उसकेबिरहकेडाहसे निपटकठिनदशाहुई अन्नपानीछोड़दिया यहगतिदेख उसकेमित्रनेजाकर मंत्री सेकहाऔरदीवान येयहअहवाल सुनजाकर राजासेकहा महाराजउस ब्राह्मणकीस्त्रीकी प्रीतिमेंमेरेबेटेकी बुरीदशाहैखानापीना छोड़दियाहै जोआपकृपाकरकेब्राह्मणी कोमुझेदेवें तोउसकीजानबचे यहसुनराजाक्रोधकरके बोलाअरेमूर्खऐसी अनीतिकरना राजाओंकाधर्म नहींहै एकमनुष्यकी थातीहो औरबिनाआज्ञा उसकीदूसरे को देनाउचितहै जोतूमुझसेयहबातकहताहै यहसुनकेप्रधाननिराशहो अपनेघरकोआया पर उसलड़केका दुःख देखकरउननेभी अन्नजलछोड़दिया जबकितीनदिनदीवानकोबिनाअन्नजलकेबीतेतबकारबारियोंनेइकट्ठेहोकर राजासेजाकरबिनय कीमहाराजमंत्रीकापुत्रअबतबहोर हाहैऔरउसके मरनेसेदीवानभीन बचेगाऔरदीवानके मरनेसेराजकाजन चलेगाभलाईयहहै किजोहमबिनय करैंसोअंगीकारहो यहसुनकेराजानेआज्ञादी किकहोतब उनमेंसेएकमनुष्यबोला महाराजउसबूढ़े ब्राह्मणकोगये बहुतदिनहुयेकि फिरानहीं भगवानजानमरगयायाजीता हैइससेउचितयहहै किब्राह्मणकीबहूको मंत्रीकेबेटेकोदे अपनाराजस्थिररखिये औरकदाचित् आवैतोगांवधनदीजिये यदिइसपरराज़ीनहोगा तोउसकेलड़केकाब्याहकरबिदाकीजियेगा यहबातसुनराजाने उसब्राह्मणकीबहू

सेबुलाकरकहा तूमेरेमंत्रीकेपुत्रके घरजावहबोलीकिस्त्री काधर्मनष्टहोताहै अन्यपतिपाके औरब्राह्मणकाधर्मजाता हैराजाकीसेवाकरनेसे औरगायदूरकी चराईसेखराबहो जातीहै औरधन जाताहै अधर्मकरनेसेइतनाकहफिरबोली जोमहाराजतुम मुझेमंत्रीकेबेटेको देतेहोतोउससेयहबात ठहरालीजिये किजोकुछउससेमैंकहूंसोवहकरे तबमैंउ-सकेघरजाऊंगी राजाबोलाकहोकिवहक्याकरे उसनेक हामहाराजमैंब्राह्मणी वहक्षत्रीइससेउचितयहहै किवह पहलेसबतीर्थयात्राकरआवै तबमैंउसकेसाथघरकरूं यह बातसुनकेराजाने मंत्रीकेबेटेको बुलाकरकहापहलेतूतीर्थ यात्राकरआ तबउसब्राह्मणीकोतुझेदेवेंगे राजाकीबात सुनदीवानकेबेटेने कहामहाराजवह मेरेघरजाबैठेतोमैंती र्थकोजाऊंयहबातसुन राजानेब्राह्मणीसेकहा जोतुमपह लेउसकेघरमेंजाकेरहो तोवहतीर्थयात्राकोजावै यहसुन लाचारहोराजाकेकहनेसेब्राह्मणीउसके घरमेंजारही तब प्रधानकेपुत्रनेअपनीस्त्रीसेकहा तुमदोनों प्रसन्नतापूर्वक सम्मतकररहना औरआपसमें किसीतरहका झगड़ाल-ड़ाईनकरना और बिरानेघरकभीनजाना इतनीसीखदे वहतोतीर्थयात्राकोगया और इधरउसकी बहूसौभाग्य सुन्दरीनाम ब्राह्मणकीबहूको अपनेसाथले एकबिछौने पररातकोलेटीहुई बातेंइधरउधरकी करनेलगी कितनी एकदेरकेबादउस दीवानकेपुत्रकीबहूने यहबातकहीऐ सखीइससमय तोमैंविरहसे जलीजातीहूं परमतलबमे राकिसतौर हासिलहो दूसरीबोली यदितेरेमतलबको

मैंकरलाऊं तोतूमुझेक्यादे उसनेकहा सदातेरेआगेहाथ जोड़ेआज्ञाकारी रहूं तबयह अपनेमुंहसे गुटकेकोनिका-लपुरुषबनगया औरनित्यप्रति इसीतरहसे रातकोपुरुष बनतादिनकोस्त्री फिरतोइनदोनोंमेंबड़ी प्रीतिहुई निदान इसीतरहसे छःमहीनेबीते औरमंत्रीकापुत्रआपहुंचा उधर उसकेआनेकी खबरसुन मंगलाचारकरनेलगे औरइधर ब्राह्मणकीबहूनेगुटकामुंहमेंसे निकालपुरुष बन खिड़की कीराहमहलसेनिकल अपनीराहली फिरकितनीएकदेर मेंउसमूलदेव ब्राह्मणके पासपहुंचा किजिसनेइसेगुटका दियाथा औरउससेसबअपनी आदिअन्तकी व्यवस्थाक हीतबमूल देवनेसम्पूर्ण वृत्तान्तसुनकर गुटकाइससेले अपनेहाथी शशीनाम ब्राह्मणकोदिया औरदोनोंनेगुटके अपने२मुंहमेंरखलिये एक बूढ़ाबनगया औरएकबीसब-रसकाफिरये दोनोंराजाके यहांगयेराजाने देखतेहीदण्ड वत्करइनके बैठनेकोआसनदिये औरइन्होंने भीअशीश दी राजानेइनकीकुशलक्षेमपूछ मूलदेवसेकहा किइतने दिनतुम्हेंकहांलगे ब्राह्मणबोलामहाराज इसीपुत्रकेढूंढ़ नेकोगयाथा सोइसेखोजकर आपकेपास लेआयाहूं अब इसकीबहूकोदोतो मैंबहूबेटेको अपनेघरलेजाऊंतबराजा नेब्राह्मणकेआगे वहवृत्तान्तकहसुनाया ब्राह्मणनेसु-नतेहीअति कोपकर राजासेकहा यहकौनसाव्यवहार है जोतुमनेमेरेबेटेकीबहू औरकोदी अच्छाजोतुमने चाहा सोकिया परअबमेराशापलो तब राजाबोलाकि देवता तुमक्रोधमतकरो जोतुमकहोसोमैं करूं ब्राह्मणबोलाअ-

च्छाजोमेरेशापसे डरकरमेराकहा करतेहो तौतूअपनीपु-
त्रीमेरेलड़के कोब्याहदे यहसुनराजाने एकज्योतिषीको
बुलाकर शुभलग्नमुहूर्त्तठहरा अपनीपुत्री उसब्राह्मणके
लड़केसेब्याहदी फिरयहवहांसे राजकन्याकोदानदहेज
समेतलेराजासेबिदाहो अपनेगांवमेंआया यहखबरसुन
वहमनस्वीब्राह्मणभी वहांआ उससे झगड़नेलगा किमे
रीस्त्रीमुझेदे शशीनाम ब्राह्मणबोला मैंदशपंचोंमें ब्याह
करलायाहूंयहस्त्रीमेरीहै उसनेकहा इसेतोमेरागर्भरहा तेरी
किसतरहसेयहस्त्रीहोगी औरआपसमें बिबादकरनेलगे
मूलदेवने इनदोनोंकोबहुत समझाया परन्तुकिसीने उ-
सकाकहानमाना इतनीकथाकहबैतालबोला ऐराजाबीर
बिक्रमादित्य कहो वहभार्या किसकीहुई राजानेकहावह
स्त्रीशशीब्राह्मणकीहुई बैतालबोला गर्भउस ब्राह्मणका
स्त्रीइसकी किसतरहहुई राजानेकहाकि उसब्राह्मण का
पेटरखवायाहुआ किसीकोमालूमनहुआ औरउसनेदश
पंचोंमेंबैठके ब्याहकिया इसलियेइसकीस्त्रीठहरी औरव
हलड़काभी इसीकीक्रियाकर्मकाअधिकारी होगा यह
बातसुनबैताल उसीरूखमेंजालटका फिरराजागयाऔर
बैतालकोबांध कांधेपररखलेचला ॥ १४ ॥

पन्द्रहवीं कहानी ॥

बैतालबोला ऐराजाहिमाचल नाम एकपर्वतहै तहां
गन्धर्बोंका नगरहै औरवहांकाराज्य जीमूतकेतु करताथा
एकसमयउसने पुत्रकेहेतुकल्पवृक्षकीबहुतसीपूजाकी तब
कल्पवृक्ष प्रसन्नहोबोला ऐराजातेरीसेवादेखमें संतुष्ट

हुआजोतूचाहै सोबरमांग राजानेकहाकि एकपुत्रमुझेदो जोमेराराज औरनामरहे उसनेकहा ऐसाहीहोगा कितने दिनोंकेबादराजाकेबेटाहुआ उसेबड़ीखुशीहुई औरबहुत सापुण्यकर ब्राह्मणोंकोबुला उसकानामकरणकिया ब्राह्मणोंनेउसकानाम जीमूतबाहनधरा जबवहबारहबर्षका हुआ तबउसकेपितानेबड़ीधूमसे उसकाव्याहकिया जीमूतबाहन शिवकीपूजा करनेलगा औरशास्त्रसब पढ़के बड़ाहीज्ञानी ध्यानीसाहसी शूरबीरधर्मात्मा पण्डितहुआ उससमय उसकीबराबर कोईनथा औरजितने उसकेरा जमेंलोगथे वेसबअपने २ धर्ममेंसावधानथे जबवहजवा नहुआतोउसनेभी कल्पवृक्षकी बहुतसेवाकी तबकल्पवृक्षनेप्रसन्नहो उससेकहा जिसबातकी तुझे इच्छाहोसो मांग मैंतुझेदूं जीमूतबाहनबोला जोतुममुझसे प्रसन्नहु येहोतो मेरीसबप्रजाका दरिद्रदूरकरो औरजितनेलोग मेरेराज्यमेंहैं सबमालदौलतसे बराबरहोजावें तबकल्पवृक्षनेबरदिया तोसबलोगोंकेपास इतनाधनहोगया कि कोईकिसीकाहुक्म नमानताथा औरकोईकिसीका काम नकरता जबउसराजाके लोग ऐसेहोगये तबजोभाईबंधु उसराजाकेथे वेआपसमेंबिचार करनेलगे किबापबेटेतो दोनोंधर्मकेबशहुये औरलोग इनकाहुक्मनहींमानते इससेउत्तमयहहै किइनदोनोंकोपकड़के क़ैदकीजिये और राज्यइनका छीनलीजिये निदानराजातो उन्हींकीतरफसेगाफिलथा औउन्होंनेआपसमें मनसूबाबांध फौजलेरा जाकामन्दिरजाघेरा जबवहखबरराजाकोपहुंचीतबराजा

ने अपनेबेटेसेकहाअबक्याकरें राजाकुमारबोलामहाराज आपयहांबिराजिये आपकेधर्मसेअभीजाकेमारेंलेताहूं राजानेकहा ऐपुत्रयहशरीरअनित्यहै और धनभीस्थिरनहीं है मनुष्यजन्मातोमृत्युभी उसकेसाथहीहै इससेअबराज छोड़धर्मकाकार्य्यकियाचाहिये ऐसेशरीरकेकारण औरइस राज्यकेवास्तेमहापापकरनाउचितनहीं क्योंकि राजायुधिष्ठिरभीमहाभारतकरके पीछेपछतायेथे यहसुनउसकेबेटेनेकहा अच्छाराजअपना गोतियोंकोदीजिये औरआप चलकेतपस्याकीजिये मैंयहबातठहराय भाईभतीजोंको बुलवाराजदेदोनोंबापबेटे मलयाचलपर्वतकेऊपरगयेऔर वहांजाकुटीबनारहनेलगे जीमूतबाहनसे औरएकऋषिकेबटेसेमित्रताहुई एकदिनउसपर्वतकेऊपरराजाका बेटा औरऋषिकापुत्र दोनोंसैरकेवास्तेगयेवहांभवानीकामंदिर दृष्टिआया उसमन्दिरमें एकराजकन्याबीनलियेहुये देवीकेआगेगारहीथी उसकन्याकी ओरजीमूतबाहनकीचार नजरेंहुईं औरदोनोंकीलगनलगगई परराजकन्यामन मारलाजकीमारीअपनेघरकोपधारी और इधरयहभीउस ऋषिकेबेटेकी शर्मकेमारेअपनेस्थानपरआया वहरातउन दोनोंकोबड़ीबेकलीसेकटी प्रभातकेहोतेहीउधरसे राजकन्यादेवीकेमन्दिरकोगईऔरइधरसेराजकुमारनेभीजाते देखा कि राजकन्याजातीहैं तबइसनेउसकीसखीसेपूछा यहकिसकीकन्याहैसखीनेकहायहमलयकेतुराजाकीपुत्री है मलयावतीइसकानामहै और अभीकुमारीहै यहकह फिरसखीनेइसराजपुत्रसेपूछा कहोसुन्दरपुरुषतुमकहांसे

आयेहो तुम्हाराक्यानामहै यहबोला विद्याधरोंकाराजा जीमूतकेतुनामहै तिसकामैंसुतहूं और जीमूतवाहनमेरा नामहै राज्यकेभङ्गहोनेसे पितापुत्रहमदोनों यहांआनके रहेहैं फिरसखीनेयहसुनकर सबबातेंराजकन्यासेकहीं यहसुन राजकन्याअपनेजीमेंबहुतदुःखपाय घरकोआई औररातकोचिन्ताकरकेसोरही परयहदशा उसकीदेख सखीने वहवृत्तान्त उसकीमाताकेआगेप्रकटकिया रानीने सुनकरराजाकेआगेवर्णनकिया औरकहामहाराज पुत्री आपकीबरयोग्यहुईहै इसकाबरक्योंनहींढूंढ़ते यहसुन केराजाने अपनेजीमेंचिन्ताकर उसीसमयमित्रावसुनाम अपनेपुत्रकोबुलाकरकहा बेटाअपनीबहनकाबरढूंढ़लाओ तबवहबोला किमहाराजगन्धर्वोंकाराजा जीमूतकेतुनाम तिसकापुत्रजीमूतबाहननाम राजछोड़पितापुत्रदोनोंसुना है कियहांआयेहैं यहसुनमलयकेतु राजानेकहा यहपुत्री जीमूतबाहनकोदूंगा इतनाकह बेटकोआज्ञादीकिपुत्र जी मूतबाहनराजकुमारको राजाकेपाससेजाकर बुलालाओ मित्रावसुराजाकाहुक्मपाकर उसीमकानपरगया और वहांजाकर उसकेपितासेकहा अपनेपुत्रकोहमारेसाथकर दो किहमारेपितानेकन्यादानदेनेकोबुलायाहै यहसुनके राजाजीमूतकेतुने अपनेबेटेकोसाथकरदिया और वहतब यहांआया मलयकेतुराजानेउसकागन्धर्वविवाहकरदिया जबइसकाब्याहहोचुका तबदुलहिनको औरमित्रावसुको अपनेस्थानपरलेकरआया फिरइनतीनोंनेराजाको दण्डव तूकी और राजानेभी उन्हेंअशीशदी वहदिनतोयोंहीं

बीता दूसरेदिनप्रातःकालको उठतेहीदोनोंराजकुमार मलयागिरिपर्वतपर फिरनेकोगये वहांजाकरजीमूतबाहन क्यादेखता है कि एकसपेदढेरऊंचासा है तबइसनेअपनेसाले सेपूछा भाईयहधौला २ ढेरकैसादृष्टिआताहै वहबोला पातालललोकसे करोंडों नागकुमारयहां आतेहैंतिन्हें गरुड़आनके खाताहैयहउन्हींकेहाड़ोंकाढेरहै यहसुनकेजीमूतबाहननेसालेसेकहा मित्रतुमघरजाकेभोजनकरोक्योंकि मैंइससमयअपनीनित्यपूजाकरताहूं मेरेपूजाकरनेका अबसमयहुआहैयहसुनकेवहतोगया और जीमूतबाहनआगेकोज्योंबढ़ा त्योंरोनेकीआवाजआनेलगीउसीआवाजकीयुनिपरचलाचलावहांजोपहुंचातोक्या देखताहैकिएकबुढ़िया दुःखसेव्याकुलहोरोतीहै उसकेपासजापूछा हेमातातूकिसकारणरोतीहै तववहबोलीशंखचूड़नामनागजोमेराबेटाहै तिसकीआजबारीहै उसेगरुड़आखावेगा इसदुःखसेमैंरोतीहूं इसनेकहाहेमाता मतरोतेरेपुत्रकेबदले मैं अपनाप्राणदूंगा बुढ़ियाबोलीबेटा ऐसामतकीजियेतुही मेराशंखचूड़है यहकहतीथी किशंखचूड़भीआनपहुंचा औरउसनेसुनकेकहा ऐमहाराज मुझसेदरिद्रीबहुतसपैदाहोतेहैं औरमरतेहैंपरआपसे धर्मात्मादयावन्तसंसारमेंघड़ीघड़ी पैदानहींहोते इससेआपमेरेपलटेअपनाजीनदीजिये क्योंकिआपकेजीतेरहनेसे लाखों आदमियोंकाउपकारहोगा औरमेराजीनामरनादोनोंबराबरहैंतबजीमूतबाहनबोलाकियहसतपुरुषोंका धर्मनहींहै जोमुहसेकहकरनकरैं तूजहांसेआयाहै वहींकोजा यह

सुनशंखचूड़तो देवीकेदर्शनकोगया और आकाशसेगरुड़ उतरा इतनेमेंराजकुमारदेखताक्याहै किपांवतोउसकेचा र२बांसबराबरहैंऔरताड़सीलम्बीचोंचहै पहाड़केसमान पेटफाटककेमानिन्दआंखेंऔरघटासेबार एकाएकीचोंचप सारराजपुत्रपरदौड़ा पहलेराजपुत्रनेअपनेतईंबचाया पर दूसरीबारवहचोंचमेंरख इसकोलेउड़ा औरचक्करमारने लगा इतनेमेंएकबाजूबन्द कि उसकेनगपर राजाकानाम खुदाहुआथावहखुलकरलोहूभराराजकन्याकेसन्मुखगि- रावहउसकोदेखकरमूर्च्छाखागिरपड़ीजबएकघड़ीकेबाद चेतीतोउसने सबवृत्तान्तअपने मातापिताकोकहलाभेजा बेयहबिपत्तिसुनकरआये औरगहनारुधिरभरादेख रोये औरतीनोंआदमीढूंढ़नेकोनिकले कि रस्तेमेंइन्हें शंखचूड़ भीमिलाऔरउनसे बढ़करअकेलावहांगयाजहां राजकु- मारकोदेखाथाऔरपुकार२कहनेलगाऐगरुड़छोड़दे२यह तेराभक्ष्यनहीं शंखचूड़मेराना महै मैंतेराभक्ष्यहूं यहसुन करगरुड़घबड़ाकरगिरा औरअपनेजीमेंशोचा किब्राह्मण याक्षत्रीमैंनेखायायहक्याकिया फिरइसराजपुत्रसेकहने लगाऐपुरुषसच्चकह किसलियेअपनाजीदेताहैराजकुमा- रबोलाऐगरुड़वृक्षछायाकरतेहैं औरोंकेऊपरऔरआपधूप मेंबैठफूलतेफलतेहैंपरायेवास्तेअच्छेपुरुषोंकाऔरवृक्षोंका यहीधर्महै जोयहदेहऔरोंकेकामनआवेतोइसशरीरसेक्या प्रयोजनहै दृष्टान्तप्रसिद्धहै कि ज्यों२चन्दनकोघिसते हैं त्यों२दूनी२सुगन्धदेताहै औरज्यों२छीलर२काटर२ टुकड़े करतेहैं त्यों२ऊखअधिकअधिकस्वाददेतीहै ज्यों२कंचन

को जलातेहैं त्यों२ अतिसुन्दर होताजाताहै उत्तमलोग जोहैंसोप्राणजानेसेभी अपनास्वभावनहीं छोड़ते उन्हें किसीने भलाकहातोक्या औरबुराकहातोक्या जोदोल तरहीतोक्याजोनरहीतो क्याअभीमरेतोक्या औरमुद्दत केबादमरेतोक्या जोमनुष्यन्यायकीराहसेचलतेहैं कुछहो औरराहपरपावँनहींरखतेतोक्याहुआ जोमोटेहुयेयादुबले निदानजिसके शरीरसेउपकारनहो उसकाजीनानिष्फल हैऔरबिरानेअर्थजिसकाजीवहै उन्हींकाजीनासुफलहैयों तोकुत्ताकौवाभीअपनातनपालताहै जोब्राह्मणगौमित्रस्त्री केवास्तेअथवा औरोंकेवास्तेजीदेते हैं सोनिश्चयसदाबै-कुंठबासकरतेहैं गरुड़बोलाजगमेंसबअपनेप्राणकीरक्षाक रतेहैंऔरअपनाजीदेदूसरेकेजीकेबचानेवाले संसारमेंबिर लेहीहोतेहैंयहकहगरुड़बोलाबरमांगमैंतेरेसाहसपरसंतु-ष्टहुआयहसुनकेजीमूतबाहनने कहाहेदेवजोतुममेरेऊपर प्रसन्नहुयेहो तोअबनागोंकोनखाओ औरजोखायेहैंउन्हें जिलादोयहसुनगरुड़नेपतालसेअमृतलाकर सर्पोंकेहाड़ों परछिड़काकिफिरवेजीउठे और इससेकहा ऐजीमूतबाहन मेरेप्रसादसेतेरा गयाहुआराज फिरतुझेमिलैगा यहबरदे गरुड़अपनेस्थानपरगया और शंखचूड़भी अपनेधामगया और जीमूतबाहनभी वहांसेचला कि राहमें उसकाससुर और सासु और स्त्री मिलीं फिरउनसमेत अपनेबापकेपा-सआया जबयह अहवालसुना तो उसकेचचा और चचेरे भाई और सारेकुटुम्बकेलोगमिलनेकोआये और पांओंपड़ इन्हेंलेजा राजपरबिठाया इतनीकथाकहबैतालनेपूछा ऐ

राजाइनमेंसे सत किसकाअधिकहुआ राजाबीरबिक्रमादित्यबोला शंखचूड़का बैतालनेकहा किसतरह राजानेकहा गयाहुआशंखचूड़ फिर जीदेनेकोआया और गरुड़के खानेसे इसेबचाया बैतालबोला कि जिसने परायेलियेअपनीजानदीउसकासतक्योंन अधिकहुआ राजानेकहा जीमूतबाहन जातकाक्षत्रीहै उसेजीदेनेका अभ्यास होरहाहै इससेउसेजानदेना कुछकठिन न मालूमदिया यहसुन बैताल फिरउसीपेड़में जालटका और राजा वहांजाउसेबाँध कांधेपररखलेचला १५॥

सोलहवीं कहानी॥

बैतालबोला ऐराजा बीरबिक्रमादित्य चन्द्रशेखरनामएकनगरहै वहांकारहनेवाला रत्नदत्तसेठथा उसकेएक बेटीथीउसका नामउन्मादिनीथाजबवहनौयौबनाहुईतब उसकेबापने वहांकेराजासे जाकरकहा महाराजमेरेघरमें एककन्याहै जोआपकोउसकी चाहहोतो लीजिये नहींतो मैंऔरकिसीकोदूं यहसुन राजानेदोतीन प्राचीनदासोंको बुलाकरकहा इससेठकीपुत्रीके लक्षणदेखआओ वेराजाकीआज्ञासे सेठकेघरआय औरउसलड़कीकारूपदेख सभीमोहितहुये रूपऐसाथा मानोअंधेरे घरकाउजालाहै आंखेंमृगकीसी, चोटीनागिनसी, भौंहैंकमानसी, नाक इकरकीसी,दांतकी बत्तीसीमोतियों कीसीलड़ी, ओठकुंदुरूकेमानिन्द, गलाकपोतकासाकमरचीतेकीसी हाथपांव कोमलकमलसे चन्द्रमुखीचम्पकबदनी हंसगवनीकोकिलबयनीजिसके रूपकोदेख इंद्रकीअप्सराभीलजाई

इसप्रकारकीसुन्दरीसबसुलक्षणभरीदेखोउन्होंने आपस मेंबिचारकिया कि ऐसीजोनारी राजाकेघर में जायगीतो राजाइसकेआधीन होवैगा और राजपाटकी चिन्ताकुछन करेगा इससेभलायहहै कि राजासेकहिये वहकुलक्षणी हैआपकेयोग्यनहीं यहबिचार करवहांसेराजाके पास आ करउन्होंनेयह निवेदनकिया महाराजउसकन्याको हम नेदेखावहआपके योग्यनहींहै यहसुनके राजानेसेठसेक हामैंब्याहनकरूंगा फिरसेठने अपनेघरआ कयाकामकि याकि बलभद्रजो राजाकासेनापतिथा उसके साथअपनी पुत्रीकाबिवाहकरदिया वह उसकेघरमें रहनेलगी एक दिनकाहाल है किराजाकीसवारी उसराहसे निकली और वहभीउससमय शृंगारकिये अपनेकोठे परखड़ी थी संयोगबश राजाकी और उसकी चारनज़रेंहुईं राजा अपनेमनमें कहनेलगा यहदेवकन्याहै या अप्सराहै या नरकन्याहै निदान उसकारूपदेख मोहितहोगया और व-हांसेनिपटबेकरारहो अपनेमंदिरकोआया तो राजाकामुंह देख द्वारपालबोला महाराज आपकेशरीरमें क्या व्यथाहै राजानेकहा आजमैंनेआतेहुयेबाटमें एककोठेपरसुन्दरस्त्री देखीहै मैंनहींजानताहूं कि वह देवकन्याहै या परीहै अथ-वा नरकन्याहै कि उसकेरूपने एकाएक मेरामनमोहिलि-या इससेबेकलहूं यहसुनके दरवाननेबिनयकी महाराज उसीसेठकी लड़कीहै जो आपकासेनापति बलभद्रहै वह उसे ब्याहलायाहै राजानेकहा मैंने जिनलोगोंको लक्षण देखने भेजाथा उन्होंने हमसे छलकिया यहकह राजाने

चोपदारकोआज्ञादी कि उन्हें जल्दीलेआवो राजाकी यह आज्ञा पा चोपदार उन्हेंबुलालाया जबवे राजाके सन्मुख आये तो राजानेकहा मैंनेजिसलिये तुम्हेंभेजाथा और जो मेरीइच्छाथी सोतुमनेनकी और अपनेजीसे एकबातझूठी बनाकर मुझेउत्तरदिया और आजमैंने अपनीआंखोंसे उसे देखा वहऐसीसुन्दरनारी सबगुणपूरीहै कि इससमय उससी मिलनीकठिनहै यहसुनके उन्होंनेकहा महाराजजो आपकहतेहैंसो सचहै पर हमनेउसे कुलक्षणी जिसवास्ते हुजूरमें बिनयकी सो वहमुद्दा आपसुनिये आपसमें हमने यहबिचारा कि ऐसीसुंदरस्त्री जो महाराजके घरमें जायगीतो महाराज देखतेही उसके बशहोंगे और राजकार्य्य सबछोड़देंगेतो राज्यभंगहोगा इसभयसेहमने ऐसाबनाकरकहाथा यहसुनकरराजाने उन्हेंतोकहा तुम सचकहते हो पर उसकीयादमें राजाको निपटबेचैनीथी और सबलोगोंपर राजाकीबेकरारी प्रगटथी इतनेमें बलभद्रभी आपहुंचा और उसनेहाथजोड़ राजाकेसामनेखड़ेहोकर बिनय कीहेपृथ्वीनाथ मैंआपकादासहूं यहआपकीदासीहै और उसकेहेत आपइतनाकष्टपावें इससे महाराजआप आज्ञा दीजियेकि वहहाज़िरहो यहबातसुन राजा बहुतक्रोधकरकेबोला बिरानीस्त्रीके पासजानाबड़ाअधर्महै यहबातक्या तूनेकही क्यामैंअधर्मीहूं जो अधर्मकरूं बिरानीस्त्री माताकेसमानहै और बिरानाधन माटीकेबराबरहै सुनोभाई जैसाअपनाजी आदमीसमझे वैसाहीसबका जीसमझे फिर बलभद्रबोला वहमेरीदासीहै जबमैंने आपकोदी फिर बि-

रानीस्त्री क्योंकर हुई राजाने कहा जिसकामके करने से संसारमें कलंकलग सोकाममैंनकरूंगा फिर सेनापतिने बिनयकिया महाराजउसे मैंघरसेनिकाल औरजगहरख बेश्याकर आपकेपासलाऊंगा तब राजानेकहा जो तूसती नारीको बेश्याकरेगातोमैंतुझे बड़ादण्डदूंगा यहकहराजा उसकीयादमेंचिन्ताकरके दशदिनमेंमरगयाफिरबलभद्र सेनापतिने अपनेगुरूसे जाकरपूछा मेरास्वामी उन्मादिनीकेकारण मुआ अबमुझे क्याकरना उचितहै सो आज्ञा कीजिये उसनेकहा सेवककाधर्मयहहै कि स्वामीके पीछे अपनाजीदे यहसुनके बख़शी वहांगया जहांराजाके तईं जलानेको लेगयेथे जितनीबेरमें राजाकीचिता तैयार हुई उसनेभी स्नानपूजासे छुट्टीकी और जब चितामें आगदी तब यहभी चिताके पासगया और सूर्यकेसामनेहाथजोड़कर कहनेलगा ऐसूर्यदेवता मैं मनबचकर्मकरके यहीकामनामांगताहूं कि जन्म२ इसीस्वामीकोपाऊं और तेरा गुणगाऊंइतनाकह दण्डवतकर आगमेंकूदपड़ा यहख़बर सुन उन्मादिनी अपनेगुरूके पासगई और उससेसब हालकहकेपूछा महाराज स्त्रीकाधर्मक्याहै उसनेकहा मातापिताने जिसको अपनीकन्यादी उसीकीसेवाकरनेसेवह कुलवंतीकहलातीहै औरधर्मशास्त्रमें ऐसालिखा हैकिजोनारी अपनेस्वामीके जीते तपब्रतकरतीहै वहअपनेस्वामीकी अवस्थाकम करतीहै औरअंतकाल मेंनरकमेंपड़तीहै औरउत्तम यहहै कि कैसाहीस्वामी हीनहो उसीकीसेवा करनेसेइसकी मुक्तिहोतीहै औरजोनारी स्म-

शानमेंसती होनेकीकामना करजितनेपावँ ज़मीनपर रख तीहैउतने अस्वमेध यज्ञकरने काफ़लहोताहै इसमें कुछ सन्देहनहीं औरसती होनेकेसमान नारीकाकोईधर्मनहीं यहसुन वहदण्डवतकरअपनेघरकोआई औरस्नानध्यान करबहुतसोदान ब्राह्मणोंकोदे चितापासजा एकपरिक्रमा करबोली किहेनाथमैंजन्म २ दासीतेरीहूं इतनाकहयह भीआगमेंजाबैठी औरजलगई इतनीकथाकह बैतालबो लाऐराजा इनतीनोंमेंकिसका सतअधिकहुआ राजाबीर बिक्रमादित्यनेकहा उसराजाका बैतालनेकहा किसतर ह राजाबोलासेनापतिकीदीहुई स्त्रीकोक्रोड़ा औरउसीके वास्तेजानदी परधर्मरक्खा स्वामीकेलिये सेवककोजीदे-नाउचितहै औरपतिकेलिये स्त्रीकोसतीहोनाउचितहै इस कारणराजाकासत अधिकहुआ बैतालइतनासुन उसीतर वरमेंजालटका राजाभीपीछे२जाफिर उसेबांधकांधेपरर-खलेचला १६॥ सचहवीं कहानी॥

बैतालबोलाऐराजाउज्जैननगरीकामहासेननामराजा थाऔरवहांका बासीदेवशर्मा ब्राह्मणथा जिसकेबेटेका नाम गुणाकरथा वहज्वारीहुआ यहांतककिजोकुछ ब्राह्मण काधनथाजो जुएमेंहारदिया तबसारकुनबेके लोगोंनेगु-णाकरको घरसेनिकालदिया औरउससेकुछ बन न आया लाचारहो वहांसेचलातो कितनेएकदिनोंमें एकशहरमेंआ-यावहांदेखताक्याहै कि एकयोगी धूनीलगायेहुये बैठाहै उसेदण्डवतकर यहभीवहां बैठगया योगीनेइससेपूछातू कुछखायगा इसनेकहा महाराजदोगे तो क्योंन खाऊंगा

योगीनेएकआदमीकी खोपड़ीमेंखानाभरकेइसे लादिया इसनेदेखकर कहाइसकपालका अन्नमैंनखाऊंगा जबइन्ने भोजननकिया तबयोगीनेऐसामंत्रपढ़ा कि एकयक्षिणी हाथजोड़आनके प्रकटहुई औरबोलीमहाराज जोआज्ञाहो सोकरूं योगीनेकहाइसब्राह्मणको इच्छाभोजनदेइतना सुनकेएकअच्छासा मन्दिरबना उसमेंसबसुखके सामान रखकेइसेयहां सेअपनेसाथ लेगईऔरएक चौकीपरबैठा भांतिभांतिकेव्यंजन औरपकवान थालभर २ उसकेसाम नेरक्खेउसने मनमन्ताजोभायासोखाया और इसकेबाद पानदानइसकेसम्मुख रखदियाऔर केशरचन्दनगुलाब मेंघिसकरउसके बदनमेंलगाया फिरअच्छे २ वस्त्रसुगंधों सेबसाकरपहना फूलोंकीमाला गलेमेंडालवहांसे पलँगप रजाबिठाया इतनेमेंसांझहुई औरयहभीअपनी तैयारीकर सेजपरजाबैठीऔरउसब्राह्मणने सारीरैनसुखचैनसेकाटी जबभोरहुआ तोवहयक्षिणी अपनेस्थानपरगई तबइसने योगीसेआनकरकहा कि स्वामीवहतो चलीगई अबमैंक्या करूंयोगीबोलावह बिद्याकेबल से आईथी जिसेबिद्याआ तीहैउसकेपासरहतीहै इसनेकहा महाराजवहबिद्यामुझे दोतोमैंसाधूं तबयोगीने एकमंत्रउसकोदिया औरकहाकि इसमंत्रको चालीसदिन आधीरात केसमय जलमेंबैठएक चित्तहोकेसाधइसीतरहसे वह साधनेको जायाकरता और अनेक २ तरहकेभयदृष्टिआते परयहकिसीसे न डरता जब कि वहमुद्दतहो चुकी तो इसनेयोगीसेआकरकहा कि महाराजजितनेदिन आपनेकहेथे मैंसाधआया उसनेकहा

इतनेदिनअबआगमें बैठकरसाधइसनेकहा महाराजएक बारअपनेकुटुम्बसेमिलआऊंफिरआकेसाधूंगा यहयोगीसे कहबिदाहोअपनेघरकोगया और कुनबेकेलोगोंनेइसेजो देखा तोगलेलगालगारोनेलगे और इसकेबापनेकहा ऐ गुणाकर इतनेदिनोंतूकहांथा और किसवास्ते घरको बिसारा ऐ पुत्रऐसेकहाहै किजोपतिव्रतास्त्रीको छोड़केजुदा रहताहै और युवास्त्रीकोपीठदेताहै अथवाजोजिसेचाहता है वहउसेनहींचाहता तोचांडालकेसमानहोताहै औरऐसे कहाहै कि गृहस्थीधर्मकेबराबर कोईधर्मनहीं और घर वालीस्त्रीकी बराबरकोई संसारमें सुखदेनेवाली स्त्रीनहीं और जोमातापिताकीनिन्दाकरत है सोअधमनरहै और उसकीगतिमुक्तिकभीनहींहोती ऐसाशास्त्रमेंकहाहै तब गुणाकरबोला कि यहशरीररक्त और मांसका बनाहुआहै सोकीड़ोंकीखानिहै और स्वभावइसकायहहै कि एकदिन इसकीखबरनलीजै तोदुर्गन्धआतीहै जोऐसेशरीरसेप्रीति करतेहैं सोमूर्खहैं और जोइससेहितनहींकरते वेपण्डित हैं और इसशरीरका यहीधर्महै कि बारबारजन्मलेताहै औरमरताहै ऐसेशरीरकाक्याभरोसाकीजिये इसेबहुतेरा पवित्रकीजियेपरयहपवित्रनहींहोता जैसेमलकाभराघड़ा ऊपरकेधोनेसे पाकनहीं होता औ कोयलेकोकोई बहुतेरा धोवेपरवहधौलानहींहोता और जिसशरीरमेंमलकासोत सदाबहाकरे वहकिसतरहसेशुद्धहोसक्ताहै इतनाकहफिर बोला कि किसकी माता औरबाप किसकी जोरूकिसका भाईइससंसारकीयहीरीतिहै कि कितनेआतेहैं और कितने

जातेहैं जो यज्ञ औरहोमकेकरनेवालेहैं सो अग्निकोईश्वर जानतेहैं और जो बुद्धिहीनहैं सो प्रतिमाकर भगवानको मानतेहैं और योगीलोग अपनेघटमेंही हरिको जानते हैं ऐसे गृहस्थीधर्मको मैंनकरूंगा और योगाभ्यास करूंगा इतनाकहउसनेघरसेबिदाले योगीकेपासअग्निमेंबैठमन्त्र साधापरयक्षिणी न आई तबयोगीकेपासगया और योगी ने उससेकहा विद्यातुझे न आई फिर उसनेकहा महाराजहां न आई इतनीकथाकह बैतालबोला कि ऐ राजा कहोकिसकारणउसेविद्या न आई राजाबोला वहसाधक दुचित्ताहुआइसलिये न आई और ऐसेकहाहै कि एकचित्त होनेसेमन्त्रसिद्धहोताहैऔर दुचित्ताहोनेसेनहींहोता और ऐसेभीकहाहै जोदानकेहीनहैं उनकीकीर्त्ति नहींहोती और जो सतसेहीनहैं उन्हैंलाजनहीं जोन्यायसेहीनहैं तिन्हैं लक्ष्मीनहींमिलती और जोध्यानसेहीनहैं तिन्हैंभगवान नहींमिलता यहसुनबैतालनेकहा जोसाधकमन्त्रसिद्ध करनेकेलियेआगमेंबैठा वहकिसतरहदुचित्ताहुआ राजाने कहामन्त्रसाधनेकेसमय जबवह अपनेकुटुम्बसे मिलने गयाउससमययोगीने क्रोधकर अपनेमनमेंकहा कि ऐसे दुचित्तसाधककोमैंनेविद्याक्योंसिखाई इसलियेउसेविद्या न आई और ऐसेकहाहै कि मनुष्यकितनाहीपराक्रमकरे परकर्मउसकेसाथरहताहै और कितनाहीकाम अपनीबुद्धि सेकरेपरकर्मकालिखाहीमिलताहै यहसुनकरबैतालफिर उसीवृक्षपरजालटका और राजाभीउसकेपीछे जाउसे बांधकांधेपररखलेचला १७॥

अठारहवीं कहानी॥

बैतालबोला ऐराजाकूबलपुरनामएकनगरहै वहांके राजाकानाम सुदक्षीथा और उसनगरमें धनाक्षनामएक सेठभीरहताथा उसकीपुत्रीकानामधनवतीथा छोटीउम-रमेंउसकाब्याह एकगौरीदत्त नामबनियेसे करदिया कि तनेदिनोंकेपीछे एकलड़की उसकेहुई नामउसकामोहनी रक्खाजबवह कईवर्षकीहुई तबबापउसकामरगया और उसबनियेके भाईबन्दोंने उसकासर्बस्वछीनलिया वह लाचारहोअपनी बेटीकाहाथपकड़ अंधेरीरातके समयउ सघरसेनिकल अपनेमातापिताके घरचली थोड़ीदूरजा कर्राहभूल एकमरघटमेंजानिकली वहां एकचोरशूली परटँगाहुआथा अचानकइसका पांवउसके पांवमेंलगाव-हबोलाइससमय मुझेकिन्नेदुखदिया तबयहबोली मैंने जानकरतुझे दुःखनहींदिया मेराअपराध क्षमाकरउसने कहादुख और सुख कोईकिसीकोनहींदेता जैसाविधाता उसकेकर्म्ममें लिखदेताहै वैसाहीहोताहै और जोमनुष्य कहतेहैंकियह कामहमनेकिया सोबुद्धिहीनहैं क्योंकिम-नुष्यकर्मकेतागेमें बंधेहुये हैं वहजहां२ चाहताहैतहां २ खेंचलेजाताहै बिधाताकीबात कुछजानीनहींजाती क्यों किमनुष्यअपने मनमेंकुछबिचारतेहैं औरवहकुछऔरकर देताहैतब धनवतीबोली ऐपुरुषतूकौनहै उसनेकहामैंचो-रहूंतीसरादिन शूलीपरमुझकोहुआहै और जाननहींनि-कलतीवहबोली किसकारण उसनेकहाबिना ब्याहहूंय दितूअपनीकन्या मुझेब्याहदेतो करोड़अशरफी तुझेदूंवि

दितहैंकिपापका मूललोभऔर व्याधिकामूलरस औरदु-
खकामूलनेहहै जोइनतीनों को छोड़े सोसुखसेरहे परये
हरएकसेछूटनहींसक्ते अन्तकाल लालचकेमारेधनवतीने
कन्यादेनेकीइच्छाकी औरपूछाकियह चाहतीहूंकितेरेपुत्र
होपरकिसतरहसेहोगा उसनेकहा कि यहजिससमयमें
जवानहोगी उससमयएकसुन्दरब्राह्मणको बुलाकरपांच
सौमोहर दे उसकेपासरखियो इसतरहपरइसकेबेटाहो-
गायहसुनके धनवतीनेलड़कीकोशूलीके गिर्दचारफेरेकर
व्याह करदिया तबचोरनेउस्से कहाकिपूर्बदिशा इन्दारे
कुयेंके पासएकबड़कावृक्षहैउसके नीचेवेअशरफियांगड़ी
हुईहैं तू जाकेलेलेयहकहके उसकाप्राण निकलगयायह
उधरकोचली औरवहांपहुंचकर उसमेंसेथोड़ीअशरफियां
ले अपनेमातापिताके घरआई उनसेयहवृत्तान्तकह उन
को अपनेसाथलेस्वामीकेदेशमेंलाई फिरएकबड़ीसी हबे-
लीबनाउसमेंरहनेलगी औरवह लड़कीदिन२बढ़नेलगी
जब यौवनवतीहुई तब एकदिन सखीकोसाथले कोठेपर
खड़ीबाटनिहाररहीथी कि इतनेमेंएकजवानब्राह्मणउस
राहमें आनिकला और यहउसे देख कामकेबश होकर
सखीसेबोली कि ऐआली इसपुरुष को मेरीमाताकेपास
लेजा यहसुन वहब्राह्मणको उसकीमाताकेपास लेगई
वह उसेदेखकरबोली मेरीबेटीजवानहै जोतू इसकेपा-
सरहेगातोंमैं पुत्रकेनिमित्तपांचसौअशरफी तुझेदूंगी यह
सुनकेउसनेकहा मैंरहूंगायेबातें करतेथेकि इतनेमेंसांझ
हुईतोइच्छाभोजनदिया उसनेब्यालूकिया दृष्टान्तप्रसि

ह्वहै कि भोगआठ प्रकारकाहै एकसुगन्ध दूसरा बनिता तीसरेबस्त्र चौथेगीत पांचवेंपान छठेभोजन सातवेंशय्या आठवेंआभूषण ये सब वहांमौजूद थे निदान जब पहर-रातआई तबउसने रंगमहलमें जा उसकेसाथ सारीरैन आनन्दसेकाटी जब भोरहुआ तबवह अपनेघरगया और यहउठके अपनी सखियोंकेपासआई तब उसमेंसे एकनेपूछाकिकहो रातको प्रीतमकेसाथ क्या२ आनन्द कियेउसनेकहाजिससमयकिमैं उसकेपासजाबैठोमेरेजी मेंएकधड़कामालूमहुआथा जबकिउसनेमुसकराके मेरा हाथपकड़लियामैंउसकेबशहोगई औरमुझेकुछखबरनरहीकिक्याहुआ औरऐसेकहाहैकि एकनामीदूसरेशूरमा तीसरेचतुरचौथेसरदार पांचवेंसखीछठेगुणवान सातवें स्त्रीरक्षकहोऐसेपुरुषको नारीइसजन्ममेंतोक्याउसजन्म मेंभीनहींभूलती लाभयहहुआकिउसीरात इसेगर्भरहा जबकिदिनपूरेहुये एकपुत्रपैदाहुआछठीकीरातकोउसकी मातानेसपनेमेंदेखाकि एकयोगीजिसके शिरपरजटामाथेपरचांदउज्ज्वलभभूतमले श्वेतजनेऊपहने श्वेतकमल केआसनपरबैठा सपेदसांपोंकीमालापहिने मुंडमालगले मेंडालेएकहाथमेंखप्पर दूसरेमेंत्रिशूललियेहुये महाभयावनीसूरतबनाये उसकेआगेआकहनेलगाकि कलआधीरातकेसमयएकपिटारेमें हज़ारमोहरकातोड़ा औरइस लड़केको बन्दकरराजाके द्वारपररखआ यहदेखतेही उसकीआंख खुलगई और सबेराहुये अपनीमाकेआगे इसने सबवृत्तान्तकहा यहसुनके दूसरेदिनउसकी माता

उसीतरहपिटारेमें उसबालककोबन्दकर राजाकेद्वारपर रखआई इधरराजानेरातकोस्वप्नदेखाकि दशभुजापांच शिरहरएकशिरमेंतीनतीनआंखें औरहरएकशिरपर एक एकचांदबड़ेबड़े त्रिशूलहाथमेंलिये अतिडरावनीसूरत इसकेसाम्नेआनकेबोला किऐराजातेरेद्वारपर एकपिटारा रक्खाहै उसमेंजोलड़काहै उसेतूलेआ वहीतेराराजरक्खे गायहसुनतेहीराजाकी आंखखुलगई तबरानीसेसबअह-वालकहाफिरवहांसे उठदरवाजेपरआदेखा किपिटारा धराहैज्योंहांपिटारेको खोलकरदेखा तोउसमेंएकबालक औरहज़ारमोहरका तोड़ाधराहै उसबालकको आपउठा लियाऔरद्वारपालसेकहा किइसतोड़ेको उठाला फिरम-हलमें जाबालककोरानीकीगोदमेंदिया इतनेमेंप्रभातहुआ तोराजानेबाहरआ पण्डितोंसे औरज्योतिषियोंसे बुलाके पूछाकिकहोइसबालकमेंराज्यलक्षणक्या २ हैं तबउनप ण्डितोंमेंसे एकसामुद्रिकजाननेवालाब्राह्मणबोला महा-राजइसबालकमेंतीनलक्षणतोप्रत्यक्षदीखतेहैं एकतोबड़ी छातीदूसरेऊंचाललाट तीसरेबड़ाचिहरा सिवायइसकेम हाराजबत्तीसलक्षणपुरुषकेजोकहेहैं सोसबइसमेंहैं इस्से निःसंदेहरहिये यहराज्यकरेगा यहसुनराजाने प्रसन्नहो मोतियोंकाहारअपनेगलेसेउतार उसब्राह्मणकोदिया और सबब्राह्मणोंको बहुतसादानदेहुक्मकिया इसलड़केका नामरक्खो तबपण्डितोंनेकहा महाराजआप गांठजोड़कर बैठिये औरमहारानीगोदमेंबालकलेबैठेंऔरसबमांगलिक लोगोंकोबुलाके मंगलाचारकरवाओ तबहमशास्त्रकीरीति

सेनामकरणकरें यहसुनराजानेदीवानकोबुला आज्ञादीकि जोयेकहैंसोकरो दीवाननेबालककेहोनेकी उसीसमयनगर में डौंड़ीखुशीकीफिरवादी यहसुनकेसब मंगलामुखीआये औरघर२से बधाईआनेलगी राजाकेमंदिरमें आनन्दकेबा जनबाजनेलगे और मंगलाचारहोनेलगे फिर राजारानी गोदमें पुत्रकोलेचौकपर आबैठे और ब्राह्मणवेदपढ़नेलगे उनब्राह्मणोमेंसेएकज्योतिषीनेशुभघड़ीलग्नमुहूर्तबिचार उसबालककानाम हरदत्तरक्खा फिरवह दिनदिनबढ़ने लगा निदानवहनवबर्षकीउमरमें छओंशास्त्र चौदहोंविद्या पढ़कर पण्डितहुआ इसमेंभगवानका चाहाहोंहुआ कि उसकेमाता पितामरगये वहराजगद्दी परबैठा और धर्म राजकरनेलगा कईएकवर्षके पीछेएकदिन वहराजाअपने मनमेंचिन्ता करनेलगा किमैंने मावापके यहांजन्मलेकेउ नकेनिमित्तक्याकिया कहावतहै किजोदयावन्त होतेहैंवे सबपरदयाकरतेहैं वेईज्ञानीहैंऔर उन्हींको बैकुंठहोताहै औरजिनका मनशुद्धनहीं तिनकादान पूजातपतीर्थकरना शास्त्रसुननासबवृथाहै औरजो श्रद्धाहीनडिम्भसमेतश्राद्ध करतेहैं तिनकानिष्फलहोताहै औरपितृउनके निराशजा तेहैंयहबात राजानेशोचसमझकर बिचारा किअबपितृक र्मकियाचाहिये फिरराजाहरदत्त गयामेंगया औरअपने पितरोंकेनामले फल्गूनदीकेकिनारे पिण्डदान देनेलगा तोउसनदीमेंसे तीनोंकेहाथनिकले यहदेख अपनेजीमें घबरायाकिमैं किसकेहाथमें पिण्डदूं और किसकेहाथमें नदूं इतनीकथाकहबैतालबोला किऐराजा बिक्रमउनती

नोंमेंसेकिसे पिण्डदेनाउचितथा तबराजाने कहाचोरको फिरबैतालबोला किसकारण तबराजानेकहा उसमेंसे ब्राह्मणकाबीज तोमोललियागया औरराजाने हजारअ शरफीलेकेपाला इसवास्ते उनदोनोंको पिण्डकाअधिका रनहुआ इतनीबातसुनफिर बैतालउसी तरुवरपरजाल-टका औरराजाउसे वहांसेलेचला १८॥

उन्नीसवीं कहानी॥

बैतालबोला ऐराजाचित्रकूट नामएकनगरहै वहांका रूपदत्तनामराजा एकदिन अकेलासवार हो शिकारकोग यासोभूलाहुआ एकमहाबनमें जानिकला वहांजाकेदेख ताक्याहैकिएक बड़ासाताालाबहै उसमेंकमल फूलरहेहैं औरभांतिभांतिके पक्षीकलोलकररहेहैं तालाबके चारों ओरवृक्षोंकी घनीघनीछायामें ठंढी२हवा सुगन्धोंकेसाथ आरहीहैयहभी धूपगरमीकामाराहुआघोड़ेको एकवृक्षमें बांधजीनपोश बिछाकरबैठगया घड़ीएकबीतीथी किएक ऋषिकन्याअति सुन्दरीयौवनवती तहांपुष्पलेने कोआई उसेफूलतोड़तेहुयेदेख राजाअतिकामके बशहुआ जबव हफूलतोड़के अपनेस्थानकोचली तबराजाबोला कि यह तुम्हाराकैसा आचारहै कि हमतुम्हारे आश्रममेंअतिथि आयेऔरतुम हमारीसेवा नकरो यहसुनके वहफिरखड़ी हुईतबराजानेकहा कि ऐसे कहतेहैं कि उत्तमवर्णकेघर जोनीचवर्ण भी अतिथिआवेतो वहभीपूजनीयहै औरचो रहोयाचांडाल शत्रुहोयापितृघातकहो परजो वहभीअप नेघरआवैतोउसकीभीपूजाकरनीउचितहैक्योंकिअतिथि

सबकागुरूहै इसतरहसे जबराजानेकहा तबवहखड़ीहुई फिरतोदोनों आंखेंलड़ानेलगे इसमेंवहमुनिभी आपहुं-चाराजाने उसतपस्वीकोदेख नमस्कारकिया औरउसने आशीर्बाददिया किचिरंजीवरहो इतनाकह राजासेपूछा कि यहांकिसकारणआयेहो राजानेकहामहाराज शिकार खेलनेआयाहूं तपस्वीबोला किसलिये तूमहापापकरता हैऐसाकहाहै कि एकजनापापकरताहै और अनेकजनेउ-सकेपापकाफल भुगततेहैं राजानेकहा किमहाराज मुझप रकृपाकरके धर्मअधर्मका बिचारकहो तबवहमुनिबोला सुनियेमहाराजजो जीवतृणजलखा बनबासकरतेहैंतिन केमारनेसे बड़ाअद्धर्महोताहै औरपशुपक्षी मनुष्यकेप्रति पालकरनेका बड़ाधर्महै और ऐसाकहाहै कि जोभयमान करशरणआयेको निर्भयकरदेते हैं सोमहादानका फलपा तेहैंऔरऐसाकहाहै किक्षमाबराबर तपनहीं औरसंतोषस मानसुख मित्रतातुल्यधननहीं औरदयासमधर्म औरजो नर अपने धर्म में सावधान हैं और धन गुणबिद्या यश प्रभुता पाय अभिमान नहीं करते और जो अपनी स्त्रीसे संतुष्टहैं और सत्यबादीहैं सोअन्तकाल मुक्तिगति पातेहैं और जो जटाधारी बस्त्रहीन निरायुद्ध को मारतेहैं वेलो गअन्तसमय नरकभोगकरते हैं औरजोराजा प्रजाकेदुख दाइयोंको नहींदण्डदेता वहभीनरक भुगतताहै औरजो राजपत्नीया मित्रकीस्त्रीयाकन्या याआठनौ महीने कीग र्भिणीस्त्रीसे भोगकरतेहैं सोमहानरकमें पड़तेहैं ऐसाध र्मशास्त्रमेंकहाहै यहसुन राजानेकहा आजतक अनजान

सेजोपापकिया सोकिया फिरभगवाननेचाहा तोमैंनक-
रूंगाराजाके इसकहनेसेमुनिने प्रसन्नहोकेकहाकि जोतू
बरमांगेसोदूं मैंतुझसे बहुतसंतुष्ठहुआ तबराजानेकहाम-
हाराजजोतुम मुझपरतुष्टहुयेतो अपनीकन्या मुझेदोयह
सुनकेमुनिनेअपनी पुत्रीराजाको गन्धर्वबिवाह कीरीति
सेव्याहदी औरआपअपनेस्थानकोगया फिरराजऋषि
कन्यालेअपनेनगरकी तरफकोचला कि रास्तेमें अनुमान
आधीदूरके सूर्यास्तहुआ और चन्द्रमाउदयहुवा तबरा-
जाएकवृक्षघनासा देखउसके नीचेउतर घोड़ाउसकी ज
ड़सेबांधआप जीनपोशबिछा दोनोंसोरहे फिरदोपहररा
तकेसमय एकब्रह्मराक्षसने आराजाको जगाकरकहा है
राजामैंतेरीस्त्री कोखाऊंगा राजानेकहा ऐसामतकर जो
तूमांगेगा सोमैंदूंगा तबराक्षसनेकहाकि ऐराजाजोसात
बर्षकेब्राह्मणके लड़केकाशिर काटकरअपने हाथसे मुझे
देतोमैंइसे न खाऊं राजानेकहा ऐसेहीमैंकरूंगा पर
आजकेसातवेंदिन तूमेरेनगरमें आइयो मैंतुझेदूंगा इसी
तरहसे राजाकोबचन बन्दकर राक्षसअपने स्थानकोग-
याऔरभोरहुये राजाभीअपने महलमेंपहुंचा मंत्रीने सुन
केबहुतसीखुशीकी औरआके भेटदी और राजाने मंत्री से
वहवृत्तांत कहकरपूछा किसातवेंदिन राक्षसआवेगा कहो
उसकायत्न क्याकरें मंत्रीनेकहा महाराज आपकिसीबात
कीचिन्तानकीजिये भगवानसबभलाकरेगा इतनाकह मं-
त्रीसवामनकंचनका एकपुतला बनवा उसमेंजवाहिरज-
ड़वाएकछकड़ेपर रखवाचौराहेमें खड़ाकरवाकर उसकेर

खवालोंसेकहा कि जोकोई इसकेदेखनेकोआवे यहीउससे कहोकिजोब्राह्मण अपनेसातवर्षके लड़केकाराजाकोशिर काटकरदे सोइसेले यहकहकर चलाआया फिरलोगजो उसकेदेखनेको आतेथे उससेचौकीदार यही कहतेथेदोदि नतोयोंहींबीते परतीसरेदिन उसीनगरका एकदुर्बलसा ब्राह्मण कि जिसकेतीनबेटेथे वहयहबातसुन घरमें आब्रा ह्मणीसेकहनेलगा कि एकपुत्र अपना राजाकोबलिकेवा रतेदेतोसवामन सोनेकापुतला जड़ाऊघरमेंआवे यहसुन ब्राह्मणीबोली कि छोटेलड़केको मैंनदूंगी ब्राह्मणनेकहाब ड़ेकोमैंनदूंगा यहबातसुन मझिलेने कहाकि पिता मेरेत- ईंदीजिये उसनेकहाअच्छा फिर ब्राह्मणबोला कि संसार मेंधनहींमूलहै औरधनहीनको सुखकहांऔरजो दरिद्रीहु आउसकासंसारमें आनाव्यथा है इतनाकह मझिलेलड़क कोलेजा चौकीदारोंकोदे उसपुतलेको अपने घरलेआया औरइधरउसलड़केकोलोगमंत्रीके पासलेआये फिरजब सातदिनबीतगये वहराक्षस भीआया राजानेचन्दन अक्षतफूल धूपदीप नैवेद्यफलपान बस्त्रले उसकीपूजा कीऔरउसलड़केको बुला खड्ग हाथमेंले बलिदेनेको ख ड़ाहुआ इसमेंपहिलेतो हँसा पीछेरोया इतनेमेंराजानेख ड्गमाराकिशिरजुदाहोगया सच्चहैजोज्ञानी कहगयेहैंस्त्री किसंसारमें दुःखकीखानि हैऔरबिपत्तिकाघर साहसकी गिरानेवालीहै औरमोहकी करनेवाली धर्मकीहरनेवाली ऐसीबिषकीजड़है उसेउत्तमकिन्नेकहाहै औरऐसाकहा हैकिआपदाकेलिये धनरखिये औरधनदेके स्त्रीकीरक्षा

कीजिये औरधनस्त्रीकोदेके अपने जीकोबचाइये इतनी कथाकहबैतालबोला हेराजामरनेके समयआदमी रोता हैतूइसकी व्यवस्थाबता कि वहहँसाक्यों राजानेकहाय हबिचारके वहहँसाकि बालकपनमें मातारक्षाकरती है औरबड़ेहुयेसे पितापालता है औरसमय असमयमेंप्रजा कीराजासहाय करताहै संसारकीयहरीतिहै औरमेराय हहालहैकि मातापिताने धनकेलोभसे राजाकोदियाओ रयहखड्गलिये मारनेकोखड़ाहै औरदेवताको बलिकीइ-च्छाहै दयाकिसीकोभीनआई यहसुनबैतालउसीवृक्षपर जालटकाऔरराजाभीवहीं झटपटपहुंचा औरउसेबांधकां धेपररखलेचला १६॥

बीसवींकहानी॥

बैतालबोलाऐराजा बिशालपुर नामएकनगरहे वहां केराजाकानाम बिपुलेश्वरथा उसकेनगरमें एकबनिया थाजिसकानाम अर्थदत्तऔर उसकीबेटीकानाम अनंगमं जरीथा ब्याहउसका कमलपुरकेमुन्नीनाम बनियेसेकर दियाथा कितनेएकदिनोंकेपीछेवहबनिया समुद्रपारब-णिजकोगया औरयहांजब यहजवानहुई तबएकदिनअ-पनेचौवारेपर खड़ीहुई रास्तेकातमाशा देखतीथी किइस में एकब्राह्मणका पुत्रकमलाकरनाम चलाआताथा इन दोनोंकी चारनजरेंहुईं औरदेखतेही मोहितहोगये फिर घड़ीएकके पीछेसूरत सँभाल ब्राह्मणका बेटा बिरहसे ब्याकुलहो अपनेमित्रके घरगया औरयहांयहभी उसके बियोगकीपीरसेनिपटदुःखमेंथी कि इतनेमें सखीनेआनके

उठायापरइसे कुछअपनीसुधिनथी फिरउसने गुलाबछि
ड़काऔर सुगंधोंकोसुंघाया कि इतनेमें इसेहोशआया औ
रबोली कि ऐकामदेव महादेवनेतुझेजलाकर भस्मकिया
तिसपरभीतू अपनीखुटाईसे नहींचूकता औरबिनअपरा-
धअबलाओंको दुःखदेताहै येबातेंकररहीथी किसांझहुई
औरचांददृष्टिआया तबचांदनीकी ओर देखके बोलीकि
हेचन्द्रमा हमसुनतेथे कितुममें अमृतहै और किरणोंकी
राहसे अमृतबर्षातेहो सोआजमुझपर तुमभीबिषबर्षाने
लगेफिरसखीसे कहाकि यहांसेमुझे उठाकरलेचल कि
मैंचांदनीसे जलीमरतीहूं तबवह उसेउठाकर चौवारेपर
लेगईऔर कहातुझेऐसी बातेंकहते लाजनहींआती तब
उन्नेकहाऐसखी मैंसबजानतीहूं परमन्मथने मुझेमारके
निर्लज्जकिया औरमैंधीरज बहुतेराकरतीहूं परबिरहकी
आगसेज्यों २ जलतीहूंत्यों २ मुझेघरबिषसा दृष्टिआता
हैसखीबोली कि तूखातिरजमारख मैंतेरासबदुःखदूर क-
रूंगीइतनाकह सखीअपनेघरगई और इसने अपनेजीमें
बिचाराकिइसशरीरको उसकेकारणतजूं औरफिरकेजन्म
लेउससेमिल सुखभोगकरूं यहकामना करगलेमेंफांसी
डालचाहैकि खैंचेइतनेमें सखीआपहुंची औरइसनेझटइ-
सकेगलेसे रस्सीनिकालकर कहा जीनेसेसबकुछहै मरने
सेनहींवहबोली कि ऐसेदुखपानेसे मरनाभला है सखी
नेकहाएकघड़ीधीर्य्यधर मैंउसकोजाकरलेआतीहूं इतना
कहवहांगई जहांकमलाकरथा फिरउसेछिपकरदेखा तो
वहभीबिरहसेव्याकुलहोरहाहै और उसकामित्रगुलाबके

पानीसेचन्दनघिस २ उसकेबदनमेंलगाताहै और केले केकोमल २ पत्तोंसेपवनकररहाहै तिसपरभी बिरहकी आगसेवहघबराकर जलाहीजला पुकारताहै और मित्र सेकहताहै कि बिषलादे मैंआपनाप्राणत्यागकर इसकष्ट सेछूटूंइसकीयहदशादेख उसनेअपनेजीमेंकहाकैसाहीसाहसीपण्डितचतुरबिवेकीधीरमनुष्यहोपरकामदेवउसेएक क्षणमेंबिकलकरदेताहै इतनाअपनेमनमेंबिचारसखी ने उस्सेकहा ऐ कमलाकरतेरेतईं अनंगमंजरीनेकहाहै कि तू आकेमुझेजीदानदे इसनेकहायहतो उसनेमुझेजीदान दियाइतनाकहउठखड़ाहुआ औरसखीइसेअपनेसाथलिये हुयेउसकेपासगईयह वहांजाकेदेखै तो वहमरीहुईपड़ीहै फिरइसनेभीएकआहकानारामारा कि उसकेसाथइसका दमनिकलगया और जब सुबहहुई तोउसकेघरकेलोग इनदोनोंकोमरघटमेंलेगये और चिताचुनकरउन्हेंरखकर आगलगाईथी कि इसमेंउसकापतिभी परदेशसेमरघट की राहआनिकला तब लोगोंकेरोनेकाशब्दसुनकर यह वहांगयातोदेखताक्याहै कि इसकीस्त्रीपरपुरुषकेसाथजलतीहै यहभीबिरहसेव्याकुलहो उसीआगमेंजलकरमर गयायहखबरनगरकेलोगसुनआपसमेंकहनेलगे कि ऐसा अचरज न आंखोंदेखा न कानोंसुनाइतनीकथाकह बैताल बोला ऐराजाइनतीनोंमेंसेकौनसा अधिककामीहुआ राजा बोला कि उसकापतिअधिककामीहुआ बैतालनेकहाकिस कारणराजानेकहा जिसनेअपनीरानीको और केअर्थमरी देखक्रोधत्यागकर उसकेप्रेममेंमग्नहोजीदिया वह अधिक

कामीहुआ यहबातसुनबैतालफिर उसीवृक्षपरजालटका राजाभीवहींजाउसेबांधकांधेपररखलेचला २० ॥

इक्कीसवींकहानी॥

बैतालबोलाऐराजा जयस्तलनामनगरहै वहांकाबर्द्धमाननामराजाथा उसकेनगरमेंबिष्णुस्वामीनामब्राह्मण था उसकेचारबेटेथे एकज्वारी दूसराकसबीबाज तीसरा छिनला चौथानास्तिकएकदिनवह ब्राह्मणअपनेबेटोंकोसमझानेलगा कि जोकोईजुआखेलताहै उसकेघरमेंलक्ष्मी नहींरहती यहसुनवहज्वारीअपनेजीमें बहुतदिकहुआ और फिरउसनेकहा कि राजनीतिमें ऐसेलिखताहै कि ज्वारीकेनाककानकाटदेशसेनिकालदेना इसीलियेउत्तम है कि और लोगजुआ न खेलें और ज्वारीकेजोरूलड़कों कोघरमेंहोतेभीघरमें न जानिये क्योंकिनहींमालूम किस समयहारदे और जो बेश्याकेचरित्रोंपरमोहितहोतेहैं सो अपनेजीकोदुःखबिसाहतेहैं और कसबीकेबशमेंहोसर्बस्व अपनादे अन्तकोचोरीकरतेहैं औरऐसेकहाहै कि जोस्त्रीआदमीकेमनकोएकघड़ीमेंमोहले ऐसीस्त्रीसेज्ञानीदूररहतेहैं और अज्ञानीउस्सेप्रीतिकर अपनासतशीलयशआचारबिचारनेमधर्मसबखोतेहैं और उसकोअपनेगुरूकाउपदेशभलानहींलगता और ऐसेकहाहै किजिसनेअपनीलाजखोई दूसरेकोवहकबबेहुरमत करनेसेडरताहै और मसलहै जोबिलावअपनेबच्चेकोखाताहै सोचूहेकबछोड़ेगा फिरकहने लगाजिन्होंनेंबालकपनेमेंविद्यानपढ़ी और जवानीमेंकामसेआतुरहो यौबनकेगर्बमेंरहे सोवृद्धिकालमेंपछताकरहिर

सकीआगमेंजलताहै यहबातसुनउनचारोंने आपसमेंबि
चारकरकहाकि बिद्याहीनपुरुषके जीनेसेमरनाभलाहैइ
स्सेउत्तमयहहैकि बिदेशमेंजाकरबिद्यापढ़िये यहबातआ
पसमेंठानवेएक औरनगरमेंगयेऔरकितनेएक दिनोंमेंपढ़
केपण्डितहो अपनेघरकोचले राहमेंदेखतेक्याहैंकि एक
कंजरमरेहुयेशेर की हड्डीचमड़ा जुदाकर गठरीबांधचाहे
किलेजायइसमें इन्होंनेआपसमें कहाकिआओ अपनीबि
द्याअज़मावेंयह ठहरायएकने उसेबुलाकर कुछदियाऔर
वहमोटलेउसेबिदाकिया और रस्ते सेकिनारेहो उसमोट
कोखोलएकनेसारी हड्डियांकई जगहलगा मंत्रपढ़छींटा
माराकिवेहाड़ लगगयेदूसरेने इसीतरहसे उनहड्डियोंप
रमांसजमादिया तीसरेनेउसीभांतिसेमांसपर चामबिठा
दियाचौथेने इसीरीतिसेउसेजिलादिया फिरवहउठतेही
इनचारोंकोखागया इतनीकथाकह बैतालबोला ऐराजा
उनचारोंमेंकौन अधिकमूर्खथा राजाबिक्रमने कहाजिसने
उसेजिलादिया सोईबड़ामूर्खथा औरऐसाकहाहै किबुद्धि
बिनाबिद्याकिसी कामकीनहीं बल्किबिद्यासेबुद्धि उत्तम
हैऔरबुद्धिहीन इसीतरहसे मरतेहैंजैसेसिंहकेजिलानेवा
लेमरे यहसुन बैतालउसीवृक्षपरजालटका फिरराजाउ
सीतरहबांध कांधेपररख लेचला २१॥

बाईसवीं कहानी॥

बैतालबोला ऐराजाबिश्वपुरनाम एकनगरहै वहांका
बिद्ग्धनाम राजाथाउसके नगरमेंनारायणनाम ब्राह्मण
थावहएकदिन अपनेमनमेंचिन्ताकरनेलगा कि मेराशरीर

वृद्धहुआऔरमैं दूसरेकीकायामें पैठनेकीबिद्या जानताहूं इससेउचितयहहै कि इसपुरानी देहकोछोड़और किसी युवाकेशरीरमें जाकेभोगकरूंजबवहयह अपनेजीमेंबिचारकरचुकाऔर एकतरुणशरीरमेंपैठनेलगा तो पहलेरोया औरपीछेहँसा फिरउसमें पैठकरअपने घरमेंआयापरन्तु इसकेसारेकुटुम्बके लोगउसके कर्तबकोजानतेथे फिरउनकेआगेकहनेलगा कि अबमैंयोगीहुआ इतनाकहकेपढ़नेलगाकिआशाके सरोवरकोतपस्या कतेजसेसुखा तिसमें मनकोरखके शिथिलकरे सोयोगीचतुरकहावैऔरयहग तिसंसारकेलोगोंकीहैकि अंगगले मुण्डहिले दांतगिरेबूढ़ेहोलाठीलेफिरें तौभीतृष्णानहीं मरतीऔर इसीतरहसे कालचलाजाताहै दिनहुआरातहुई महीनाहुआ वर्षहुआ बूढ़ाहुआऔर कुछनहींमालूम किकौनहूं और लोगकौन हैंऔरकौनकिसलियेकिसीका शोककरताहै एकआताहै एकजाताहै औरअन्तकाल सबजीव जानेवालेहैंइनमेंसे एकनरहेगा अनेकअनेकमनहेंऔरअनेक२ मोहहैंभांति२ केपाषण्डब्रह्मानेरचेहैं परबुद्धिमान इनसेबचे आशाऔर तृष्णाकोमार शिरमुड़ाहाथमें दण्डकमण्डलले कामक्रोध कोमारयोगीहो नंगेपावँतीर्थ २ डोलतेफिरतेहैं सोमोक्षपदार्थपातेहैं औरयहसंसार स्वप्नेकीतरहहै इसमेंकिसकी खुशीकीजिये औरकिसकागम औरकेलेकेगाभे की तरह संसारहैइसमेंसार कुछनहींऔरधन यौबनबिद्या का जो गर्वकरतेहैं सो अज्ञानहैंऔरजो योगीहोकमंडलहाथमेंले बारबार भीषमांग दूधघीचीनीसे अपनेशरीरको पुष्टकर

कामातुरहोस्त्रीसे भोगकरतेहैंसोअपनायोग खोतेहैंइतना पढ़करवहबोलाकि अबमैंतीर्थयात्राकरूंगा यहबातसुन उसकेकुटुम्बकेलोग बहुतप्रसन्नहुये इतनीकहानी कह बैतालबोलाऐराजा किसकारणवहरोयाऔरकिसकारण हँसा तब राजानेकहा कि बालकपनकामकाप्यार और जवानीकासुख यादकर और इतनेदिनों उसदेहकेरहने के मोहसेरोया और अपनीबिद्या सिद्धकरके नईकायामें पैठनेकी खुसीसेहँसायहबातसुनबैतालउसीपेड़परजाल टकाफिरराजाउसीतरहसेबांधकांधेपररखलेचला २२॥

तेईसवींकहानी॥

बैतालबोलाऐराजा धर्मपुरनामनगरवहांकाधर्मध्वजनामराजा उसकेशहरमेंगोबिन्दनाम ब्राह्मणचारोवेद छवोंशास्त्रकाजाननेवालाथाऔरअपनेधर्मकर्ममेंसावधान औरहरिदत्तसोमदत्तयज्ञदत ब्रह्मदत्त उसकेचारबेटेथेबड़े पण्डितबड़ेचतुर औरबापकीआज्ञामेंसदारहतेथे कितने एकदिनपीछेबड़ाबेटा उसकामरगया औरवहभीउसके दुःखसेमरनेलगा तिससमयवहांकेराजाका पुरोहितबिष्णुशर्माआनकर उसे समझानेलगा कि यहमनुष्यजिस समयमाताकेगर्भमेंआताहै पहिलेवहींदुःखपाताहै दूसरे बालापनमेंअनेकअनेकरोगोंसे सतायाजाताहै अपनादुख दर्द्दनहींकहसक्ता तीसरेजवानीमें कामकेबशहोप्रियतम केबियोगसेदुखसहताहै चौथेबूढ़ाहोअपनेशरीरकेनिर्बल होनेसेदुःखमेंपड़ताहै गरजसंसारमेंजन्मलेनेसे बड़ेदुःख होतेहैंऔरसुखथोड़ाक्योंकि यहसंसारदुखकामूलहैअग-

रकोईवृक्षकीफुनगीपरजाचढ़े यापहाड़कीचोटीपर जाबैठै यापानीमेंछिपरहै या लोहेकेपिंजरेमेंघुसरहै या पाताल मेंजाछिपैतौभीकालनहींछोड़ता और पण्डितमूर्खधनवान निर्धनज्ञानीअज्ञानी बलवाननिर्बल कैसाहीकोईहोवे पर यह सर्वभक्षीकालकिसीको नहींछोड़तातब सौबर्षकी मनुष्यकी आयुर्बलहै तिसमेंसे आधीतो रातमेंजातीहै और आधीकीआधीबाल और वृद्धावस्थामें शेषजोरहीसो बिवादबियोग शोकमेंबीततीहै और जीवजोहैपानीकीतरंग कीतरहचंचलहै इस्से इसमनुष्यकोसुखकहां और अबकलियुगकेसमयसत्यवादी मनुष्यमिलनादुर्लभहैं औरदिन बदिनदेशउजड़तेहैं राजालोभीहोतेहैं पृथ्वीमंदफलदेती हैचोरदुराचारी पृथ्वीमेंउपाधिकरतेहैं औरधर्ममें तपसत संसारमेंथोड़ारहाहै राजाकुटिलब्राह्मणलालचीलोग स्त्रीकेबशहुयेस्त्रीचंचलहुई पिताकीनिन्दा पुत्रकरनेलगे और मित्रशत्रुताऔर देखाजिनकामामाकन्हैयाऔरपिताअर्जुन अभिमन्युतिसकोभीकालनेनछोड़ाऔरजिससमयमनुष्य को यमलेजाताहै लक्ष्मीउसकेघरमें रहतीहैं और मावाप जोरूलड़काभाईबंधुकोईकामनहींआता भलाईबुराईपाप पुण्यहीसाथजाताहै और वेईकुनबेकेलोग उसेमरघटमें लजलादेतेहैं औरदेखोइधररातव्यतीतहोतीहै उधरदिन आताहैइधरचांद अस्तहोताहै उधरसूर्यउदय ऐसेहीजवानीजातीहै बुढ़ापाआताहै इसीतरहसे कालबीताचलाजाताहैपरयहदेखकरभी इसमनुष्यको ज्ञाननहींहोता और देखो सतयुगमें मान्धाता ऐसाराजा जिसने धर्मके यश

से सारीपृथ्वीको छादियाथा और त्रेतामें श्रीरामचन्द्र राजा कि जिन्होंने समुद्रकापुलबांधि लंका सा गढ़तोड़ रावणकोमारा और द्वापरमें युधिष्ठिरने ऐसाराजकिया कि जिसकायश अबतक लोगगातेहैं पर कालने उन्हैंभी न छोड़ा और आकाशके उड़नेवाले पक्षी और समुद्र के रहनेवालेजीव समयपाय वेभी आपत्तिमें आपड़तेहैं इस संसारमें आके दुःखसेकोईनहींछूटा इसका मोह करना वृथाहै इस्से उत्तमयहहै कि धर्मकार्यकीजिये इसतरह से जब बिष्णुशर्मानेसमझाया तब उसब्राह्मणकेजीमेंआ याकिपुण्यकार्य्यकीजिये यहमनमेंशोचअपनेबेटोंसेकहा कि मैयज्ञकरनेबैठताहूंतुमसमुद्रसेजाकरकछुआलेआओ अपनेबापकीआज्ञापायएकधीवरसेजाकरउन्होंनेकहा कि एकरुपैयाले और कच्छपपकड़देउसनेलिया और पकड़ दिया तब उनमेसे बड़ेभाईनेमझलेसेकहातूउठालेउसने छोटेसेकहाभाईतुमउठालो उसनेकहामैं इसेनछुऊंगामेरे हाथमेंदुर्गन्धआवगीऔरमैंभोजनकरनेमेंचतुरहूंमँझलाबो लामैंस्त्रीरखनेमेंचतुरहूंब ड़ेनेकहामैंसेजपरसोनेमेंचतुरहूंइ सतरहतीनोंबिबादकरनेलगेऔर कछुयेकोवहींछोड़झगड़ तेहुयेराजाकेद्वारपरजाद्वारपालसेकहा कि तीनब्राह्मणना लिशीआयेहैंयहजाकेतूराजासेकह यहसुनकेदरवाननेरा- जाकोखबरदीराजानेबुलवाकरपूछाकि तुमकिसवास्तेआ पसमेंझगड़तेहो तबउनमेंसेछोटाबोला किमहाराजमैंभो- जनमेंचतुरहूंमँझलेनेकहा कि पृथ्वीनाथमैंनारीचतुरहूंबड़े नेकहामैंशय्याचतुरहूं यहसुनराजानेकहा कि तुमअपन

अपनीपरीक्षादोउन्होंनेकहाबहुतअच्छा राजानेअपनेर-
सोइयेकोबुलाकरकहा कि भांतिभांतिकेव्यंजन और प-
कवानबना इसब्राह्मणकोअच्छीतरहभोजनकरवावो यह
सुनरसोइयेनेजारसोई तैयारकरउसभोजनचतुरकोलेजा
थालपरसबिठलायाचाहै कि वहग्रासउठामुंहमंदे कि इ-
समेंदुर्गन्धआई उसेछोड़हाथधोराजाकेपासआया राजाने
पूछा कि तूनेसुखसेभोजनकिया तबउसनेकहा कि महा-
राजअन्नमेंदुर्गन्धआईमैंनेभोजननकिया फिरराजानेकहा
दुर्गन्धकाकरणकह उसनेकहामहाराज मरघटकीभूमिके
चांवलथेमुरदेकीबू उसमेंसेआईथीइसकारणनखाया यह
सुनकेराजानेअपनेभंडारीकोबुलाकरपूछाअरेये किसगांव
केचांवलथेउसनेकहामहाराजशिवपुरकेराजाने कहावहां
केकिसानकोबुलाओ तब भंडारीनेउसगांवकेज़मीदारको
हुजूरमेंबुलायाराजानेपूछा ये किसभूमिकेचावलहैंउसने
कहामहाराजस्मशानकेहैं यहसुनकेराजानेउसब्राह्मणके
लड़केसेकहा कि तूसच्चभोजनचतुरहै फिरनारीचतुरको
बुलवाएकमकानमें पलंगबिछवा सबखुशीकेसामानरख
एकअच्छीस्त्रीकोबुलवाउसकेपासकरदिया और वेदोनों
लेटेहुयेआपसमेंबातेंकरनेलगेराजाछिपकेझरोखेसेदेखने
लगा और उसब्राह्मणनेचाहा कि उसकावोसःलेइसमें
उसकेमुंहकीबासपामुंहफेर सोरहा राजाने यहचरित्रदेख
अपनेमन्दिरमेंजाकरआरामकियाभोरकेसमय उठसभामें
आउसब्राह्मणकोबुलाकरपूछा कि हेब्राह्मणआजकीरात
तूनेसुखसेकाटीउसनेकहामहाराजसुखनपाया फिरराजा

नेकहाकिसकारणब्राह्मणनेकहाउसके मुखसेबकरीकीगन्धआतीथीइससे मेराजीवबहुत बेचैनरहा यहसुनराजाने कुटनीकोबुलाकरपूछा कि इसेतू कहांसेलाईथी औरयह कौनहैउसनेकहा मेरीबहिनकीबेटीहै जबतीनमहीनेकी थीतबइसकी मामरगईऔरमैंनेइसेबकरीका दूधपिलापिलाकरपालाहै यहसुनराजाने कहासच्च तूनारीचतुरहैंकिरसेजचतुरको अच्छे २ बिछौनेकरवापलंगपर सुलवाया प्रभातहुयेराजाने उसेबुलाकर पूछाकिरातभर सुखसेसोयाउन्नकहा महाराजरातभर नींदनआई यहसुनराजाने कहाकिसकारण उसनेकहा महाराजइसकी सातवींतहमेंएकबालहै वहमेरीपीठमें चुभताथाइस्से नींदनआईयह सुनराजानेउस सातवींतहमें देखातोएकबालनिकला तब उससेकहाकितू सच्चसेजचतुरहै इतनीबातकहबैतालने पूछाऐराजा उनतीनोंमेंकौनअति चतुरहै राजानेकहाजो सेजचतुरहै यहसुनबैतालफिरउसीवृक्षपर जालटकाराजा भीवहींजाउसेबांधकांधेपररखलेचला २३ ॥

चौबीसवीं कहानी॥

बैतालनेकहाऐराजा कलिंगदेशमें एकयज्ञशर्मानाम ब्राह्मणतिसकीस्त्रीकानाम सोमदत्ताअतिरूपवतीथी वह ब्राह्मणयज्ञकरनेलगा इसमेंउसस्त्रीके एकसुन्दरलड़का हुआ जबवहपांचवर्षकाहुआ तबबापउसका शास्त्रपढ़ाने लगा बारहबर्षकीउमरमें वहसबशास्त्रपढ़के बड़ापण्डित हुआ औरसदाअपनेबापकी सेवामेंरहनेलगा कुछदिनके बीते वहलड़कामरगया उसकेशोकमेंउसके मातापिता

चिल्लाचिल्लारोनेलगे यहखबरपा सारेकुनबेकेलोगधाये और उसलड़केको अरथीमेंबांधकर स्मशानमेंलेगये और वहांजाउसेदेख आपसमेंकहनेलगे देखोमुयेपरभी सुन्दर लगताहै इसीतरहसेबातेंकरतेथे औरचिताचुनतेथे कि वहांएकयोगीभी बैठातपस्याकररहाथा यहबातसुनवह अपनेजीमेंबिचारनेलगा कि मेराशरीर अतिवृद्धहुआ जो इसलड़केके शरीरमेंपैठूं तोसुखभोगयोगकरूं यहशोचकर वहउसलड़केके शरीरमेंपैठगया करवटलेरामकृष्णकहि ऐसाउठबैठा जैसेकोईसोतेसेउठबैठै यहदेखतमामलोग अचंभेमेंहो अपनेअपनेघरआये औरउसकेबापकोयहअच रजदेखकर वैराग्यहुआ पहिलेहँसापीछेरोया इतनीकथा कहिबैतालबोला ऐराजाबिक्रम कहोवहक्योंहँसा और क्योंरोया तबराजानेकहाकि योगीकोइसकेशरीरमें जाते देख औरयहविद्यासीखकरहँसा औरअपनेशरीरके छोड़ने केमोहसेरोया कि एकदिनइसीतरहसे मुझेभीअपनाशरीर छोड़नापड़ैगा यहसुनबैतालफिर उसीवृक्षपर जालटका औरराजाभीपीछेजा उसेबांधकांधेपररखलेचला २४ ॥

पच्चीसवीं कहानी ॥

बैतालबोला ऐराजादक्षिणदिशामें धर्मपुरनगरहैवहां केराजाकानाममहाबलहै एकसमयउसीदेशका एक और राजाफौजलेचढ़आया औरउसकानगरआन घेरा कितने एकदिनोंलड़तारहा जबसेनाइसकीमिलगई औरकुछकट गई तबलाचारहोरातमें रानीकोबेटीसमेत साथलेबनमें निकलगया जबकईएककोश बनमेंपहुंचा तोप्रभातहुआ

औरएकगांवनजरआया तबरानीऔरराजा कन्याकोएक पेड़तलेबिठला आपगांवकीतरफ खानेकाकुछसामानलेने चलाथा कि इतनेमेंभीलोंने आनघेरा औरकहाहथियार डालदे यहसुनकेराजाने तीरमारनाशुरूअकिया और उधरसेइन्होंने इसतरहएकपहर लड़ाईकीऔरकितनेएक लोगभीलोंकेमारेगये इतनेमेंएकतीर राजाकेमाथेमें ऐसा लगाकिभैराके गिरपड़ा औरएकनेआ राजाकाशिरकाट लिया जबरानीऔर राजकन्याने अपनेराजाकोमुआदेखा तोरोतीपीटती उलटीबनकोचलीं इसीतरहसे कोशदोएक चलमादीहोकेबैठीं औरअनेकअनेक भांतिकीचिन्ताकरने लगीं इतनेमेंचन्द्रसेनराजा औरउसकाबेटादोनों शिकार खेलतेहुयेउसीअरो आनिकले औरदोनोंकेपांवके चिन्हदे खराजाने अपनेपुत्रसेकहा कि इसमहाबनमें आदमीकेपा वँकेनिशान कहांसेआये राजपुत्रनेकहा महाराजयेचरण चिन्हस्त्रियोंकेहैंपुरुषकापावँऐसाछोटानहींहोता राजानेक हासच्चऐसाकोमलचरणपु रुषकानहींहोताफिरराजकुमार नेकहाइसीसिमयगईहैं राजानेकहाचलोइसबनमेंढूंढ़ेंजोमि लैंतोजिसका यहबड़ापावँहै सोतुझेदूंगा औरदूसरी मैंलूं गा इसतरहआपसमेंबचन बद्धहो आगेजादेखें तोदोनों बैठीहुईहैं उन्हैदेखखुशहो अपने २ घोड़ेंपरबिठा घरले आये रानीकोराजकुंवरने रक्खा औरराजकन्याको रा-जानेइतनीकथा कहिकरबैताल बोलाऐराजा बिक्रमउन दोनोंकेलड़कोंका आपसमें क्या नाताहोगा यहसुनरा जा अज्ञानहोचुपरहा फिर बैताल खुशहो बोला किऐ

राजामैंतेरा धीरज और साहसदेखअति प्रसन्नहुआ पर एकबातमैंकहताहूं सोतूसुनकि जिसकेशरीरकेरोम समान काटोंकेऔरदेह काठसीऔर नामशान्तिशील सोतेरेनग रमेंआयाहै औरतुझेउसने मेरेलेनेकोभेजाहै आपबैठामर घटमेंमंत्रजगारहाहै और तुझे माराचाहताहै इसलियेमैं जतादेताहूं कि जबपूजाकरचुकेगा तबतुझसे कहेगा कि ऐराजातूआकर योगकर तबतूकहियो मैंसब राजाओंका राजाहूं औरसबराजामुझे आनकेदण्डवतकरतेहैं मैंनेआ जतकिसीको दण्डवतनहींकी औरमैंनहीं जानताआप गूरूहैं कृपाकरके सिखादीजिये तोमैंकरूं जबवहदण्डव तूकरैतब ऐसाखड्गमारियोकिशिरजुदा होजायतबतूअ-खंडराज्य करेगा और जोतूयह न करेगातो वहतुझेमार अचलराज्यकरेगा इतनीबात राजाकोचिता बैतालउस मुर्देकेदेहसे निकलकर चलागया औरकुछरातरहते वह मुर्दालाराजाने योगीकेआगेरखदिया योगीनेउसकोदेख करखुशहोराजाकी बहुतसीबड़ाईकी फिरमंत्र पढ़उसमु रदेकोजगाया होमकरबलिदिया औरदक्षिणाकी तरफबै ठजितनाकुछ सरंजामतैयारकियाथा सोअपने देवताको चढ़ादियाऔर पानफूलधूपदीप नैवेद्यदेपूजाकर राजासे कहाकितूदण्डवतकर तेराबड़ातेज प्रतापहोगा औरअ-ष्टसिद्धिनवनिद्धि सदातेरेघरमेंरहैगी यहसुनराजानेबैता लकी बातयादकर हाथजोड़निपटआधीनतासे कहा कि महाराजमैं प्रणामकरनेनहींजानता पर आपगुरूहैं जो कृपाकरके सिखाइयेतोमैं करूं यहसुनयोगीनेज्योंहींदंड

वतकरनेको शिरझुकाया त्योंहींराजाने एकखड्गमारा
शिर जुदाहोगया और बैतालने आनफूलोंकामेहवर्षा
ऐसाकहाहैकिजो अपनेतईंमाराचाहे उसकेमारनेसेअ
नहीं उससमय राजाकासाहसदेखइंद्रसमेत सबदेव
अपनेअपने बिमानोंपरबैठवहांजय२ कारकरनेलगे औ
राजाइंद्रनेप्रसन्नहो राजाबीरबिक्रमादित्यसेकहाकि
मांग तबराजानेहाथजोड़करकहा महाराजयहकथा मे
संसारमेंप्रसिद्धहो इन्द्रनेकहा जबतक चांद सूर्य्य पृथ्
आकाशस्थिरहैं तबतकयहकथाप्रसिद्धरहेगी औरतूस
भूमिकाराजाहोगा इतनाकहराजाइन्द्र अपनेस्थानको
या औरराजानेउनदोनोंलोथोंको ले उसतेलकेकड़ावमें
डालदिया तबवेदोनोंवीर आहाजिरहुये और कहनेलगे
किहमें क्याआज्ञाहै राजाने कहाजबमैं यादकरूंतबतुम
आना इसतरहसे उनसेबचनले राजाअपनेघरआ राज्य
करनेलगा ऐसाकहाहैंकि पण्डितहो यामूर्ख यालड़काहो
याजवान जो बुद्धिमानहोगा उसकीजयहोगी २५ ॥

इतिबैतालपच्चीसी सम्पूर्णम् ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	लावनी	गोकर्णमाहात्म्य
योगवाशिष्ट	**किस्सावग़ैरह**	श्रीगोपालसहस्रनाम
आनन्दाऽमृतवर्षिणी	नानार्थनोसंग्रहावली	कथासत्यनारायण
सांख्यतत्वकौमुदी	ब्रह्मसार	हनुमान बाहुक
काव्य	शिवसिंहसरोज	जनकपच्चीसी
सूरसागर	भक्तमाल	हरिहरसगुणनि० प०
कृष्णसागर	इन्द्रसभा	बनयाचा
विश्रामसागर	बिक्रमबिलास	कायस्थबर्णनिर्णय
प्रेमसागर	बैतालपच्चीसी	बिहारवृन्दाबन
ब्रजबिलासबड़ा वाछोटा	पद्मावतीखण्ड	समरबिहारवृन्दा बन
कृष्णप्रिया	शुकबहत्तरी	कल्पभाष्य
बिजयमुक्तावली	बकावली सुमन	**दरसी**
अनेकार्थछन्दोर्णवपिङ्गल	चहारदरवेश	अक्षरावली
कविकुलकल्पतरु	किस्साहातिमताई	स्वयम्बोध
रसराज	अपूर्व्वकथा	ज्ञानचालीसी
सत्सई मूल तथा सटीक	किस्सागुलसनोवर	दोहावली
सभाबिलास	सहस्ररजनीचरित्र	बालाबोध
तुलसीशब्दार्थ	सिंहासनबत्तीसी	बिद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
भजनावली	राबिन्सन्काइतिहास	किताबजंची
प्रेमरत्न	सीताहरण	गणितकामधेनु
युगुलबिलास	सतीबिलास	लीलावती
चित्रचन्द्रिका	**मुतफ़र्कात**	पटवारियोंकीपुस्तकें४भाग
बारहमासाबल्देवप्रसाद	शनिश्चर की कथा	**ज्योतिषभाषा**
मनोहरलहरी	ज्ञानमाला	जातकचन्द्रिका
गंगालहरी	गोपीचन्दभरतरी	जातकालंकार
यमुनालहरी	कथाश्रीगंगाजीकी	दैवज्ञाभरण
जगद्विनोद	अवधयाचा	ज्ञानस्वरोद
शृङ्गारबत्तीसी	भरतरीगीत	रमलसार य
पद्मावत	दानलीला नागलीला	इन्द्रजाल
राग	रासलीला द्वा० प्र० कृत	**संस्कृतकीपुस्तकें**
रागप्रकाश	दोहावली रत्नावली	लघुकौमुदी

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
सिद्धान्तचंद्रिका	**सहित**	प्रतापविनोद
अमरकोषतीनोंकांडस०	मनुस्मृति	प्रनमोजचरित्र
पञ्चमहायज्ञ	विष्णु हारीत	भविष्योत्तरपुराण
निर्णयसिंधु	महिम्नस्तोत्र	स्कन्दपु०कासेतुबन्धखण्ड
संग्रहशिरोमणि	व्रतार्क	मनोहरकहानी
भगवद्गीतासटीक	याज्ञबल्क्यस्मृति	भ्रमजालकनाटक
दुर्गापाठमूल	**संस्कृतभाषाटीका सहित**	सीतावनबास
दुर्गापाठसटीक	अमरकोष	किस्सामर्द औरत
विष्णु भागवत	याज्ञबल्क्यस्मृति	नवीनसंग्रह
अपराधभंजनस्तोत्र	संध्यापद्धति	सुदामाचरित्र
दुर्गास्तोत्रसटीक	व्रतार्क	ज्ञानतरंग
कायस्थकुलभास्कर	भगवद्गीताटीकाह०बं०	सप्तशतिका
कायस्थधर्मनिरूपण	भगवद्गीताटीकाआ०गि०	बिजयचंद्रिका
तथाछोटा	गीतगोविन्द	रामायणबाल्मीकी
मथुरासभा	कथासत्यनारायण	भुवनेशभूषण
तुलसीतत्वभास्कर	परमार्थसार	महाभारतभाषासबलसिं-हचौहानकृत
रामबिवाहोत्सव	शार्ङ्गधरसंहिता	सुन्दरबिलास
ज्योतिष	पाराशरीसटीक	गीतरसिका
मुहूर्त्तगणपति	शीघ्रबोधसटीक	कबित्तावलीरामायण स०
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	लघुजातक	इलालुलगुरबा भाषा
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक	षट्पञ्चाशिका	रसायनप्रकाश
मुहूर्त्तमार्त्तण्डसटीक	सामुद्रिक	रामचंद्रिका सटीक
मुहूर्त्तदीपक	**नवीनकिताबें**	वाराह पुराण
वृहज्जातकसटीक	कालिंजरमाहात्म्य	सौदागरलीला
जातकालंकार	सुधामन्दाकिनी	रीडर नम्बर १
जातकाभरण	रामबिनयशतक	रीडर नम्बर २
होरामकरंद	नारीबोध	सीक्वेल
संस्कृतउर्दूटीका		

